यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी ग्रौर हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी ।

३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. कळायरण, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम संस्कर्ता ।

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३. वरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें. कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४. 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन संभव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अंक ३–४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अंक १–२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेपांक है । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचंद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि की प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैंकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां, और लगभग ७०० लोक कथाएं संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।
१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।
१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।
१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।
१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।
१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूंडलोद थे ।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है । आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे । यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढ़ा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त करना संस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नहीं हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५०००) रु० इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोतमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पंवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोतमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचंद नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचंद नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबंध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचंद कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थानी व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. मह्ली—.	श्री अगरचंद नाहटा और म: विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचंद नाहटा
२७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथों का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईसरदास ग्रंथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचंद नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन संभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया, जो सौभाग्य से शिक्षा मंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते है।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथों का संपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक

लालचन्द कोठारी

प्रधान-मन्त्री

सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

बीकानेर,

मार्गशीर्ष शुक्ला १५

संवत् २०१७

दिसम्बर ३, १९६०

रानी पद्मिनी — एक विवेचन

भारतीय इतिहास के अनेक व्यक्ति भावना विशेष के प्रतीक बन चुके हैं। भगवान् राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं तो कृष्ण तत्त्ववेत्ता और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ। पृथ्वीराज विलासप्रिय क्षत्रिय है तो जयचन्द्र मत्सरयुक्त देशद्रोही। एक ओर महाराणा प्रताप हैं तो दूसरी ओर राजा मानसिंह। इनमें भामाशाह है तो माधव और राघव चैतन्य भी। जहाँ दानवावतार अलाउद्दीन है, वहाँ पातिव्रत्य की रक्षा में सहायक और जीवदानी गोरा भी। संयोगिता सामान्य जन मानस में महाभारत रचयित्री द्रौपदी का अवतार है। पद्मिनी अनुपम सौन्दर्य का ही नहीं, बुद्धियुक्त धैर्य, असीम साहस और पातिव्रत्य का भी प्रतीक बन चुकी है, और उसकी गाथा को अनेक रूप में कवियों ने प्रस्तुत किया है। किन्तु किसी आदर्श-विशेष का प्रतीक बनना या अनेकशः वर्णित होना ही, किसी व्यक्ति की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। सम्भावना अवश्य हो सकती है कि ऐसे व्यक्ति रहे होंगे; किन्तु यह सम्भावना यदि इतिहास से ज्ञात तथ्यों के विरुद्ध हो तो उसे छोड़ने में भी कोई दोष नहीं है। पद्मिनी की ऐतिहासिकता

भी इसी कसौटी पर परख कर सिद्ध या असिद्ध की जा सकती है।

पद्मिनी का सबसे प्रसिद्ध वर्णन सन् १५४० ई० में रचित जायसी के 'पद्मावत' काव्य में है। उसके अनुसार पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन की पुत्री थी और रतनसेन चित्तौड़ का राजा था। हीरामन तोते के मुख से पद्मिनी के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रतनसेन योगी बनकर सिंहल पहुँचा और अन्ततः पद्मिनी से विवाह करने में सफल हुआ। चित्तौड़ की राज्य सभा में राघवचेतन नाम का एक तांत्रिक ब्राह्मण था। राज्य से निर्वासित होने पर वह दिल्ली पहुँचा। उसने अलाउद्दीन के सामने पद्मिनी के सौन्दर्य की इतनी प्रशंसा की कि सुल्तान ने पद्मिनी की प्राप्ति के लिए चित्तौड़ पर घेरा डाल दिया। जब बल से काम न चला तो अलाउद्दीन ने छल से काम लिया। वह अतिथि रूप में चित्तौड़ पहुँचा और दर्पण में पद्मिनी का प्रतिबिंब देखकर मुग्ध हो गया। जब राजा उसे पहुँचाने के लिए सातवें द्वार तक पहुँचा तो अलाउद्दीन ने उसे सहसा पकड़ लिया और कैदी बनाकर दिल्ली ले गया। कैद से छुटने की केवल मात्र शर्त यही थी वह पद्मिनी को दे दे। उधर गोरा और बादल की सलाह से पद्मिनी ने भी छल से राजा को छुड़ाने का निश्चय किया। वह सोलह सौ डोलियों में स्त्री वेषधारी राजकुमारों को बिठला कर दिल्ली पहुँची। थोड़ी सी देर के लिए राजा से मिलने का बहाना कर पद्मिनी

ने राजा को कैद से छुड़ाया और स्वयं बलपूर्वक नगर से बाहर निकल गई। बादल उनके साथ चित्तौड़ पहुँचा। गोरा ने पीछा करने वाली मुसलमानी सेना से लड़कर वीरगति प्राप्त की। कुछ समय के बाद राजा ने कुम्भलमेर पर आक्रमण किया और घायल होकर स्वर्गस्थ हुआ। पद्मिनी और उसकी सपत्नी नागमती सती हुई। इतने में ही अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर फिर आक्रमण किया। इस बार अलाउद्दीन की विजय हुई। बादल युद्ध में काम आया और चित्तौड़ पर मुसल्मानों का अधिकार हुआ।

इस रूप में कथा ऐतिहासिक सी प्रतीत होती है। किन्तु जायसी ने सब कथा को रूपक बतला कर उसकी ऐतिहासिकता को अत्यन्त संशयास्पद बना दिया है। उसने लिखा है, "इस कथा में चित्तौड़ शरीर का, राजा मन का, सिंहलद्वीप हृदय का, पद्मिनी बुद्धि का, तोता मार्गदर्शक गुरु का, नागमती संसार के कामों की, राघव शैतान का और अलाउद्दीन माया का सूचक है[1]।"

फरिश्ता ने अपनी तवारीख पद्मावत से लगभग सत्तर वर्ष के बाद लिखी। उसकी कथा जायसी की कथा से मिलती

१—देखें डा० ओझा रचित, उदयपुर का इतिहास पहली जिल्द पृ० १८३-१८७

जुलती है। किन्तु उसने पद्मावती को राजा रतनसेन की पुत्री बना दी है[1]।

श्री अगरचन्दजी नाहटा के संग्रह में गोरा बादल कवित्त नाम की एक लघुकाय रचना है। भाषा और शैली की दृष्टि से यह रचना पद्मावत से कुछ विशेष अर्वाचीन प्रतीत नहीं होती। गोरा बादल विषयक अन्य रचनाओं में इसके अवतरण भी इसकी प्राचीनता के द्योतक हैं। इसमें भी रतनसेन गहलोत चित्तौड़ का राजा है। रानी नागमती के ताने से रुष्ट होकर वह सिंहल पहुँचा और पद्मिनी से विवाह कर चित्तौड़ वापस आया। खेल में अप्रसन्न होकर उसने राघव चैतन्य नाम के ब्राह्मण को देश से निकाल दिया। राघव चैतन्य ने दिल्ली पहुँच कर सब लोगों को अपनी अद्भुत तांत्रिक शक्ति से विस्मित कर दिया। उससे अलाउद्दीन ने पद्मिनी स्त्रियों के गुण सुने। सिंहल में पद्मिनीयाँ प्राप्त थी। किन्तु सिंहल और भारत के बीच में समुद्र होने के कारण वह सिंहल न पहुँच सका। जब उसने सुना कि रतनसेन के घर में भी पद्मिनी रानी थी तो वह चित्तौड़ पहुंचा। राजाने उसका आतिथ्य किया। बातें करते करते राजा ने दुर्गका अन्तिम फाटक पार किया तो सुल्तान ने राजा को पकड़ लिया। जब मंत्रियों ने रानी को दे कर राजा को छुड़ाने का निश्चय किया तो रानी

१—विशेष विवरण के लिए उपर्युक्त इतिहास देखें, पृ० १८८-१८९

गोरा के यहाँ पहुंची। उसने बादल को भी तैयार किया। पाँच सौ डोलियाँ तैयार हुई और एक एक डोली में पाँच-पांच आदमी बैठे। बादल ने स्वयं पद्मिनी का रूप धारण किया और राजा को बचा ले गया। गोरा युद्ध में काम आया[१]।

संवत् १६४५ में जैन कवि हेमरतन ने महाराणा प्रताप के राज्यकाल में इस वीर गाथा की अपने शब्दों में पुनरावृत्ति की। 'स्वामिधर्म' का प्रचार सम्भवतः इस नव्य रचना का मुख्य लक्ष्य था इसी कथा का परिवर्धन संवत् १७६० में भाग-विजय नाम के अन्य जैन कवि ने किया[२]।

जटमल नाहर रचित 'गोरा बादल चौपई' भी इस ग्रंथ में प्रकाशित हो रही है। इसका रचनाकाल वि० सं० १६८० है[३]। कथा में कुछ द्रष्टव्य बातें ये हैं :—

(क) चित्तोड़ का राजा रतनसेन चौहान है।

(ख) एक भाट से पद्मिनी के विषय में सुनकर वह सिंहल जाने का निश्चय करता है।

(ग) सिंहलराज ने बिना किसी आपत्ति के रतनसेन और पद्मावती का विवाह कर दिया और राघवचेतन को उसके साथ चित्तोड़ भेजा।

१—देखें इस संग्रह के पृ०१०९-१२८

२—देखें शोधपत्रिका भाग २, अङ्क २ पृष्ठ १०५-११४ पर श्री अगरचन्द नाहटा का लेख।

३—पृ० १८२-२०८

(घ) राघव को व्यर्थ ही चरित्रभ्रष्ट समझ कर रतनसेन ने देश से निकाल दिया।

(ङ) समुद्र के कारण सिंहल से पद्मिनी स्त्री की प्राप्ति में विफल होकर, अलाउद्दीन ने राघव चैतन्य के कहने पर चित्तौड़ पर चढ़ाई की।

(च) राजा ने अलाउद्दीन को पद्मिनी दिखलाई।

(छ) अलाउद्दीन ने द्वार पर राजा को पकड़ा।

(ज) मार से घबरा कर राजा ने पद्मावती को देने का संदेश चित्तौड़ भेजा।

(झ) मंत्री पद्मावती को देने के लिए तैयार हुए। किन्तु गोरा और बादल ने युद्ध की सलाह दी बाकी कथा प्रायः वैसी ही है जैसी गोरा बादल कवित्त की और सम्भवतः उसीके आधार पर रचित है।

इसके बाद सम्वत् १७०५-१७०७ में रचित लब्धोदय की पद्मिनी चरित चौपई भी इस संग्रह में प्रकाशित है[1]। कुछ परिवर्तन द्रष्टव्य हैं :—

(क) नागमती के स्थान पर इसमें रतनसेन की पहली रानी का नाम प्रभावती है।

(ख) सिंहल-प्रयाण की कथा कुछ और अतिरंजित है।

(ग) पद्मिनी के देने का विचार वही है, किन्तु मुख्यतः

1—देखें पृ० १-१०८

इस मंत्रणा का दोष सपत्नी प्रभावती के पुत्र वीरभाण को दिया गया है।

(ख) कथा भाग को यत्र-तत्र परिवर्द्धित कर दिया गया है।

दलपत—दौलतविजय के खुमाण-रासो में भी पद्मिनीकी कथा है[1] राघवचेतन्य से अलाउद्दीन ने राणा रतनसेन को पकड़ा। किन्तु इसमें रतनसेन जटमल नाहर की 'गोरा बादल चौपई' का कायर रतनसेन नहीं है, इसका अलाउद्दीन भी कुछ बादशाही शान रखता है। उसने गुण को परखना सीखा है।

राजपूत कालीन राजपूती का सुन्दर वर्णन भी इन शब्दों में दर्शनीय है।

रजपूतां ए रीत सदाई, मरणें मंगल हरखित थाई ॥४७॥
रिण रहचिया म रोय, रोए रण भांजे गया।
मरणे मंगल होय, इण घर आनां ही लगें ॥ ४८ ॥

इस विषय की अनेक अन्य कृतियां भी प्राप्त हैं[2]। टॉड ने अंग्रेजी में पद्मिनी का चरित्र प्रस्तुत किया है। उसने रतनसेन के स्थान पर भीमसिंह को रखा। पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा हमीरसिंह चौहान की पुत्री है। गोरा पद्मिनी का

१—देखें पृ० १२९-१८१

२—देखें शोध पत्रिका, भाग ३, अङ्क २ में श्री नाहटाजी का उपर्युक्त लेख।

चाचा और बादल गोरा का पुत्र है। राणा के छुट जाने पर जब अलाउद्दीन दुबारा चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो राणियां जौहर करती हैं और भीमसिंह आदि दुर्ग के द्वार खोल कर लड़ते हुए वीर गति प्राप्त करते हैं।

पद्मावती विषयक इन सब कथाओं में कुछ बातें एक सी हैं। पद्मावती सिंहल की राजकुमारी है, कथा का नायक रतनसेन और प्रतिनायक अलाउद्दीन है। दुर्मन्त्रणादायी तान्त्रिक ब्राह्मण राघवचैतन्य है। गोरा बादल पद्मावती की सतीत्व के रक्षा करने वाले हैं, और पद्मावती सती धर्म प्रतिष्ठिता राजपूत वीराङ्गना हैं। इनमें कौनसी बात तथ्य है और कौन सी अतथ्य यह एक विचारणीय विषय है। जहाँ तक सिंहल से पद्मावती का सम्बन्ध है, डा० श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा तक इसे सिंगौली का ठिकाना मानने के लिये विवश हुए हैं।

जो विद्वान् पद्मावती की ऐतिहासिकता स्वीकार नहीं करते उनकी संख्या पर्याप्त है। डा० किशोरीशरण-लाल ने कुछ वर्ष हुए पद्मावती की ऐतिहासिकता का खण्डन किया था। अब इस पक्ष का अंतिम और सबसे अधिक व्यापक विमर्श डा० कालिकारञ्जन कानूनगो ने प्रस्तुत किया है[१]। उनकी मुख्य युक्तियाँ निम्नलिखित है :—

१-Studies in Rajput history—A Critical analysis of the Padmavati legend.

(क) कथाओं में पद्मिनी के विषय में कोई ऐकमत्य नहीं है। इसके पिता का नाम विभिन्न रूप में प्राप्त है। जायसी ने इसके पति का नाम रतनसेन तो टॉडने भीमसिंह दिया है। डा० ओझा ने उसके पति का नाम रत्नसिंह माना है, किन्तु वे उसके लिये कोई प्रमाण उपस्थित न कर सके हैं।

(ख) बरनी, इसामी, निजामुद्दीन आदि मुसलमान इतिहासकारों ने कहीं पद्मिनी के नाम का उल्लेख नहीं किया है।

(ग) डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने खजाइनुल फुतूह के आधार पर पद्मिनी की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। वास्तव में इस ग्रन्थ में पद्मिनी की ओर किञ्चिन्मात्र भी संकेत नहीं है।

(घ) पद्मिनी सर्वथा जायसी की कल्पना है, और पद्मिनी-विषयक जितने उल्लेख हैं वे सब जायसी के बाद के हैं।

उपर्युक्त युक्तियों में अनेक सत्य होती हुई भी अनैकान्तिक हैं। पद्मावती-विषयक प्रायः सभी प्राप्त कथाएं घटनाकाल से दो सौ वर्ष से भी अधिक बाद की हैं। इस दीर्घकाल में वंशादि के विषय में कुछ भ्रान्तियाँ स्वाभाविक हैं। पद्मावती और सिंहल का सम्बन्ध कुछ कवि-समय सिद्ध से है। रहा पति का नाम ; इस विषय में भ्रान्ति केवल उन्नीसवीं शताब्दी के लेखक टॉड को रही है। महारावल रत्नसिंह के समय का वि० सं०

१३५९ माघ सुदि ५ बुधवार का एक शिलालेख प्राप्त है। अलाउद्दीन ने संवत् १३५९ माघ सुदि के दिन चित्तौड़ पर प्रयाण किया और वि० सं० १३६० भाद्रपद सुदि १४ के दिन किला फतह हुआ। इन प्रमाणों से निश्चित रूप में कहा जा सकता है कि वि० सं० १३५९-६० में रत्नसिंह ही मेवाड़का राजा था और उसी ने अलाउद्दीन से युद्ध किया। यदि पद्मिनी अलाउद्दीन के आक्रमण के समय चित्तौड़ की रानी थी तो उसका पति वि० सं० १३५९ के शिलालेख का यही 'महा-राजकुल रत्नसिंह रहा होगा। इतिहास के विद्यार्थियों को यह कह कर भ्रान्त करने की आवश्यकता नहीं है कि मेवाड़ के इतिहास से हमें चार रत्नसिंह ज्ञात हैं। अतः हम यह निश्चित ही नहीं कर सकते कि इनमें कौन पद्मिनी का पति रहा होगा।

दूसरी युक्ति केवल मौन के आधार पर है। वास्तव में राजपूत इतिहास का मुसल्मान इतिहासकारों को ज्ञान ही कितना है कि हम कह सकें कि प्रामाणिक इतिहास इतना ही है; इससे अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। स्वयं अलाउद्दीन के विषय में अनेक बातें हैं जिनका वर्णन हिन्दू लेखकों ने किया है, किन्तु बरनी इसामी आदि जिनके बारे में सर्वथा मौन हैं[१]। खीची

१०—हमारे 'प्राचीन चौहान राजवंश' में हम्मीर और कान्हड़देव के वर्णन पढ़ें।

अचलदास की वचनिका में अनेक ऐसे जौहरों का उल्लेख है जिनका वर्णन हमें मुसलमानी तवारीखों में नहीं मिलता[1]। हम जिस प्रकार मुसलमानी तवारीखों के मौन के कारण उन्हें असत्य मानने के लिए विवश नहीं हैं, उसी तरह उनका मौन हमें पद्मिनी को भी कल्पित मानने के लिए विवश नहीं करता।

डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने खजाईनुल फुतूह के आधार पर पद्मावती की सत्ता का प्रमाण उपस्थित किया था। डा० कानूनगो ने उसका निराकरण किया है। खजाइनुल फ़ुतूह् के वर्णन का सारांश बहुत कुछ अमीरखुसरो के ही शब्दों में निम्नलिखित है[2]।

८ जमादि उस सानी, हि० स० ७०२ सोमवार के दिन विश्वविजयी (अलाउद्दीन) ने चित्तोड़ जीतने का निश्चय किया। दिल्ली से सेना चित्तौड़ की सीमा पर पहुंची। दो महीने तक 'तलवारों की बाद पहाड़ की कमर तक चढ़ी पर आगे न बढ़ सकी।' उसके बाद मगरिबियों से दुर्ग पर पत्थरों की वर्षा होने लगी। ११ मुहर्रम, हि० स० ७०३ सोमवार के दिन 'इस युग का सुलेमान' [अलाउद्दीन] दुर्ग में पहुंचा। "यह भृत्य [अमीर खुसरो] जो सुलेमान का पक्षी है उसके

१—श्री नरोत्तमदास जी स्वामी द्वारा संपादित अचलदास खींची री वचनिका में हमारी भूमिका पढ़ें।

२—देखें जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, जिल्द ८, पृष्ठ २६९-२७१

साथ था। वे बार बार 'हुदहुद हुदहुद' चिल्ला रहे थे। किन्तु मैं [अमीर खुसरो] वापस न लौटा, क्योंकि मुझे डर था कि शायद सुल्तान पूछ बैठे, 'मुझे हुदहुद क्यों नहीं दिखाई पड़ता ? क्या वह अनुपस्थित है ?' और यदि वह ठीक कैफियत मांगे तो मैं क्या बहाना करूँगा।" उस समय वर्षाऋतु थी। "सुल्तान के क्रोध की बिजली से आहत होकर राय एडी से चोटी तक जल उठा और पत्थर के द्वार से इस तरह उछल निकला जैसे आग पत्थर से निकलती है। पानी में पड़ कर वह शाही शामियाने की तरफ दौड़ा। इस तरह उसने तलवार की बिजली से अपने को बचा लिया। हिन्दू कहते हैं कि बिजली पीतल के बर्तन पर अवश्य गिरती है और राय का मुँह भय के मारे पीतल सा पीला पड़ गया था। यह निश्चित है कि वह तलवार और बाणों की बिजली से सुरक्षित न रहता, यदि वह शाही शामियाने के दरवाजे तक न पहुँचता।"

इसी अवतरण पर टिप्पण करते हुए प्रोफेसर हबीब ने लिखा था, "हुदहुद वह पक्षी है जो सुलेमान के पास सेबा की रानी बलकिस के समाचार लाता है। यह स्पष्ट है कि सुलेमान के सेबा आदि की तर्फ संकेत के लिये पद्मिनी उत्तरदायी है[१]।" चित्तोड़ की बलकिस तो उस समय भस्म हो चुकी थी। फिर उस युग के सुलेमान, अलाउद्दीन को उसके समाचार कौन देता ? डा० कानूनगो ऊपर दिए हुए अवतरण में पद्मिनी की

१—वही पृष्ठ ३७१, टिप्पणी १

ओर कोई संकेत नहीं पाते। किन्तु संकेत वास्तव में तो अत्य-धिक अस्पष्ट नहीं है। अन्यथा इसमें हुदहुद, शेबा, सुलेमान आदि के लिए विशेष कारण ही क्या था ?

यह अवतरण अन्य दृष्टियों से भी महत्वपूर्ण है। यह ठीक है कि इससे पद्मिनी के आरम्भिक जीवन पर कुछ प्रकाश नहीं पड़ता। न हम इसके आधार पर यही सिद्ध कर सकते हैं कि गोरा बादल पद्मिनी को छुड़ा लाए थे। किन्तु चित्तौड़ में अन्ततः क्या हुआ इसकी झाँकी इसमें अवश्य प्रस्तुत है। चित्तौड़ का घेरा छः महीने तक चला। जब बचाव की आशा न रही तो राजपूत दरवाजा खोलकर शाही शामियाने की ओर बढ़ चले [1]। खजाइनुल फुतूह से ही सिद्ध है कि अला-उद्दीन के हाथों 'हजारों' विद्रोही मारे गए। किन्तु रत्नसिंह या तो पकड़ा गया, या उसने आत्मसमर्पण किया। दुर्ग बादशाह के हाथ आया किन्तु जिस बलकिस की आशा में युग का सुलेमान वहाँ पहुंचा था, वह उस समय समाप्त हो चुकी थी। वह किसी भी हुदहुद की पहुंच के बाहर थी।

रत्नसिंह की इस अंतिम गति का कुछ आभास हमें नाभिनन्दन जिनोद्धार ग्रन्थ से भी मिलता है जिसका रचना-काल सन् १३३६ ई० है। उनमें अलाउद्दीन की अनेक विजयों का वर्णन करते हुए कक्कसूरि ने यह भी लिखा है कि उसने चित्रकूट के राजा को पकड़ा, उसका धन छीन लिया, और

१—शाही शामियाने पर कूच का वर्णन प्रायः हर एक [illegible] है।

कण्ठ में (रस्सी) बांध कर नगर नगर में बन्दर की तरह घुमाया (३.४)। यह मानने की इच्छा तो नहीं होती कि मेवाड़ाधिपति को भी ऐसे दिन देखने पड़े थे। किन्तु एक सम-सामयिक और निष्पक्ष उद्धरण को असत्य कहकर टालना भी कठिन है। कहा जाता है कि महाप्रतापशाली कविजनवन्दित कविश्रेष्ठ मुञ्ज परमार की भी कभी ऐसी ही दशा हुई थी।

पद्मिनी और रतनसेन के जीवन की इस अन्तिम झांकी से पूर्व के वृत्त के लिये हमें पद्मिनी सम्बन्धी साहित्य को ही आधार रूप में ग्रहण करना पड़ता है। यदि पद्मिनी सम्बन्धी सब साहित्य पद्मावत मूलक हो और पद्मावत सर्वथा कल्पनामूलक, तो पद्मावती की ऐतिहासिकता को हम बहुत कुछ समाप्त ही समझ सकते हैं। किन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं है। जायसी ने रूपक की रचना अवश्य की है, किन्तु उसने हर एक गुण और द्रव्य के अनुरूप ऐतिहासिक पात्र चुना है। इसमें अलाउद्दीन, चित्तौड़ और सिंहल ही नहीं, पद्मिनी और राघवचैतन्य भी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं।

मन्त्रवादी के रूप में राघव चैतन्य का उल्लेख वृद्धाचार्य प्रबन्धावली के अन्तर्गत जिनप्रभसूरि प्रबन्ध में वर्तमान है। श्री लालचन्द भगवानदास गाँधी ने इसे पन्द्रहवीं और श्री अगरचन्द नाहटा ने सोलहवीं शती की कृति मानी है। श्री नाहटा जी ने सम्भवतः इसके संवत् १६२६ की एक प्रति भी देखी है। एपिग्राफिआ इंडिका, भाग १, पृष्ठ १६२-१६४ में

प्रकाशित ज्वालामुखी देवी का स्तव भी राघवचैतन्य मुनि की कृति है। यह राघवचैतन्य सम्भवतः जिनप्रभसूरि प्रबन्ध के राघव चैतन्य से अभिन्न है। शार्ङ्गधर पद्धति का रचयिता शार्ङ्गधर राघव का पौत्र था और उसने अत्यन्त आदर पूर्वक श्री राघव चैतन्य के श्लोकों को उद्धृत किया है। इससे सिद्ध है कि राघवचैतन्य की ऐतिहासिकता जायसी के पद्मावत पर निर्भर नहीं है। और यही बात अब दृढ़ता के साथ पद्मावती के विषय में भी कही जा सकती है।

छिताई चरित्र का एक संस्करण प्रकाशित हो चुका है। दूसरा श्री अगरचन्द जी नाहटा द्वारा सम्पादित होकर शीघ्र ही इन्दौर से प्रकाशित होने वाला है। इसकी रचना के समय महानगर सारंगपुर में सलहदी शासन कर रहा था। सलहदी की मृत्यु ६ मई, सन् १५३२ के दिन हुई। इससे स्पष्ट है कि छिताई चरित की रचना इससे पूर्व हुई होगी। विशेष रूप से ग्रन्थ रचना का वर्णन इस पद्य में है।

पन्द्रह सइ रु तिरासी माना।
कछूक सुनी पाछली बाता ॥१०॥
सुदि आपाढ सातइं तिथि भई।
कथा छिताई जंपन लई ॥

इसके अनुसार छिताई चरित की रचना वि० सं० १५८३ तदनुसार सन् १५२६ ई० में हुई। पद्मावत का रचनाकाल सन् १५०० है। अतः यह निश्चित है कि छिताई चरित अपनी

कथा के लिये पद्मावत का ऋणी नहीं हो सकता। अलाउद्दीन के देवगिरि पर आक्रमण के समय जब समरसिंह वहाँ से निकल गया और अलाउद्दीन को यह आशंका हुई कि यादवराज रामदेव की पुत्री भी वहाँ से निकल गई होगी तो उसने राघव चैतन्य से कहा—

मेरो कहिउ न मानइ राउ।
बेटी देई न छांडइ ठाऊं ॥४२३॥
सेवा करइ न कुतवा पढई।
अहि निसि जूझि बराबर चढई।
धसि सौरसी देसंतरु गयो।
अति धोखउ मेरे जीय भयो ॥४२४॥
रनथंभोर देवल लगि गयो।
मेरो काज न एकौ भयो।
इउं बोलइ ढीली कउ धनी।
मइ चीत्तौर सुनी पदुमिनी ॥४५५॥
बंध्यौ रतनसेन मइ जाइ।
लइगो बादिल ताहि छंडाइ।
जो अबके न छिताई लेऊं।
तो यह सीसु देवगिरि देऊं ॥४५६॥

"राजा (रामदेव) मेरा कहना नहीं मानता। वह न बेटी देता है और न स्थान छोड़ता है। वह न सेवा करता है, और न (आधीनता सूचक) खुत्बा पढ़ता है। समरसिंह निकल

कर देशान्तर में चला गया है। इससे मेरे जी में अत्यन्त धोखा हुआ है। मैं देवल (देवी) के लिए रणथंभोर गया; किन्तु मेरा एक काम भी सिद्ध न हुआ।" (फिर) दिल्ली के स्वामी ने कहा, "मैंने चित्तौड़ में पद्मिनी की सत्ता के बारे में सुना। मैंने जा कर रत्नसेन को बाँध लिया, किन्तु बादल उसे छुड़ा ले गया। जो अबकी बार मैंने छिताई को न लिया तो यह सिर मैं देवगिरि को अर्पण करूंगा।"

इस अवतरण से सिद्ध है कि जायसी के पद्मावत से पूर्व ही पद्मिनी की कथा और अलाउद्दीन की लम्पटता पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी थी। जायसी ने पद्मावती, रत्नसेन और बादल का सृजन नहीं किया। ये जनमानस में उससे पूर्व ही वर्तमान थे। समयानुक्रम से इस कथा में अनेक परिवर्तन भी हुए होंगे। यह सम्भव नहीं है कि पद्मावती की कर्णपरम्परागत गाथा सोलहवीं शताब्दी तक सर्वथा तथ्यमयी ही रही हो। किन्तु उसे जायसी की कल्पना मानने की व्यर्थ कल्पना को अब हम तिलाञ्जलि दे सकते हैं। सन् १३०२-३ में रत्नसेन (रत्नसिंह) की सत्ता निर्विवाद है। राघवचैतन्य ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। परम्परा-सिद्ध पद्मावती की सत्ता भी असम्भावना की कोटि में प्रविष्ट नहीं होती। विषय-लोलुप अलाउद्दीन, सती पद्मिनी, वीरव्रती गोरा और बादल ये सब ही तो स्वचरित्रानुरूप हैं। हर्षचरित में भ्रातृजाया की रक्षार्थ कामिनी-वेष को धारण कर शत्रुशिविर में पहुँच कर

शकाधिपति को मारने वाले साहसाङ्क चन्द्रगुप्त के इतिवृत्त को पढ़ने वालों के लिए तो बादल का वीर कार्य भी भारतीय परम्परा के अनुकूल है। बादल ने केवल अपने स्वामी की रक्षा की। चन्द्रगुप्त ने तो अपनी भ्रातृजाया को बचाया और 'परकलत्रकामुक' विजयी शकराज का भी हनन किया था[1]। शौर्य और साहस के ऐसे कार्यों से भारतीय इतिवृत्त देदीप्यमान है, और इन्हीं से भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा हुई है।

'नवीन वसन्त'
आश्विन शुक्ला चतुर्थी, दशरथ शर्मा
वि० सं० २०१८

१—"अरिपुरेच परकलत्रकामुकं कामिनीवेशगुप्तश्च चन्द्रगुप्तः शकपतिम शातयत्" (पृ० १९९-२००)।
इसी पर टीका में शङ्कर ने लिखा है, "शकानामाचार्यः शकाधिपतिः। चन्द्रगुप्तभ्रातृजायां ध्रुवदेवीं प्रार्थयमानश्चन्द्रगुप्तेन ध्रुवदेवी वेष-धारिणा स्त्रीवेषजनपरिवृतेन रहसि व्यापादित इति।"

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में संतपुरुष व सतियों के जीवनचरित्र का बड़ा भारी महत्व है। महान् व्यक्तियों के उदार चरित्र युग-युग तक जनता के जीवन-पथ में दीपस्तंभ का काम करते हैं। कथानायक चाहे पौराणिक हो या ऐतिहासिक उनकी जीवन सौरभ समान रूप से जनमानस को अनुप्राणित करती रहती है। सती पद्मिनी और गोरा बादल का चरित्र सतीत्व और स्वामीधर्म का प्रतीक होने से मेवाड़ के कण कण में व्याप्त हो गया और विभिन्न कवियों ने उस पर काव्य बना कर श्रद्धाञ्जली अर्पण की। सं० १६४५ में कवि हेमरत्न ने, सं० १६८० में नाहर जटमल ने, फिर सं० १७०७ में लब्धोदय ने, इसके बाद कवि दलपतविजय ने 'खुमाण रासो' में सती पद्मिनी की गौरव-गाथा गायी है। इनमें हेमरत्न की कृति को छोड़कर अवशिष्ट तीनों कृतियाँ इस ग्रंथ में प्रकाशित की जा रही हैं। इन तीनों से पूर्ववर्ती रचना 'गोरा बादल कवित्त' है, जो प्राचीन व महत्त्वपूर्ण होने से इस ग्रंथ के पृ० १०६ में प्रकाशित किया गया है। सभी कवियों ने अपने काव्यों में इस अज्ञात कर्तृक कृति के कवित्तों को उद्धृत कर प्रामाणिक माना है। किस कवि की कृति में कहाँ कौनसा पद्य अवतरित है यह नीचे की पंक्तियों में बताया जाता है।

गोरा वादल कवित्त का २२वाँ कवित्त हेमरत्न ने पद्याङ्क ५७ और लब्धोदय ने पृ० २८ में उद्धृत किया है।

पद्याङ्क २३ व २६ को हेमरत्न ने पद्याङ्क ६६-६६ में दिया है।

प० ३१ को हेमरत्न ने थोड़े पाठान्तर से प० ८६ में दिया है।

प० ३५ कवित्त हेमरत्न ने प० ६७ में उद्धृत किया है।

प० ४१वें छन्द को लब्धोदय ने पृ० ५८ में एवं खुमाणरासो पृ० १४३ में उद्धृत किया है।

प० ४२ व प० ४३ को हेमरत्न ने प० २५३ व प० २८८ में उद्धृत किया है।

प० ५२ को हेमरत्न ने प० ३६८ में लिया है।

प० ५८ कवित्त को हेमरत्न ने प० ३४२ में व खुमाणरासो पृ० १५५ में लिया गया है।

प० ५६-६० को हेमरत्न ने प० ३४४-४५ में उद्धृत किया है।

प० ७२-७३-७४ को हेमरत्न ने प० ३६६-३६७ व ५६६ में लिया है।

प० ७७-७८ को हेमरत्न ने प० ६१२-१३ में एवं खुमाणरासो पृ० १७६ में लिया है।

प० ८१ को हेमरत्न ने प० ६२० तथा खुमाणरासो प० १८० में उद्धृत किया है।

इस में राणा रतनसिंह को गुहिलोत व गोरा वादल को चौहान वंशीय वतलाया है। गाजन्न के पुत्र वादल की आयु २३ वर्ष की वतलाई है जो समीचीन प्रतीत होती है। इसमें

राघव को परदेशी विप्र बतलाया है जिसके पाण्डित्य से प्रभावित होकर राणा ने अपने पास रखा। एक दिन खेल में राघव के पराजित होने पर राजा ने उससे द्रव्य मांगा तो वह कुपित हो गया। राजा द्वारा निर्वासित हो वह चित्तौड़ से निकला और उसने राणा के पैरों में बेड़ियाँ डलवाने की प्रतिज्ञा की। राघव ने मंत्रसिद्धि द्वारा योगिनी को आराधन किया और वर प्राप्त कर दिल्ली चला गया। उसने सुल्तान अलाउद्दीन को निशिचर्या में दरवेश के भेष में आने पर दिल्ली का सुलतान होने का आशीर्वाद दिया और प्रतीति प्राप्त कर शाही दरबार में प्रविष्ट होकर राजमान्य हो गया। छन्द पद्याङ्क ५० में लिखा है कि गोरा ५ वर्ष से राणा के ग्राम-ग्रास को अस्वीकार कर अपने घर बैठा है।

प्राचीनता की दृष्टि से हेमरत्न की कृति का स्थान गोरा बादल कवित्त के बाद आता है। इसके छन्द भी परवर्ती कवियों ने उद्धृत किये हैं। पद्याङ्क १७०-७१-७२-७३ को लब्धोदय ने पृ० ३१-३२ में उद्धृत किये हैं तथा खुमाणरासो में दलपत-विजय ने पद्याङ्क ७०-७१-७२-७३ में उद्धृत किये हैं। पद्याङ्क २८८ को खुमाणरासो (पद्याङ्क २४९३) में उद्धृत किया है। जटमलनाहर ने इसके पद्याङ्क ५९७ छन्द को पद्याङ्क ११० में उद्धृत किया है। लब्धोदय ने अपनी चौपाई के प्रारम्भ में "पूरव कथा संपेख" शब्दों द्वारा जिस पूर्व रचना का उल्लेख किया है वह कृति जटमल की न होकर हेमरत्न की ही होनी

चाहिए क्योंकि वह रचना मेवाड़ में और विशेष कर नररत्न भामाशाह के भाई कावेड़िया ताराचन्द के आग्रह से गुंफित हुई थी। अतः इसका पर्याप्त प्रचार हो गया था।

हेमरत्न के पश्चात् जटमल नाहर की गोरा बादल चौपई निर्मित हुई, यह कृति अपेक्षाकृत छोटी है और इसमें कुल १५३ छन्द हैं। इस सुन्दर हिन्दी रचना का निर्माता कवि जटमल नाहर पंजाब का निवासी था अतः हेमरत्न व लब्धोदय आदि इतर कवियों की भांति राणा वंश से अभिज्ञ न होने के कारण रतनसेन को जायसी की भांति चौहान वंश का लिखा है जब कि वे गुहिलोत वंश के थे। जटमल ने राघव चेतन को सिंहलद्वीप से पद्मिनी के साथ आया हुआ लिखा है जब कि अन्य कवि उसे चित्तौड़ निवासी मानते हैं। जटमल एक कथा और भी लिखता है कि राणा ने मोहवश पद्मिनी का मुंह देखे विना अन्नजल न ग्रहण करने को नियम ले रखा था। एक दिन वह दो घड़ी रात रहते राघव चेतन को साथ लेकर शिकार को चल पड़ा। उसके अत्यन्त तृषातुर होने पर नियम पालनार्थ राघव ने त्रिपुरा की कृपा से पद्मिनी की तादृशमूर्त्ति बनाई जिसके जंघा पर तिलका चिन्ह कर दिया। राना ने राघव के चरित्र पर संदेह लाकर घर आते ही रुष्ट होकर उसे निर्वासित कर दिया। वह योगी का भेष धारणकर वाद्य-यंत्र बजाते हुए दिल्ली पहुँचा और वनखण्डमें निवास करने लगा। एक दिन सुलतान अलाउद्दीन शिकार खेलने के लिए वन में आया तो

राघव ने संगीतध्वनि से सारे मृगों को अपने पास आकृष्ट कर लिया। शिकार न पाकर सुलतान राघव के स्थान में आया और घोड़े से उतर कर उसके पास गया। वह उसकी संगीत-कला से इतना प्रभावित हुआ कि उसे अपने साथ दिल्ली ले आया। राघव चेतन ने सुलतान से ५०० गांव प्राप्त किये ऐसा पद्मिनी चरित्र चौपई पृ० २७ में उल्लेख है।

जटमल पद्मिनी के सौन्दर्य्य की ओर सुलतान को आकृष्ट करने के लिए जीवित शशक की कोमलता व हेमगल पांव लाने का उल्लेख करता है जबकि जायसी का राघव सीधा ही सुलतान के समक्ष पद्मावती का रूप वर्णन करता है।

जटमल ने लिखा है कि सुलतान १२ वर्ष तक चित्तौड़ पर घेरा डाले बैठा रहा (जो कि कवि की अतिरंजना मात्र लगती है) अन्त में राघवचेतन की सलाह से सुलतान ने छलपूर्वक रतनसेन को गिरफ्तार कर लिया और प्रतिदिन उसे गढ़ के नीचे लाकर सब लोगों को दिखाते हुए राणा के कोड़े मरवाया करता जिसकी वेदना से व्याकुल हो कायरता लाकर राणा के मुंह से कवि पद्मिनी को देने के लिए स्वयं रखा प्रेषण करने की स्वीकृति कराता है (कवित्त ८०) जो कि राणा और उसके राजवंश की शान के विपरीत कायरतापूर्ण कदम है। आगे चलकर जब बादल कपट प्रपंच रचना द्वारा पद्मिनी को देने के प्रलोभन से सुलतान को वशवर्त्ती कर राणा को छुड़ाने आता है तो कवि फिर राणा द्वारा बादल को इन जघन्य शब्दों

(रानी को देकर राणा को छुड़ाने) के लिए धिकार दिलाता है। ये दोनों बातें एक दूसरे से विपरीत हैं अतः कवि ने यहाँ विरोधाभास किया है।

जटमल तथा अन्य सभी कवियों ने पद्मिनी को सिंहलद्वीप की पुत्री बतलाया है जो निरी कवि-कल्पना मात्र है। ओझा जी के अनुसार चित्तौड़ से ४० मील पूर्व स्थित सिंघोली गांवही सिंघल होना सम्भव है। सिंहलद्वीप के जल-वायु ने पद्मिनी जैसी श्रेष्ठ लावण्यवती स्त्री पैदा की हो एवं इतने दूर से राजस्थान आई हो यह संभव नहीं। राजस्थान में जैसे पूगल की पद्मिनी प्रसिद्ध रही है उसी प्रकार सम्भव है मेवाड़ में भी सिंघोली जैसा कोई स्थान रहा हो। खुमाणरासो हमें सूचना देता है कि महाराणा राजसिंह औरंगमीर की मांग मान कमंध की पुत्री को व्याह कर लाया था, उस सुन्दरी को भी कवि ने पद्मिनी लिखा है, जिसने राणा को पत्र लिख कर मुसलमान के घर जाने से बचाकर अपनी रक्षा करने की प्रर्थना की थी। राणा उसे व्याह कर ले आया इसके बाद राणा शिकार के लिए गया, उसने गंगा त्रिवेणी गोमती और नागद्रह को देखकर बाँध कराने के विचार से गजधर को बुलाकर शिरोपाव दिया। खुमाणरासो में यहाँ तक का वर्णन प्राप्त है। अतः राजसिंह की पद्मिनी की भाँति रतनसेन की परिणीता पद्मिनी सती भी मेवाड़-राजस्थान में ही जन्मी हुई वीरांगना होनी चाहिए।

इस ग्रंथ में कवि लब्धोदय कृत पद्मिनी चरित्र चौपई ही सर्व प्रथम और प्रधान रचना है अतः यहाँ कवि लब्धोदय का यथाज्ञात जीवन परिचय दिया जाता है।

महोपाध्याय लब्धोदय और उनकी रचनाएँ

राजस्थानी साहित्य की श्री वृद्धि करने में जैन कवियों का योगदान बहुत ही उल्लेखनीय है। अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा का विकास हुआ तब से लेकर अबतक सैकड़ों कवियों ने हजारों रचनाएं राजस्थानी गद्य व पद्य में निर्मित की। नीति, धर्म सदाचार के साथ-साथ जीवनोपयोगी प्रत्येक विषय की राजस्थानी जैन रचनाएं मिलती हैं। राजस्थानी साहित्य की विविधता और विशालता जैन विद्वानों की अनुपम देन है। पन्द्रहवीं शती तक राजस्थान और गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ और मालवा जितने व्यापक प्रदेश की एक ही भाषा थी। तेरहवीं शती से पन्द्रहवीं शती तक की जैनेतर रचनाएं बहुत ही अल्प मिलती हैं पर जैन कवियों की प्रत्येक शताब्दी के प्रत्येक चरण में विविध काव्य रूपों एवं शैलियों की सैकड़ों रचनाएं उपलब्ध होती हैं। पन्द्रहवीं शती तक की जैन रचनाएं अधिकांश छोटी-छोटी हैं, पन्द्रहवीं के उत्तरार्द्ध में कुछ बड़े रास रचे जाने लगे और सतरहवीं शताब्दी में तो काफी बड़े-बड़े रास अधिक संख्या में रचे गये। रास, चौपाई, फागु, विवाहला आदि चरित-काव्य पहले विविध प्रसंगों में व मन्दिरों आदि में खेले भी जाते थे अतः उनका छोटा होना स्वाभाविक व जरूरी भी था पर जब रास

बड़े-बड़े रचे जाने लगे तो वे केवल गेय-काव्य रह गये, खेलने के नहीं। साधारण जनता, अपनी परिचित स्वरलहरी और बोल-चाल की भाषा में जो रचनाएं की जाती हैं उनको सरलता से अपना लेती है। प्राकृत संस्कृत भाषा में प्राचीन विस्तृत साहित्य होने पर भी उससे लाभान्वित होना जन साधारण के लिए सम्भव नहीं था, इसलिए बहुत कुछ उनके आधार से और कुछ लोककथाओं को धार्मिक बाना पहना कर जैन कवियों ने सरल राजस्थानी भाषा में प्रचुर चरित काव्य बनाए। प्रातः, मध्यान्ह और रात्रि में उन्हीं रास, चौपाइयों को गाकर व्याख्या की जाती थी। लोकगीतों की प्रचलित देशियों में उनकी ढालें बनाई जाने से जनता उन्हें भाव-विभोर होकर सुनती और उन चरित्र-काव्यों से मिलने वाली शिक्षाओं को अपने जीवन का ताना बाना बना लेती। फलतः उस समय का लोक-जीवन इन रचनाओं से बहुत ही प्रभावित था। नीति, धर्म और सदाचार की प्रेरणा देने में इन रचनाओं ने बहुत बड़ा चमत्कार दिखाया।

अठारहवीं शताब्दी में अनेक राजस्थानी जैन कवि हुए हैं जिन में महोपाध्याय लब्धोदय की साहित्यसेवा चालीस पचास वर्षों तक निरन्तर चलती रही। उन्होंने छः उल्लेखनीय बड़े रास बनाए। लघु-कृतियां भी अनेक बनाई होगी किन्तु वे या तो नष्ट हो गई या किसी भंडारों में छिपी पड़ी होंगी। लब्धोदयजी का विहार मेवाड़ प्रदेश में अधिक हुआ

और वहां के भंडारों की जानकारी भी कम प्रकाश में आई है। उनके उल्लिखित, रासों में पद्मिनी चौपाई ही अधिक प्रसिद्धि प्राप्त है, अन्य ३ रासों की एक-एक दो-दो प्रतियां मिली हैं। तीन रासों के तो नाम व प्रतियां भी कहीं नहीं मिली. पर कवि की अन्य रचनाओं में उनकी सूचना प्राप्त होती है।

आज से ३२-३३ वर्ष पूर्व जब हमने हस्तलिखित-ज्ञान भण्डारों का अवलोकन प्रारम्भ किया और अपने संग्रहालय के लिए प्रतियों का संग्रह प्रारम्भ किया तो कवि लब्धोदय की पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रतियां ज्ञानभंडारों में देखने को मिली तथा हमारे संग्रह में भी १ प्रति संगृहीत हुई। सं० १९९१ में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' भाग १५ अङ्क २ में श्री मायाशंकर याज्ञिक ने अपने 'गोरा बादल की बात' नामक लेख में पद्मिनी चरित्र का सर्व प्रथम परिचय हिन्दी जगत को दिया। उनके संग्रह में इसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति थी। उन्होंने पद्मावत और 'गोरा बादल की बात' के कथानक से इस पद्मिनी चरित्र में जो अन्तर है उसका संक्षिप्त परिचय उस लेख में दिया था। इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम उन्होंने भ्रमवश लक्ष्मोदय लिख दिया था और वह भूल काफी वर्षों तक दुहराई जाती रही। अतः हमने 'सम्मेलन पत्रिका' वर्ष २६ अंक १-२ में 'जैन कवि लब्धोदय और उनके ग्रन्थ' नामक लेख प्रकाशित करके इस भूल को संशोधन करते हुए कवि की रचनाओं का परिचय भी प्रकाशित किया। सं० १९९२ में 'युगप्रधान श्रीजिन-

चन्द्रसूरि' के पृष्ठ १६३ में श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी की शिष्य-परम्परा का परिचय देते हुए इनकी दो रचनाओं का उल्लेख किया था। कवि ने दूसरी रचना गुणावली चौ० में इससे पूर्व-वर्ती ६ रचनाओं का उल्लेख किया है, इसका भी उल्लेख किया गया था पर उस समय तक हमें केवल दो ही रचनाएँ मिली थी। इसके वाद खोज निरंतर जारी थी और उसके फलस्वरूप दो रचनाओं की और प्रतियाँ मिलीं एवं दो स्तवन भी देखने में आए।

आपकी गुरु-परम्परा युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी के गुरु श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी से प्रारंभ होती है। इस परम्परा में कई और भी अच्छे अच्छे विद्वान हो गए हैं जिनमें गुणरत्न व महिमोदय आदि उल्लेखनीय हैं। आपने अपने ग्रंथों में अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है :—

श्री जिनमाणिकसूरि प्रथम शिष्य, श्री विनयसमुद्र मुनीशजी।
श्री हर्षविशाल विशाल जगत में, सुवदीता जसु सीसजी ॥व०
महोवझाय श्री ज्ञानसमुद्र गुरु, वाणी सरस विलासजी।
तासु शिष्य उवझाय शिरोमणि, श्री ज्ञानराज गुणराशिजी ॥व०
विद्यावंत अने वड़ भागी, सोभागी सिरदारजी।
तासु शिष्य लब्धोदय पाठक, सम्बन्ध रच्यो सुखकार जी ॥व०

[रत्नचूड़ मणिचूड़ चौ० प्रशस्ति]

यही परम्परा कवि ने पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रशस्ति में दी है जो इसी ग्रंथ के पृ० १०६ में देखना चाहिए।

जन्म समय और दीक्षा

कवि की सर्वप्रथम रचना पद्मिनी चरित्र चौपई सं० १७०६ में प्रारम्भ होकर सं० १७०७ चैत्री पूनम के दिन सम्पूर्ण हुई है। इस समय ये गणि पद से विभूषित थे, अतः उनकी आयु २७ वर्ष के लगभग होना संभव है इससे इनका जन्म सं० १६८० के लगभग माना जा सकता है। आपका जन्म नाम लालचन्द था उस समय दीक्षा प्रायः लघुवय में ही हुआ करती थी अतः दीक्षा का समय सं० १६९५ के आसपास होना चाहिए। और आपका दीक्षा नाम लब्धोदय रखा गया था।

अध्ययन और विहार

आपकी गुरु-परम्परा एक विद्वद्-परम्परा थी। विनयसमुद्र वाचक पद से विभूपित थे। उनके शिष्य वाचक गुणरत्न तो जैन साहित्य के अतिरिक्त साहित्य और तर्कशास्त्र के भी अद्भुत विद्वान थे। इनके रचित १ काव्यप्रकाश टीका (श्लोक १०५००), २ सारस्वत टीका (क्रियाचन्द्रिका ४००० श्लोक) ३ रघुवंश सुबोधिनी टीका (६००० श्लोक), ४ तर्कभाषा (गोवर्द्धनी प्रका- शिका-तर्क तरंगिणी श्लो० ७४५०) ५ शशधर के न्याय सिद्धान्त पर टिप्पण ६ मेघदूत पंजिका ७ नमस्कार प्रथम पद अर्थ के अतिरिक्त १ संयतिसंधि २ श्रीपाल चौपई, दो राजस्थानी काव्य उपलब्ध हैं। इनमें से 'तर्कतरंगिणी' की एकमात्र प्रति ब्रिटिश म्युजियम, लंदन में है और 'न्यायसिद्धान्त' की सम्पूर्ण प्रति अनूपसंस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर में है। 'मेघदूत पंजिका' की भी

एक मात्र प्रति श्रीमोहनलालजी ज्ञानभंडार, सूरत में मिली है। हर्षविशाल के शिष्य ज्ञानसमुद्र महोपाध्याय तथा उनके शिष्य ज्ञानराज भी महोपाध्याय पदविभूपित थे। पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रशस्ति में उन्हें साधु शिरोमणि 'सकल विद्या गुण शोभता' लिखा है। अतः ऐसे गुरुओं की सेवा में रहते हुए आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया, यह आपने स्वयं अपनी मलयसुन्दरी चौ० में लिखा है :—

"प्रौढोपाध्याय पदधारी, श्री लब्धोदय गुण खाणिजी।
व्याकरण तर्क साहित्य छन्दकोविद, अलंकार रस जाणिजी॥६॥"

आपकी सर्व प्रथम रचना सं० १७०६ उदयपुर की है उसमें आपने खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनरंगसूरिजी की आज्ञा से उदयपुर में आने का उल्लेख किया है। उसके बाद की प्राप्त सभी रचनाएँ उदयपुर, गोगूंदा, धुलेवा में रचित है। अतः आपका विहार मेवाड़ प्रदेशमें ही अधिक हुआ प्रतीत होता है।

वाचक व उपाध्याय पद

आपने अपनी प्रथम रचना में अपने को गणि पद विभूपित लिखा है उसके बाद दीर्घकाल तक कोई रचना नहीं मिलती। अतः आपको वाचक पद कब मिला, नहीं कहा जा सकता पर, सं० १७३६ की रत्नचूड़ मणिचूड़ चौ० में आपने अपने को पाठक (उपाध्याय) पद से सम्बोधित किया है। अतः इतःपूर्व आचार्य श्री द्वारा आपको उपाध्याय पद मिल चुका था। खरतर गच्छमें यह मर्यादा है कि उपाध्यायों में जो सब से बड़ा हो वह महो-

पाध्याय कहलाता है। आपके गुरु और प्रगुरु दोनों महो-
पाध्याय थे अतः उनकी काफी लंबी आयु थी। आपकी गन्ध-
सुन्दरी चौ०में प्रौढोपाध्याय पद का उल्लेख ऊपर आ चुका है।

रचनाएँ

राजस्थान में पद्मिनी और गोराबादल कथा की काफी
प्रसिद्ध रही है और इस सम्बन्ध में कई रचनाएँ प्राप्त होती हैं।
प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित 'गोराबादल कवित्त' संभवतः सब से
प्राचीन रचना है। इसी के आसपास मलिक मुहम्मद जायसी
ने 'पद्मावत' नाम का महत्वपूर्ण काव्य बनाया। अलाउद्दीन
और पद्मिनी संबंधी घटना का सर्व प्रथम उल्लेख जायसी से
पूर्ववर्त्ती कवि नाराइणदास के छिताई चरित्र में मिलता है जो
सं० १५८३ में रचा गया है। जायसी के बाद सं० १६४५ में
जैन कवि हेमरत्न ने गोराबादल चौ० की रचना भामाशाह के
भाई ताराचन्द के लिए सादड़ी में की। तदनन्तर सं० १६८०
में जटमलनाहर ने गोराबादल कथा* हिन्दी भाषा में बनाई
तदनन्तर कवि लब्धोदय ने 'पद्मिनी चरित्र चौपाई' की
रचना की।

शील धर्म पर पद्मिनी चरित्र मेवाड़ के राणा जगतसिंह
की माता जंबूवती के मन्त्री खरतर गच्छीय [illegible]

* इसके आधार से सं० २०१३ तेरापंथी संत [illegible]
स्वामी ने हिन्दी पद्य में 'पद्मिनी चरित्र' नामक [illegible] बनाया है।

के पुत्र हंसराज और भागचन्द के आग्रह से मुनि श्री लब्धोदय गणि ने पूर्व रचित कथा को देखकर पद्मिनी चरित्र चौ० की रचना सं० १७०६ में प्रारम्भ कर ४६ ढाल व ८१६ गाथाओं में सं० १७०७ चैत्रीपूनम के दिन पूर्ण की। इससे पूर्ववर्त्ती रचना हेमरत्न की है उसमें 'गोरावादल कवित्त' का उपयोग हुआ है और लब्धोदय ने तो इन दोनों ही रचनाओं का उपयोग किया है। हेमरत्न की रचना में गा० ६३२ हैं और लब्धोदय की गाथा ८१६ है। अतः कवि ने कथा प्रसङ्ग विस्तृत किया है।

इसके पश्चात् कवि ने तीन चौपाइयां और भी रची थी पर वे अवतक अनुपलब्ध हैं। उपलब्ध रचनाओं में रत्नचूड़ मणिचूड़ चौपाई सं० १७३९ की है जो ५वीं रचना होनी चाहिए क्योंकि इसके बाद की मलयसुन्दरी चौ० में उससे पूर्व ५ चौपाई रचने का उल्लेख स्वयं कवि ने किया है।

रत्नचूड़ मणिचूड़ की प्राचीन कथा को दान-धर्म के माहात्म्य में कवि ने राजस्थानी पद्य (३८ ढालों) में संकलित किया है। सं० १७३९ वसन्तपंचमी को उदयपुर में इसकी रचना हुई। पद्मिनी चरित्र चौ० जिस मन्त्री भागचन्द के आग्रह से बनाई गई थी उसी के आदर से यह चौपाई रची गई है। इसकी प्रशस्ति में मन्त्री भागचन्द के पुत्र व पौत्रों का अच्छा परिचय दिया गया है। मन्त्री भागचन्द के सम्बन्ध में ५ पद्य हैं, उससे उसका महत्व भली-भाँति स्पष्ट है। उसके पुत्र दशरथ, समरथ

और अमृत थे इनमें से समरथ के ३ पुत्र महासिंह, मनोहर दास व हरिसिंह थे। दशरथ के पुत्र आसकरण और सुजाण सिंह थे। अमृत के पुत्र गोकुलदास व इन्द्रभाण थे। इस प्रकार मन्त्री मुकुट भागचन्द का परिवार काफी बड़ा था। ७ पाट के बाद मेवाड़ में खरतर गच्छ की पुनः प्रतिष्ठा करने का श्रेय कवि ने उसे दिया है। इस रचना के समय मन्त्री भागचन्द काफी वृद्ध हो चुके थे, फिर भी उनकी धर्म भावना और शास्त्र श्रवण प्रेम ज्यों का त्यों बना हुआ था। इस चौपाई की एक मात्र प्रति 'हितसत्क ज्ञानमन्दिर' घाणेराव से अभी अभी हमें प्राप्त हुई है। काव्य बड़ा सुन्दर और रोचक है।

कवि की छट्टी चौपाई सबसे बड़ी कृति है—मलयसुन्दरी चौपाई। यह भी शील-धर्म के माहात्म्य पर १४२ पत्रों में रची गई है। प्रस्तुत मलयसुन्दरी चौ० सं० १७४३ श्रावण वदी १३ के दिन प्रारम्भ कर गोघूंदा (मेवाड़) में धनतेरस के दिन पूर्ण की। केवल ३ मास में इतने इतने बड़े काव्य का निर्माण वास्तव में कवि की असाधारण प्रतिभा का द्योतक है। इसकी रचना कवि के उल्लेखानुसार उनके गुरु महो० ज्ञानराज द्वारा स्वप्न* में दी हुई प्रेरणा के अनुसार की थी। मलयसुन्दरी कथा जैन साहित्य में काफी प्रसिद्ध है।

---

* "महोपाध्याय ज्ञानराज गुरु, कह्यो सुपन में आय।
पांच चौपाई थे करी, ए छट्ठी करो बणाय॥"

कवि की सातवीं रचना गुणावली चौपाई ज्ञानपंचमी के माहात्म्य पर निर्मित हुई है। सं० १७४५ के मिती फाल्गुण सुदि १० को उदयपुर में कटारिया मन्त्री भागचन्द जी की पत्नी भावलदे के लिए यह रची गई थी। फा० व० १३ को प्रारम्भ कर फा० सु० १० को अर्थात् केवल १२ दिनमें आपने यह काव्य रच डाला था।

उपर्युक्त बड़ी रचनाओं के अतिरिक्त कवि ने बहुतसी छोटी रचनाएँ अवश्य बनाई होंगी, पर हमें उनमें से केवल २ ही रचनाओं की जानकारी मिली है। प्रथम धुलेवा ऋषभदेव स्तवन १३ पद्यों का है और उसकी रचना सं० १७१० ज्येष्ठ वदि २ बुधवार को हुई है। दूसरा ऋषभदेव स्तवन १५ गाथा का है जो सं० १७३१ मि० व० ८ बुधवार को रचा हुआ है।

स्वर्गवास

सं० १७४५ के पश्चात् आपकी कोई रचना नहीं मिलती और उस समय आपकी आयु लगभग ६५-७० वर्ष की हो चुकी थी। अतः सं० १७५० के आस-पास आपका स्वर्गवास मेवाड़-उदयपुर के आसपास हुआ होगा।

शिष्य परम्परा

कवि लब्धोदय बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके धार्मिक उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक भावुक आत्माओं ने उनका शिष्यत्व स्वीकार किया था। कवि ने अपने 'रत्नचूड़ मणिचूड़ चौपाई' और 'मलयसुन्दरी चौ०' की प्रशस्ति में अपने शिष्यों की नामावली इस प्रकार दी है :—

"शिष्य रत्नसुन्दर गणि वाचक, कुशलसिंह मन हरपइ जी।
सांवलदास शिष्य सोभागी, पासदत्त परसिद्ध जी।
खेतसी परमानन्द रूपचन्द, वांची ने जस लिद्ध जी।"

[रत्नचूड़ मणिचूड़ चौ०]

जसहर्ष शिष्य वाचक सोभागी, रत्नसुन्दर सिरदार जी।
शिष्य कल्याणसागर ज्ञानसागर, पद्मसागर पंडित श्रीकारजी॥

[मलयसुन्दरी चौ०]

कवि के शिष्य ज्ञानसागर के शिष्य भुवनधीर अच्छे विद्वान थे, इनके रचित भुवनदीपक बालावबोध सं० १८०६ में रचित उपलब्ध है।

उपर्युक्त शिष्योंमें से कुछ की शिष्य-परम्परा अवश्य ही लम्बे समय तक चली होगी व उनमें कई कवि व विद्वान भी हुए होंगे पर हमें उनकी जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

संवत् १७०६ से सं० १७४५ तक की रची हुई उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि महोपाध्याय लब्धोदय ने ४० वर्ष तक राजस्थानी भाषा और साहित्य की विशिष्ट सेवा की थी। उनकी पद्मिनी चरित्र चौ० को यहां प्रकाशित किया जा रहा है। अवशिष्ट रचनाओं के प्रकाशन से कवि की काव्य-प्रतिभा का सही मूल्यांकन हो सकेगा, क्योंकि यह तो कवि की प्राथमिक रचना है, उसके बाद अन्य रचनाओं में प्रौढ़त्व अवश्य ही मिलेगा।

प्रतिष्ठा लेख आदि

आपके जीवनचरित्र की उपर्युक्त सामग्री में हम देख चुके हैं कि आपका विहार विशेषकर मेवाड़ में हुआ था। आपने वहाँ जिनमंदिर, प्रभु-प्रतिमाएँ व गुरु-पादुओं की प्रतिष्ठा भी

करवायी थी। मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र के वंशजों द्वारा निर्मापित उदयपुर की वीराणी की सेरी में स्थित ऋषभदेव जिनालय के मूल-नायक भगवान के लेख से विदित होता है कि आपके कर-कमलों से उपर्युक्त प्रतिष्ठा हुई थी। वहाँ के यतिवर्य ऋषि श्री अनूपचन्द्रजी द्वारा प्राप्त लेख यहाँ दिये जा रहे हैं :—

"संवत् १७३३ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री वृहत् खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं युगप्रधान श्री जिनरंगसूरि भट्टारकस्यादेशात् महोपाध्याय श्री ज्ञानराज गुरुणां शिष्य महोपाध्याय श्री लब्धोदय गणिभिः श्री ऋषभदेव बिम्बं कारितं च वच्छावत मं० लखमी चन्देन पुत्र मं० रामचन्द्रजी भ्रातृ सा० रघुनाथ जी भ्रातृजयं सबलसिंह पृथ्वीराज बाई हरीकुमरीकया श्रेयोर्थं।

संवत् १७४३...श्री जिनरंगसूरि विजये युगप्रधान श्री जिन-कुशलसूरिणां पादुके कारिते प्रतिष्ठिते च महोपाध्याय श्रीलब्धोदय।

संवत् १७२१ (?) वर्षे चैत्र द्वादशी.........श्री लब्धोदय गणि।

श्री जिनकुशलसूरि च० प्रतिष्ठितं महोपाध्याय श्री ज्ञान-समुद्राणां शिष्य महोपाध्याय ज्ञानराज महोपाध्याय श्रीलब्धो-दयवाचक रत्नसुन्दरयुक्त।

इसके अतिरिक्त सं० १७४८ की भी एक जोड़ी चरणपादुका प्रतिष्ठित विद्यमान है। टाइल्स लगा देने से लेख अब दब गए हैं, एक लेख का निम्नलिखित अंश पढ़ने में आता है :—

"शिष्य महोपाध्यायं श्री ज्ञानसमुद्राणां महो० श्री ज्ञान-राजानां शिष्य लालचन्द्रोपाध्यायैः।

गोरा बादल कथा के रचयिता नाहर जटमल

कवि जटमल नाहर की गोरा बादल कथा गद्य में होने की भ्रान्ति हिन्दी के विद्वानों में चिरकाल तक रही है। एसियाटिक सोसायटी-कलकत्ता की जिस प्रति के आधार से यह भ्रान्ति फैली थी, उस प्रतिका निरीक्षण कर भ्रान्ति का निराकरण स्वर्गीय पूरणचन्दजी नाहर व स्वामी नरोतमदास जी के प्रयत्न से 'विशाल भारत' पोष १९९० व नागरी प्रचारणी पत्रिका वर्ष १४ अंक ४ में प्रकाशित लेखों द्वारा हुआ। यह निश्चित हो गया कि वास्तव में जटमल ने गोरा बादल कथा पद्य में ही लिखी थी पर उन्नीसवीं शती में गद्य में लिखे गए अर्थ के कारण जटमल के गद्यकार होने की भ्रान्त परम्परा चल पड़ी। उसके बाद डा० टीकमसिंह तोमरने 'गोरा बादल कथा' की एक प्रति का पाठ गलत पढ़ कर जटमल की जाति जाट होने का उल्लेख शोध प्रबन्ध में किया जिसका निराकरण भी नागरी-प्रचारणी पत्रिका द्वारा किया गया।

हिन्दी के विद्वानों को जटमल की केवल 'गोरा बादल कथा' नामक एकही रचना की जानकारी थी। हमने जब बीकानेर के ज्ञानभंडारों का निरीक्षण किया व अपने ग्रन्था-लय के लिये हस्तलिखित प्रतियों का संग्रह प्रारम्भ किया तो जटमल की अन्य कई रचनाओं की प्राप्ति हुई। फलतः हमने हिन्दुस्तानी वर्ष ८ अं० २ में 'कवि जटमल नाहर और उनके

ग्रंथ' नामक लेख द्वारा जटमल की समस्त रचनाओं पर सर्व प्रथम प्रकाश डाला।

कवि जटमल नाहर ने अपना परिचय अपनी रचनाओं में इस प्रकार दिया है :—

(१) धरमसी कौ नन्द नाहर जाति जटमल नांउ।
तिण करी कथा वणाय के, बिचि सिंवला के गांउ॥
इति जटमल श्रावक कृता गोरा वादल की कथा संपूर्णा

(२) वसै अडोल 'जलालपुर', राजा थिरु 'सहिवाज';
रइयत सयल वस सुखी, जब लगि थिर ध्रू राज; ८३
तहाँ वसै 'जटमल लाहोरी', करने कथा सुमति मति दोरी;
'नाहर' वंस न कछु सो जानै, जो सरसती कहै सो आनै; ८४

इति प्रेमविलास प्रेमलताह्व सवरसलता नाम कथा नाहर गोत्र श्रावक जटमल कृता (सं० १७५३ लिखित प्रति)

इस से सिद्ध होता है कि कवि जटमल लाहोर निवासी जैन श्रावक थे और नाहर गोत्रीय थे। आपके रचित (१) गोरा वादल कथा की रचना सं० १६८० में सिंवला ग्राम में हुई है जिसे स्वामी नरोत्तमदासजी व सूर्यकरणजी पारीक द्वारा सम्पादित कापी से यहां साभार प्रकाशित किया जा रहा है। दूसरी कथा प्रेमविलास प्रेमलता की रचना सं० १६९३ भाद्रपद शुक्ला ४ रविवार को जलालपुर में हुई है। (३) वावनी—पंजावी भाषा के ५४ पद्यों में है, इसे 'पंजावी दुनिया' में गुरुमुखी में छपवा दिया है। (४) लाहोर गजल—इसमें लाहोर नगर का

महत्त्वपूर्ण वर्णन पद्य ६० में है। नगर वर्णनात्मक हिन्दी पद्य संग्रह में मुनि श्रीकान्तिसागरजी द्वारा यह प्रकाशित है। (५) स्त्री (सुन्दरी) गजल, (६) सिंगार गजल, (७) फुटकर कवितादि, हमारे संग्रह में है। उदयपुर में एक और रचना भी देखने में आई थी।

गोरा बादल कथा की प्रशस्ति में मोढ़ ग्राम का उल्लेख है। कविवर समयसुन्दर कृत मृगावती रास के एक गुटके की लेखन प्रशस्ति में मोढ़ ग्राम एवं जट्ट नाहर का उल्लेख मिलता है। अतः वह गुटका जटमल नाहर के लिखित प्रतीत होता है। प्रशस्ति इस प्रकार है :—

संवत् १६७५ वर्षे माघ सुदि ११ तिथौ शनिवारे। पतिस्याह नूरदी आदिल जहांगीर राज्ये लिखतं जट्ट नाहर नागउरी मोढ़ ग्रामे सा० कवरपाल सुतसा बाला देवी पासा तोड़ा रंगा गंगा पुस्तिका वापणा गोत्रे। लिखतं जट्ट पठनार्थं।

खुमाणरासो रचयिता दौलतविजय

खुमाणरासो के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य के विद्वानों में बड़ी भ्रान्ति रही है। खुमाण का नाम देखकर उनका काल ९वीं शताब्दी ही रासो का रचनाकाल मान लिया गया। इन में महाराणा प्रताप का भी वृतान्त है अतः यह धारणा बना ली गई कि इस में पीछे से परिवर्तन होता रहा है अतः

वर्त्तमान रूप १६वीं शताब्दी में प्राप्त हुआ मान लिया गया। माननीय शुक्लजी जैसे विद्वान ने भी अपने इतिहास में यही लिख दिया कि—'यह नहीं कहा जा सकता कि दलपतविजय असली खुमान रासो का रचयिता था अथवा उसके पिछले परिशिष्ट का।' वास्तव में हिन्दी के विद्वानों ने इसकी प्रति को देखा नहीं, अतः अन्य लोगों के उल्लेखों के आधार से विविध अनुमान लगाते रहे। लगभग २५ वर्ष पूर्व श्री अगरचन्द्र जी नाहटा ने वीर-गाथा-काल की बतलाई जानेवाली रचनाओं को परीक्षा की कसौटी पर रखा और जैनगूर्जर कविओ भाग १ से खुमाणरासो की १३६ पत्रों की अपूर्ण प्रति का पता लगा कर पूना के भंडारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट से प्रति को प्राप्त कर इसके तथ्यों पर सर्वप्रथम निश्चयात्मक प्रकाश डाला। 'नागरी प्रचारणी पत्रिका' वर्ष ४४ अङ्क ४ में प्रकाशित उनके लेख से वह निश्चित हो गया कि यह ग्रंथ १८वीं शताब्दी में ही रचित है कवि का नाम दलपतविजय नहीं पर उसका प्रसिद्ध नाम दलपत और जैन दीक्षा का नाम दौलतविजय था।

खुमाण रासो की अद्यावधि एक ही प्रति मिली है जो अपूर्ण है और उसमें महाराणा राजसिंह तक का विवरण है। टॉड के संग्रह तथा नागरी प्रचारिणी सभा में भी इसी प्रतिकी प्रतिलिपि है। कविने प्रस्तुत ग्रन्थ में अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है :—

त्रिपुरा शक्ति तणे सुपसाय, रच्यो खण्ड दूजो कविराय।
तपगच्छ गिरुआ गणधार, सुमतिसाधु वंशे सुखकार॥
पंडित पद्मविजय गुरुराय, पटोदयगिरि रवि कहेवाय।
जयबुध शांतिविजय नो शिष्य, जंपे दौलत मनह जगीश॥

अर्थात्—कवि त्रिपुरादेवी का भक्त था और तपागच्छ के सुमतिसाधुसूरि की परम्परा में पद्मविजय शिष्य जयविजय शि० शान्तिविजय का शिष्य था।

खुमाण रासो (अपूर्ण) में खुमाण से लेकर राजसिंह तक का ही विवरण मिलता है, पर इसके प्रथम खण्ड के अन्तिम दोहे में महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) तक का उल्लेख होने से इसकी रचना सं० १७६७ से सं० १७९० के बीच में हुई निश्चित है।

पिउ सांगउ अमरेस सुत, सीसोदो सुविहाण।
राण पाट प्रतपे रिधू, मन हेला महिराण॥

खुमाण रासो के छट्ठे खण्ड में रत्नसेन पद्मिनी और गोरा बादल का वृतान्त आया है अतः उसे इस ग्रंथ के [पृ० १५६ से १८१] में प्रकाशित किया गया है। यह अंश स्वामी नरोत्तमदासजी द्वारा प्राप्त श्री श्रोत्रिय के की हुई प्रेस कापी से लेकर दिया गया है अतः इसके लिए आदरणीय स्वामीजी और श्रोत्रियजी धन्यवादार्ह हैं।

इस ग्रंथ के पृ० १०६ में गोरा बादल कवित्त प्रकाशित किया गया है, जिसकी प्रति हमारे संग्रह में है। लब्धोदय कृत चौपई की प्रति हमारे संग्रह की है, जिसके पाठान्तर गुलाबकुमारी लाइब्रेरी, कलकत्ता स्थित बड़ौदा के गायकवाड़ ओरयण्टल-इन्स्टीट्यूट की नकल से दिये गये हैं। हमारे आदरणीय मित्र डा० दशरथ शर्मा ने अनेक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी भूमिका रूप में "रानी पद्मिनी—एक विवेचन" शीघ्र लिख भेजा था, पर ग्रंथ का कलेवर बढ़ जाने से उसमें और अभिवृद्धि करने के लिए उन्हें दिया गया था, जिसे उन्होंने यथासमय ठीक कर भेजा पर वह डाक की गड़बड़ी में गुम हो गया। तब उसे पुनः नये रूप में लिख कर भेजने का कष्ट किया है। पूज्य काकाजी श्री अगरचन्द्रजी नाहटा तो इसके श्रेय के वास्तविक अधिकारी हैं ही, अतः इन सभी आदरणीय विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करने के हेतु उपयुक्त शब्द मेरे पास नहीं है, वह तो हृदय की भाषा जाननेवाले सुधीजन स्वतः अवगाहन कर लेंगे। सुज्ञेषु किं बहुना,

कलकत्ता
पौष कृष्णा १०
पार्श्वनाथ जन्म दिवस

भँवरलाल नाहटा

पद्मिनी चौपाई का कथासार

भगवान ऋषभदेव, महावीर, शारदा और ज्ञानराज गुरु को नमस्कार कर कवि लब्धोदय सती पद्मिनी का चरित्र निर्माण करते हैं। इसमें वीर शृंगार प्रधान नवरसों का सरस वर्णन है। वीर गोरा, बादल की स्वामीभक्ति और शौर्य, सती के शीलव्रत के साथ क्षीर घृत और खांड के संयोग की भांति सुस्वादु हो जाता है। पहली ढाल में कवि ने चितौड़ का वर्णन किया है। वे कहते हैं—मेवाड़ का चितौड़ दुर्ग सब गढ़ों में प्रधान हैं यह गगनस्पर्शी कैलाश से टक्कर लेता है। यहां बहुत से तापस तीर्थ, चित्रा नदी, गोमुख कुण्डादि हैं, कूप, सरोवर, जिनालय, शिवालय, ऊंचे ऊंचे महल हैं, यह धाम धर्मियों और करोड़पतियों की लीलाभूमि है। चितौड़ में महाराणा रतनसेन नामक प्रतापी राजा राज्य करता था, जिसकी सेवा में दो लाख सुभट एवं कई राजा थे। पटरानी प्रभावती अत्यन्त सुन्दर और सब रानियों में सिरमौर थी, वह राजा की प्रिय-पात्र और प्रतापी कुमार वीरभाण की माता थी। रानी प्रति-दिन राजा को अपने हाथ से परोस कर प्रेमपूर्वक भोजन कराती थी। एकदिन रत्नजटित थाल में नाना व्यंजन युक्त स्वादिष्ट भोजन आरोगते हुए हास्य-विनोद में राजा ने कहा—

आजकल भोजन बिलकुल निरस और स्वादरहित होता है! तुम्हारी चतुराई कहां चली गई? रानी ने तमक कर कहा—मैं तो कुछ भी नहीं जानती, मेरे में चतुराई है ही कहां? स्वादिष्ट भोजन के लिए नवीन पद्मिनी व्याह कर ले आइये। रानी प्रभावती के वाक्य राणा के हृदय में तीर की तरह चुभ गए, वह भोजन त्याग कर उठ खड़ा हुआ और रानी का मान मर्दन करने के निमित्त पद्मिनी से पाणिग्रहण करने के हेतु दृढ़-प्रतिज्ञ हो गया।

राणा ने दो घोड़ों पर बहुत सा धनमाल लेकर खवास के साथ गुप्तरूप से चितौड़ से प्रस्थान किया। जब वे बहुतसी भूमि उल्लंघन कर गये तो सेवक के पूछने पर राणा ने अपनी यात्रा का उद्देश्य प्रगट किया, पर दोनों ही व्यक्ति पद्मिनी स्त्री का ठाम ठिकाना नहीं जानते थे। उन्होंने एक वृक्ष के नीचे विश्राम किया तो एक भूख-प्यास से व्याकुल पथिक आकर राणा के चरणों में उपस्थित हुआ। राणा ने उसे खान-पान और शीतोपचार से संतुष्ट किया और स्वस्थ होने पर पूछा कि तुमने कहीं पद्मिनी स्त्री का ठाम-ठिकाना देखा-सुना हो तो बताओ! पथिक ने कहा—राजन्! दक्षिण समुद्र के पार सिंघल-द्वीप में अप्सरा की भांति पद्मिनी स्त्रियाँ होती हैं! राणा ने दक्षिण का मार्ग पकड़ा और नाना जंगल पहाड़ों को उल्लंघन करता हुआ खवास के साथ समुद्र तट पर पहुंचा।

राणा को दुर्लंघ्य समुद्र को पार करने की चिन्ता में घूमते हुए सहसा औघड़नाथ योगी से साक्षात्कार हुआ। राणा ने उसे विनय-भक्ति से संतुष्ट कर पद्मिनी के हेतु सिंघलद्वीप पहुँचाने की प्रार्थना की। योगी ने अपने दोनों हाथों में दोनों सवारों को लेकर आकाशमार्ग द्वारा सिंहलद्वीप पहुँचा दिया और स्वयं अदृश्य हो गया। राणा प्रसन्नचित्त से भ्रमण करता हुआ सिंहलद्वीप की शोभा देखने लगा। जब वह नगर के मध्य भाग में पहुँचा तो उसने ढंढोरे का ढोल सुना और पूछने पर ज्ञात हुआ कि सिंहलपति की तरुण बहिन पद्मिनी उसी व्यक्ति को वरमाला पहनायगी, जो उसके भ्राता को शतरंज के खेल में जीत लेगा। राणा ने पटह-स्पर्श किया, वह पद्मिनी के समक्ष सिंहलपति के साथ शतरंज खेलने लगा, पद्मिनी भी राणा के सौन्दर्य से मुग्ध होकर मनही मन उसके विजय की प्रार्थना करने लगी। पुण्य प्राग्भार से राणा ने सिंहलपति को जीत लिया, पद्मिनी की वरमाला राणा के गले में सुशोभित हुई। सिंहलपति ने राणा के साथ पद्मिनी का पाणिग्रहण बड़े भारी समारोह से कराया और अपनी प्रतिज्ञानुसार राणा को आधा देश भंडार समर्पित किया। पद्मिनी को दहेज में हाथी, घोड़े, वस्त्रालङ्कार और दो हजार सुन्दर दासियां मिलीं। पद्मिनी तो अद्भुत रूपनिधान थी ही, उसके देह सौरभ से चतुर्दिक् भौंरे गुंजार कर रहे थे। कुछ दिन सिंहलद्वीप में रहने के पश्चात् सारे धनमाल और परिवार को जहाजों में भरकर

राणा स्वदेश के लिए रवाने हुआ। सिंहलपति से प्रेमपूर्वक विदा लेकर राणा स्वदेश लौटा।

इधर चित्तौड़ में राणा के एकाएक चले जाने से चिन्तित वीरभाण ने माता से सत्य वृतान्त ज्ञात किया और लोगों के समक्ष राणा के जाप में वैठने की प्रसिद्धि कर स्वयं राज काज चलाने लगा। लोगों को जब छः मास से भी अधिक वीत जाने पर राणा के दर्शन न हुए तो नाना प्रकार की आशं-काएँ उठ खड़ी हुई। इसी समय राणा रतनसेन दो हजार घोड़े, दो हजार हाथी एवं पालकियों के परिवार से परिवृत चित्तौड़ के निकट पहुँचा। पद्मिनी की स्वर्ण-कलशों वाली पालकी, मध्य में सुशोभित थी। दूर से विस्तृत सेना आती हुई देखकर परदल की आशंका से वीरभाण ने सैनिक तैयारी प्रारम्भ कर दी। इतने ही में राणा का पत्र लेकर एक दूत राजमहल में पहुँचा, सारा वृतान्त ज्ञात कर चित्तौड़ में सर्वत्र आनन्द छा गया और स्वागत के लिए जोर-शोर से तैयारियाँ होने लगी।

स्थान स्थान में मोतियों से वधाते हुए, ध्वजा पताका सुशोभित उल्लासपूर्ण वातावरण में महाराणा ने चित्तौड़ में प्रवेश किया। रानी प्रभावती को राणाने अपनी प्रतिज्ञापूर्ण कर दिखा दी। राणाने पद्मिनी के लिए विशाल एवं सुन्दर महल प्रस्तुत किया, जिसमें वह अपनी सखियों के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगी। महाराणा अहर्निश पद्मिनी के प्रेमपाश में बँधा हुआ

नाना क्रीड़ा, विलास में रत रहता था। एक वार 'राघव चेतन' नामक प्रकाण्ड विद्वान ब्राह्मण, जोकि महाराणा द्वारा सम्मानित होने के कारण वेरोकटोक महलों में जाया करता था, पद्मिनी के महलमें जा पहुँचा। महाराणा अपने क्रीड़ा-विलास के समय उसे आया देखकर कुपित हो गए और असमय में व अनाहूत आने की मूर्खता पर वहुत सी खरी-खोटी सुनाई। धक्का देकर निकाल दिये जाने पर अपमानित व्यास राघव चेतन शीघ्र ही चित्तौड़ त्यागकर दिल्ली चला गया। थोड़े दिनों में उसकी विद्वता की प्रसिद्धि शाही-दरवार तक पहुँच गई। सुलतान अलाउद्दीन ने उसे दरवार में वुलाया और प्रसन्न होकर पाँचसौ गाँव देकर अपना दरवारी वना लिया।

राघव चेतन ने राणा से प्रतिशोध लेने के लिए एक भाट और खोजे से घनिष्टता कर ली। राघवचेतन ने उन्हें किसी प्रकार पद्मिनी स्त्री की वात छेड़ने के लिए कहा, तो भाट राज-हंस की पाँख लेकर दरवार में आया और सुलतान के किसी अनोखी वस्तु की वात पूछने पर पद्मिनी स्त्री के सौन्दर्य्य व सुकुमारता की प्रशंसा की। सुलतान ने कहा कि तुमने कहीं पद्मिनी देखी सुनी हो तो कहो! भाट ने कहा—श्रीमान् के महल में हजार स्त्रियां हैं जिनमें कोई अवश्य होगी! खोजे ने कहा कि रावण की लंका में पद्मिनी स्त्री सुनी गई थी और तो कहीं भी संसार में नहीं है। यहाँ तो सब संखिनी स्त्रियाँ है। भाट-खोजे के विवाद में सुलतान ने रस लिया और पूछा

क्यों वे, हमारे महल में सभा संखिनी है ? पद्मिनी एक भी नहीं ? खोजे ने कहा—यह तो लक्षण, भेदादि के शास्त्र-मर्मज्ञ राघवचेतन ही बतला सकते हैं ! सुलतान के पूछने पर व्यास ने चारों प्रकार की स्त्रियों के गुण-लक्षणादि विस्तार से समझाये। सुलतान ने अपने महल की स्त्रियों की परीक्षा कर पद्मिनी जाति की स्त्री बताने की आज्ञा दी और उनका प्रतिबिंब देखने के लिए मणिगृह का आयोजन किया। राघव-चेतनने सबको देखकर कहा कि आपके महल में एक एक से बढ़कर रूपवती हस्तिनी, चित्रणी तो हैं, पर पद्मिनी स्त्री एक भी नहीं है।

सुलतान ने कहा—बिना पद्मिनी स्त्री के मेरा जीवन ही वृथा है, पद्मिनी स्त्री कहाँ मिलेगी ? व्यास ! मुझे बतलाओ ! राघव चेतन ने कहा—सिंघलद्वीप में पद्मिनी स्त्रियाँ होती हैं। तो सुलतानने १६ हजार हाथी और २७ लाख अश्वारोही सेना के साथ सिंहलद्वीप की ओर प्रस्थान कर दिया। समुद्र-तट पर पहुँचने पर हठी सुलतान ने सिंहलपति पर आक्रमण करके गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। सुभट लोग नौकाओं में बैठ कर दरिया के बीच गए तो भँवरजाल में पड़कर वाहण टूट-फूट गए। सुलतान ने कुपित होकर और सुभटों को भेजने की आज्ञा दी। उसे केवल एक ही धुन थी कि लाखों सेना भले ही समुद्र में समाप्त हो जाय, पर सिंहलपति को अवश्य हराकर पद्मिनी प्राप्त की जाय ! सुभटों ने राघव चेतन से कहा—

किसी प्रकार सुलतान को लौटाने की युक्ति सोचो, अन्यथा बेकार लाखों की प्राणाहुति हो जायगी। राघव चेतन की सलाह से ५०० हाथी ५००० घोड़े, करोड़ दीनार एवं नाना प्रकार की भेंट वस्तुएँ प्रस्तुत कर अज्ञात व्यक्तियों द्वारा वाहनों में भरकर प्रातःकाल होने से पूर्व ही समुद्र में उपस्थित कर दिये और उन्हें सिंहलपति के प्रधान लोग दण्ड स्वरूप लाये हैं, बतला कर विनय वचनों से सुलतान को समझाकर सुलह करा दी। सुलतान ने सिंहलपति की कथित भेंट स्वीकार कर उनके प्रतिनिधियों को सिरोपाव देकर लौटा दिया और सिंहल से आई हुई भेंट को अपनी सेना में बाँट कर दिल्ली की ओर लौटने का आदेश दे दिया।

जब सुलतान दिल्ली आये, तो बड़ी बेगम ने कहा—आप कैसी पद्मिनी लाए हैं, हमें भी दिखाइये! सुलतान के मन में फिर पद्मिनी प्राप्त करने की तमन्ना जग उठी और राघवचेतन से कहा—सिंघलद्वीप के सिवा और कहीं पद्मिनी स्त्री हो तो बतलाओ! राघव चेतन ने कहा—चित्तौड़ के राणा रत्नसेन के यहाँ पद्मिनी अवश्य है, पर शेषनाग की मणि को कौन ग्रहण कर सकता है? सुलतान ने अभिमान पूर्वक बड़ी भारी सेना तय्यार कर चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। राणा की सेना ने सुलतान के साथ बड़ी वीरता से युद्ध किया और उसके सारे प्रयत्न विफल कर दिये। सुलतान ने सफलता पाने के लिए पुन छल करने का निश्चय करके अपने प्रधान पुरुषों को सुलह करने

के लिए राणा के पास भेजा। उन्होंने राणा से कहा—सुलतान चाहते हैं कि अपने परस्पर प्रीति की वृद्धि हो। अतः वे गढ़ देखकर, पद्मिनी के दर्शन व उसके हाथ से भोजन कर बिना किसी प्रकार के दण्ड, भेंट लिए वापस दिल्ली लौट जायेंगे। राणा रतनसेन कपटी सुलतान की मीठी बातों के चक्कर में आ गया और सुलतान के अधिकारियों के सुंस-प्रतिज्ञा पूर्वक कहने पर उसने थोड़े लश्कर के साथ चित्तौड़ दिखा कर गोठ जिमाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

सुलतान अलाउद्दीन के पास व्यास राघव चेतन राणा के घर का पूरा भेदू था। उसकी मंत्रणा के अनुसार ही वह अपना कपट-चक्र संचालन करता था। सरल स्वभावी राणाने मंत्रियों को स्वागत के लिए भेजकर सुलतान को बुलाया। गढ़ के द्वारा खोल दिये गए। सुलतान तीस हजार सैनिकों के साथ गढ़ में प्रविष्ट हो गया। इतने सैनिक देख राणा के मन में खटका हुआ और उसने अपनी सेना को तैयार होने का संकेत कर दिया। सुलतान के यह कहने पर कि क्यों सेना एकत्र करते हो, हम गढ़ देखकर लौट जावेंगे, तो राणा ने कहा—अपने वचनों के विपरीत आप तीस हजार सवार क्यों लाये? मेरी सेना के वीर इन्हें क्षण मात्र में पीस डालेंगे। सुलतान ने छलपूर्वक कहा—राणा! आप संदेह क्यों करते हो! मेहमान थोड़े हों या अधिक, आ जावें उनका तो सत्कार करना ही चाहिए। आज तो खाद्यपदार्थ सस्ते हैं, सुकाल है, यदि भोजन-

न्यय का विचार आता हो तो हम लौट चलें ! राणा ने कहा—भोजन के लिए ऐसी क्या बात है, तुच्छ बात न कहो, इससे दुगुने हों तो भी खान पान की कमी नहीं ! इस प्रकार दोनों मेल-जोल से बातें करते महलों में आये। राणा ने शाही भोजन के लिए बड़ी भारी तय्यारी की। राणा ने जब पद्मिनी को आज्ञा दी कि वह सुलतान को परोसे ! तो उसने अपने जैसी ही रूप रंगवाली दासी को इस कार्य के लिए नियुक्त कर दिया। राणा के सजे हुए मंडप में सुलतान को पद्मिनी की दासी ने नाना वेश परिवर्त्तन कर विविध व्यंजन परोसे। सुलतान उसकी रूप-माधुरी से विह्वल होकर कहने लगा—राणा के घर में तो इतनी पद्मिनियां है, और मेरे यहां एक भी नहीं तब मेरी बादशाही में क्या रखा है ! राघव चेतन ने कहा—यह तो पद्मिनी की दासी है ! पद्मिनी तो ऊंचे महलों के मध्य भाग में रहती है, उसके तो दर्शन ही दुर्लभ है ! इतने ही में पद्मिनी ने सहज भाव से शाही भोजन-समारोह को देखने के लिए रत्नजड़ित गवाक्ष की जाली में से झांका। राघव चेतन ने संकेत से पद्मिनी को दिखाया और रूप लुब्ध सुलतान को विह्वल और मूर्छित होते देख, उसे किसी युक्ति से प्राप्त करने की आशा देकर आश्वस्त किया।

भोजनान्तर राणा ने सुलतान को हाथी, घोड़े, वस्त्राभरण भेंट कर परस्पर हाथ मिलाये हुए चित्तौड़ दुर्ग में घूम घूम कर सारे विषम घाट-स्थान दिखलाए। सुलतान ने राणा से बा-

जाये भाई के सदृश प्रेम प्रदर्शित करते हुए विदा मांगी और हाथ पकड़े पकड़े प्रेमालाप पूर्वक पहुँचाने के बहाने वह उसे गढ के बाहर तक ले आया और राघव चेतन की सलाह से सुभटों द्वारा राणा को कब्जे कर गिरफ्तार कर लिया। राणा के साथ में जो थोड़े बहुत सुभट थे वे हक्के बक्के और किंकर्त्तव्य विमूढ हो गए। राणा के हाथ पैर में बेड़ी डाल दी गई। गढ में यह खबर पहुँचने पर सुभटों के बीच बैठकर वीरभाण अपना कर्त्तव्य स्थिर करने के लिए विचार विमंश करने लगा। इतने ही में दो शाही दूत आये और उन्होंने यह शाही सन्देश सुनाया कि—सुलतान पद्मिनी को प्राप्त करके ही राणा को मुक्त कर सकता है, उसे और किसी वस्तु की वांछा नहीं हैं! यदि आप लोग पद्मिनी को नहीं दोगे, तो शाही सेना द्वारा दुर्ग को चूर कर राज्य छीन लिया जायगा। वीरभाण ने सोच-विचार कर प्रातः काल उत्तर देने का कह कर दूतों को विदा किया।

वीरभाण ने सुभटों से नाना विचार विमर्श कर निश्चय किया कि पद्मिनी को देकर राणा को छुड़ा लेना ही श्रेयस्कर है! निर्नायक सुभट निरुपाय होकर सत्वहीन हो गए। वीरभाण के हृदय में अपनी माता के सौभाग्य उतारने में कारणभूत पद्मिनी के प्रति सद्भाव की न्यूनता थी ही। अतः पद्मिनी के लिए अपना रास्ता स्वयं निर्धारित करने के सिवा और कोई चारा नहीं रहा। वह अपनी शीलरक्षा के लिए प्राणों

की आहूति देने के लिए प्रस्तुत थी ही, पर किसी युक्ति से राणा भी मुक्त हो जांय और उसे भी तुर्कों के कब्जे में न जाना पड़े, ऐसा उपाय सोचने लगी।

पद्मिनी ने सुना था कि गोरा बादल नामक वीर काका-भतीजा किसी बात पर राणा से नाराज होकर घर जा बैठे हैं और उन्होंने ग्रास-गोठ को भी त्याग दिया है। वे चित्तौड़ त्याग कर काम-काज के लिए अन्यत्र जाने को प्रस्तुत हो रहे थे, उसी समय अचानक शाही आक्रमण हो गया; अतः उन्होंने चित्तौड़ छोड़ना स्थगित कर दिया है। अपने गाँठ का खर्च खाकर वे घर पर बैठे हुए हैं, (खेद है) ऐसे आत्माभिमानी वीरों को कोई नहीं पूछता। अतः उपस्थित समस्या का न्यायपूर्वक हल भी कैसे हो ? पद्मिनी उनके शौर्य्य की प्रसिद्धि से प्रभावित हो चकडोल पर बैठकर स्वयं वीर गोरा के घर गई। गोरा ने उसका स्वागत करते हुए कहा—माताजी ! आज मेरे घर पधार कर आपने बड़ी कृपा की, घर बैठे गंगा प्रवाह आने से मैं पवित्र हो गया, मेरे योग्य जो काम सेवा हो उसे फरमाइये ! पद्मिनी ने दुःख भरे शब्दों में कहा—क्या करूं ? ऐसे विकट समय में सुभटों ने क्षत्रवट खो कर मुझे तुर्कों के यहां भेजना स्वीकार कर लिया है, अब मुझे एकमात्र आपका ही भरोसा है, मैं इसी हेतु आपके पास आई हूं ! गोरा ने कहा—माताजी ! हमें कौन पूछता है ? हम तो अपनी गांठ का खर्च खाकर घर में बैठे हैं, पर आपने हमारे घर को चरण-धूलि से पवित्र कर

दिया तो अव किसी प्रकार का भय न लाकर निश्चिन्त रहें! आप जैसी रानी को देकर राजा को छुड़ाने का घटिया दाव खेलने से तो मर जाना ही श्रेयष्कर है! रानी ने कहा—इस तुच्छ बुद्धि के धनी तो राजा की तरह गढ को भी खो बैठेंगे! अतः इसीलिए मैं तुम्हारे शरण में आई हूँ। गोरा ने कहा— (तो ठीक है) मेरा भाई गाजण बड़ा भारी शूर वीर था, उसके पुत्र वादल से भी चल कर सलाह कर ली जाय!

गोरा और पद्मिनी, वादल के यहां गए। उसने सविनय जुहार करते हुए आने का कारण पूछा। गोरा ने सारा वृतान्त बताते हुए कहा कि—अपन दो व्यक्ति किस प्रकार शाही सेना को शिकस्त दें। पद्मिनी ने कहा भैया! मैं तुम्हारे शरणागत हूँ, यदि बचा सको तो बोलो, अन्यथा एक बार मरना तो है ही, मैं हर हालत में अपनी शील रक्षा तो करूंगी ही। पद्मिनी की प्रेरणा दायक बातें सुनकर वादल ने तत्काल राणा को छुड़ा लाने की प्रतिज्ञा की। पद्मिनी कृत-कार्य होकर अपने महल लौटी। वादल की माता और स्त्री ने उसे इस दुस्साहसपूर्ण प्रतिज्ञा से विचलित करने के लिये नाना मोह जाल फैलाया पर उस दृढ़-प्रतिज्ञ वादल को विचलित करना तो दूर, उलटे वीरोचित प्रेरणा उत्साह दिला कर अपने हाथों हथियार बँधा कर विदा करना पड़ा। वह काका गोरा के पास अश्वारूढ़ होकर कार्यक्षेत्र में उतरने की आज्ञा माँगने के लिए गया। जब गोरा ने उसे अकेले न जाने का कहा तो वादल ने उसे

यह कहकर आश्वस्त किया कि युद्ध में अपने दोनों साथ चलेंगे, अभी तो मैं केवल थाह-भाप देखकर आता हूं।

बादल तत्काल मेवाड़ी सुभटों की सभा में पहुंचा। उसे अचानक आये देखकर सब लोगों ने खड़े होकर सम्मान प्रदर्शित किया। वीरभाण कुमार आदि से खूब विचार-विमर्श करने के अनन्तर वह अकेला अश्वारूढ़ होकर शाही सेना की खबर लेने के लिए चल पड़ा। सुलतान ने जब अकेले बादल को आते देखा तो चमत्कृत होकर सम्मानपूर्वक उसे अपने पास बुलाया। बादल ने कहा मैं पद्मिनी का भेजा हुआ आया हूँ। अपना पूरा परिचय देते हुए उसने कहा—पद्मिनी ने जब से आपको देखा है, आपसे मिलने के लिए तड़प रही है, वह उस घड़ी की प्रतीक्षा में है, जब आप से उनका मिलना होगा। यह लीजिये उसने मुझे आपको देने के लिए चिट्ठी भी दी है, जिसमें अपनी आंतरिक अवस्था और विरह गाथा सविस्तार प्रदर्शित की है। आपका संदेश जब पद्मिनी को आपके पास भेजने के लिये गढ़ में पहुंचा तो सुभटों ने तो मरने मारने की तैयारी कर ली; पर मैं किसी प्रकार कुंवर वीरभाण व सुभटों को समझा-बुझाकर आया हूँ और आशा करता हूं कि आपका व पद्मिनी का मनोरथ पूर्ण करने में मुझे अवश्य सफलता मिलेगी।

बादल के प्रस्तुत किये नकली प्रेमपत्र को पढ़कर सुलतान पानी-पानी हो गया। उसके हृदय पर इसका सीधा असर हुआ

और वह बादल की बात को सर्वथा सत्य मानकर गारूड़ी मन्त्र-प्रभावित सांप की भांति पूर्णतया उसके अधीन हो गया। सुलतान ने कहा—मेरी लाज तुम्हारे हाथ है, बादल! जिस किसी प्रकार से सुभटों को समझा-बुझाकर पद्मिनी को मेरे पास भेजने में उन्हें सहमत कर लो! सुलतान ने बादल को सिरोपाव सहित लाख स्वर्णमुद्राएं देते हुए कहा कि काम बन जाने पर तुम देखना, मैं तुम्हारी कितनी इज्जत बढ़ाऊंगा! सुलतान ने पद्मिनी को प्रेम-पत्र भेजना चाहा तो बादल ने कहा—पत्र किसी अन्य व्यक्ति के हाथ लग जाने से ठीक नहीं। अतः मैं आपके सारे समाचार मौखिक ही सुनाऊंगा! इस प्रकार बादल ने मीठे वचनों से सुलतान को प्रसन्न कर विदा ली, सुलतान उसे पोलि द्वार तक पहुंचाने आया। बादल जब प्रचुर धन राशि लेकर घर लौटा तो माता व स्त्री को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। गोराजी ने कहा—बादल अवश्य ही अपने काम में सफल होगा। पद्मिनी को भी अपने पति-मिलन का विश्वास हो गया। सब लोग उसके बुद्धिचातुर्य्य से हर्ष विभोर हो गए।

बादल ने राज-सभा में जाकर गुप्त मन्त्रणा की और तय किया कि दो हजार सुन्दर चकडोल जरी के वस्त्र और स्वर्ण-कलश मंडित तैयार हों, और प्रत्येक में दो दो शस्त्रधारी सुभट सन्नद्ध बद्ध रहें। बीच की प्रधान पालकी में गोराजी को बिठाकर पद्मिनी के रूप में उनका परिचय दिया जाय। उसे वस्त्रों

से इस प्रकार वेष्टित किया जाय कि मानों पद्मिनी के सौरभ से आकृष्ट भ्रमर-गुंजार से बचने के लिए ही ऐसा किया गया हो ! सुभटों वाली पालकियों में पद्मिनी की सखियाँ हैं ऐसा प्रचारित किया जाय। गढ़ से लेकर सेना पर्य्यंन्त इस प्रकार पालकियाँ आयोजित हों कि उनकी कड़ी सी जुड़ जाय। इस सारे काम को सम्पन्न करने में कुछ विलम्ब करना इधर मैं सुलतान के पास जाकर पहले राणाजी को छुड़ा लूं उसके बाद घात किया जायगा ! इस प्रकार बादल अपनी सारी योजना समझा कर सुलतान के पास गया। सुलतान हर्षपूर्वक उनसे मिला और पूछने लगा कि काम बनाया कि नहीं ? बादल ने कहा—किसी प्रकार समझा-बुझाकर पद्मिनी को सखियों के परिवार सहित लाया हूँ, सारी पालकियाँ गढ़ से उतर कर आ ही रही हैं ! पर सब लोग इस बात से शंकित हैं कहीं राणा भी न छूटे और रानी भी चली जाय। अतः उनके आश्वस्त होने के लिए आपकी सेना का यहां से प्रयाण हो जाना आवश्यक है ! यदि आपको भय हो तो पांच हजार सेना अपने पास रख सकते हैं ! पद्मिनी से मिलनोत्सुक सुलतान ने कहा—मैं भला किससे डरूं ? जगत मेरे से भय खाता है। तुमने भी बादल, चतुर होते हुए यह खूब कही ! उसने तुरंत चार हजार सुभटों को छोड़कर बाकी समस्त सेना को तुरन्त कूच करने की आज्ञा दे दी।

सुलतान ने पुनः बादल को सिरोपाव पूर्वक लाख स्वर्ण

मुद्राएँ दीं। वह सारा धन घर में रख आया और सुभटों को सारे संकेत समझाकर सुखपाल के आगे आगे स्वयं चलने लगा। बादल को देखकर सुलतान ने उसे अपने पास बुलाया। संयोग की बात थी कि राघवचेतन बड़ा भारी बुद्धिमान था, पर स्वामिद्रोह के पाप के कारण उसकी बुद्धि पर पत्थर पड़ गये, अस्तु। बादल ने निवेदन किया—पद्मिनी ने संदेश भेजा है कि आपकी सब रानियों में मुझे पटरानी स्थापित करना होगा। सुलतान के सहर्ष स्वीकार करने पर वह बार-बार स्वर्णकलश वाली तथा कथित पद्मिनी के पालकी और सुलतान के बीच संदेश लाने के बहाने फिरने लगा। उसने कहा—पद्मिनी ने कहलाया है कि हमें आते-आते बहुत देर हो गई, अब कृपाकर राणाजी से एक बार अंतिम मिलन का अवसर दें, क्योंकि लोक व्यवहार में मैं उनके साथ ब्याही गई थी, तो दो बात कर, उनसे अन्तिम विदा तो ले आऊँ! सुलतान को पद्मिनी का यह शिष्टाचार योग्य लगा और उसने तत्काल राणा रतनसेन को बन्धन मुक्त-कर देने का आदेश दे दिया। जब यह शाही आज्ञा लेकर बादल राणा के पास गया तो राणा ने कुपित होकर बादल से कहा—धिक्कार हो बादल! तुमने क्षत्रियत्व को लजाने वाला यह क्या सौदा किया? स्वामीद्रोह करने के साथसाथ तुमने सदा के लिये मेरे कुल में भी कलंक लगा दिया! बादल ने कहा—चिन्ता न करें, यह खेल दूसरा है, आपके भाग्य से सब अच्छा ही होगा।

इन वचनों से राणा मन ही मन सब कुछ समझ गया। सुलतान ने उसे पद्मिनी को जल्दी विदा देने की आज्ञा दी। राणा पालकियों के बीच में से बादल के संकेतानुसार तीर की तरह निकलता हुआ तुरन्त गढ़ में जा पहुँचा। उसके सकुशल पहुँचने के उपलक्ष में संकेतानुसार जंगी नगारे निसाण बजा दिये गये। चित्तौड़ गढ़ में राणा के पहुँचने से सर्वत्र हर्ष उल्लास छा गया।

जब गढ़ में नौबत बजते हुए सुने तो गोरा बादल ने समस्त सन्नद्धबद्ध सुभटों के साथ शाही सेना में मार काट मचा दी। विस्तृत शाही सेना तो पहले ही कूच कर कोसों दूर पहुँच चुकी थी। अतः जो चार हजार सुभट सुलतान के पास थे, गोरा और बादल ने घमासान युद्ध करके उनका सफाया कर डाला। अन्त में गोरा ने जब सुलतान पर आक्रमण किया तो वह भागने लगा। यह देख बादल ने कहा—काकाजी इस कायर निर्बल को छोड़ दो। भगते पर वार करना क्षात्र धर्म के विपरीत है। किले पर खड़े राणा आदि सभी लोग गोरा के वीरत्व की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे।

इस युद्ध में गोराजी काम आये, बादल ने सुलतान को जीवित छोड़ कर शाही लश्कर को लूट लिया। दो दिन के बाद सुलतान एक खवास के साथ मारा मारा फिरता नमाज के समय लश्कर के निकट पहुंचा। खवास के खबर करने पर अमीर उमराव आकर सुलतान से मिले। उसे सूना रवाना

और वेहाल देखकर उन लोगों ने पूछा कि अपना कटक और पद्मिनी आदि सब कहाँ रह गये ? सुलतान ने कहा—बादल ने हमारे से धोखा किया, पद्मिनी के भरोसे आई हुई पालकियों में से सुभट कूद पड़े और हमारे लश्कर को समाप्त कर डाला। मैं तो रहमान की कृपा से बड़ी मुश्किल से बच पाया हूँ। मैं वस्तुतः पद्मिनी के मोहजाल में भ्रान्त हो गया था, अन्यथा हिन्दू लोगों की मेरे सामने क्या बिसात थी। इसके बाद सुलतान अपने लश्कर के साथ दिल्ली चला गया। जब बेगमों ने सुलतान से पद्मिनी दिखाने की प्रार्थना की तो उसने कहा—पद्मिनी का मुँह काला किया, खुदा की दुआ से खैरियत हुई। सुलतान की बेगमें खमा! खमा! करने लगी, माता ने कहा—स्त्री के कारण रावण जैसों का राज गया, अब तो खुदा का ध्यान करते हुए आनन्द से राज करो।

सुलतान के भगने पर रणक्षेत्र शोधकर बादल चित्तौड़ दुर्ग में प्रविष्ट हुआ राणा ने उसे हाथी पर बैठाकर छत्र ढुलाते हुए गढ़ में लाकर नाना प्रकार से सन्मानित किया। पद्मिनी ने आशीर्वाद की झड़ियाँ लगा दी। उसे तिलक करके मोतियों से वधाते हुए पद्मिनी ने उसे अपना भाई करके माना। क्या घरों में और क्या बाजार में सर्वत्र बादल के यशोगान किये जा रहे थे। माता ने बादल को चिरंजीवी होने का आशीर्वाद दिया और स्त्रियों ने धवल मंगलपूर्वक हर्ष व्यक्त किया। काकी ने पूछा! तुम्हारे काका ने किस प्रकार शत्रुओं से लोहा

लिया? बादल ने कहा—माता! काकाजी की वीरता का कहाँ तक वर्णन करूँ। उन्होंने तो शत्रुसेना का इतना सफाया किया कि मात्र सुलतान अकेला किसी प्रकार बच पाया। काकाजी का शरीर इस महायुद्ध में तिल तिल-सा छिद्रित हो गया और वे स्वर्गपुरी के मेहमान हो गये। उन्होंने गढ़ की लज्जा रखी और अपने वंशको उज्वल किया।

पति की वीरता का बखान सुनकर गोरा की स्त्री के रोम-रोम में वीरत्व छा गया और वह पतिपरायणा सतवंती सत में अभिभूत होकर बादल से कहने लगी—बेटा! ठाकुर स्वर्ग में अकेले हैं और विलम्ब होने से अन्तर पड़ता जा रहा है। अतः अब काकी को शीघ्र ही ठिकाने लगाओ। बादल ने काकी के सत्त की प्रशंसा की। वह सुसज्जित होकर अश्वारूढ़ हुई और राम-राम उच्चारण करते हुए (गोरा के शव के साथ) अग्नि-प्रवेश कर गई।

बादल ने अपने बुद्धिबल, स्वामिभक्ति और शौर्य्य के बल पर राणा को छुड़ाया, दिल्लीपति को जीता और पद्मिनी की रक्षा की। उसका यश नवखण्ड में फैला। इस तरह पद्मिनी के शील-प्रभाव और बादल के सानिध्य से रत्नसेन राणा निर्भय राज्य करने लगे।

इसके बाद कवि लब्धोदय पद्मिनी चरित्र को सुखान्त समाप्त करता है और प्रशस्ति में अपनी गुरु परम्परा, वर्तमान आचार्य तथा राणा जगतसिंह की माता जंबूवती के प्रधान

कटारिया मंत्री भागचंद—जो इस रचना के प्रेरक थे—के वंश का परिचय देता है। अलाउद्दीन के पुनराक्रमण और पद्मिनी के जौहर की घटनाओं के सम्बन्ध में लब्धोदय तथा दूसरे सभी कवि मौन हैं।

मलिक मुहमद जायसी के 'पद्मावत' में लिखा है कि राणा को सुलतान अलाउद्दीन गिरफ्तार कर दिल्ली ले गया था पर जटमल प्रतिदिन गढ़ के नीचे राणा को लाकर उसके कोड़े मरवाने का उल्लेख करता है। तथा लब्धोदय आदि ने भी स्पष्ट लिखा है कि राणा को शाही शिविर में कैद किया गया था, और छुड़ा कर लाने की सारी घटनाएँ और संकेत इसी बात को पुष्ट करते हैं। नाभिनंदनोद्धार प्रबन्ध (रचना सं० १३७३) में श्री कक्कसूरि चित्रकूटपति को पकड़ कर गले में रस्सी बाँध कर नगर नगर में घुमाने का उल्लेख करते हैं जो चित्रकूट से अन्यत्र गमन के पक्ष में हैं। संभव है यह घटना पुनराक्रमण से सम्बन्धित हो। ऐतिहासिक तथ्यों को शोध कर प्रकाश में लाना विद्वानों का काम है।

पद्मिनी चरित्र चौपई

पद्मिनी महल, चित्तौड़

(फ़ोटो—आर्कियोलॉजिकल सर्वे विभाग-राजस्थान)

कवि लब्धोदय कृत

पद्मिनी चरित्र चौपई

प्रथम खण्ड

मंगलाचरण

दोहा

श्री आदीसर प्रथम जिन, जगपति ज्योति सरूप ।
निरभय[1] पद वासी नमुं, अकल अनंत अनूप ॥ १ ॥
चरण कमल चितस्युं नमुं, चउवीसम जिणचंद ।
सुखदायक सेवक भणीं, साचो सुरतरु कंद ॥ २ ॥
सुप्रसन सामणि सारदा, होयो[2] मात हजूर ।
बुद्धि दियो मुझ नै बहुत, प्रगट वचन पडूर ॥ ३ ॥
ज्ञाता दाता दान[3] धन, 'ज्ञानराज' गुरुराज ।
तास प्रसाद थकी कहुं, सती चरित सिरताज ॥ ४ ॥

कथा-प्रसङ्ग

गोरा बादल अति सगुण[4] सूर वीर सिरदार ।
चित्रकूट कीधो चरित, स्वामीधर्म साधार ॥ ५ ॥
सरस कथा नवरस सहित, वीर शृंगार विशेष ।
कहस्युं कवित कल्लोल स्युं, पूरव कथा संपेख ॥ ६ ॥
पदमणी पाल्यो शीलव्रत, बादल गोरा वीर ।
शील वीर गावत सदा, खांड मिली घृत खीर ॥ ७ ॥

१—निरभय २ हुज्यो ३ ज्ञानधर ४ गुणी

ढाल १—चउपई नी, राग रामगिरी

चित्तौड़-वर्णन

देश वड़ो 'मेवाड़' दयाल, प्रारथियां दुखियां प्रतिपाल।
'चित्रकूट' तिहां चावो अछे, पहोवी गढ़ वीजा तसु पछै ॥१॥
गावै मीठे सुर गंधर्व, सुरनर किन्नर देखे सर्व।
तापस तीर्थ तिहां अति कह्या, राम जिहां वनवासै रह्या ॥२॥
ऊंचो गढ लागो आकास, हर भूल्यो जाण्यो कविलास।
हर राणी तव कीधो हास, हिम[1] गढ चढ़ीयो[2] हेमाचल पास ॥३॥
वले[3] अति वांको छै गढ घणो, ऊंची पोलि अनैं सोहामणो।
कोसीसा जे ऊंचा कीया, गयण आलंवन थांभा दिया ॥४॥
वहैं नदी सीप्रा[4] विस्तार, कूप सरोवर[5] वावि अपार।
गौमुखकुंड प्रमुख वहुकुंड, पाणी जास पीइं पट खंड ॥५॥
संचा वस्त अनेको तणा, का न रहइ मननी कामिणा।
ऊंचा तोरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक ॥६॥
सोवन दण्ड धजा करि सोहता, मनड़उ भविक तणा मोहता।
दीपै तिहां जिन शिव देहरा, मोटा सिहर सरद मेहरा ॥७॥
वारू चउरासी वाजार, हुँसी वैठा हारो हार।
राज महल अति रलीयामणा, पुण्य विना ते नहिं पावणा ॥८॥
च्यारे वर्ण वसइ अति चंग, पवन अढारें मन नें रंग।
माणिकचउक न लहैं माग, वन वाड़ी फल फूल्या वाग ॥९॥

---

१ इम २ रच्यों ३ वलय तीन ४ चित्रा ५ कूवा सरवर

इन्द्रपुरी जाणे अवतरी, कोडीधज लोके करि भरी।
नगर वर्णनो नावे पार, देव रचई[1] ए गढ सार ॥१०॥
चतुर सुणयो देइ नइ चित्त, गुरु मुख ढाल अरथ सुपवित्त।
'लब्धोदय' कहै पहली ढाल, आगइ सुणता अछै रसाल ॥११॥
[सर्व गाथा १८]

राजा वर्णन

दोहा

सूर वीर अति साहसी, सब राई मइ सिरमौर।
'रतनसेन' राणो तिहां, जा सम भूप न और ॥ १ ॥
जाकइ तेज प्रताप थइं, दुरजन[2] भागे सब दूर।
अंधकार कैसे रहइ, उदइ होइ जीहां सूर ॥ २ ॥
अविचल आज्ञा अवनि परि, न्याय निपुण निरभीक।
अरिगज भंजन केसरी, राखे खत्रीवट लीक ॥ ३ ॥
मानी मरदाना बली, दरबारइं दोय लाख।
सुभट खड़ा सेवा करइं, सुरपति पदइ ज्युं साख ॥ ४ ॥
हय गय रथ पायक हसम, करि न सकै कोइ मान।
रयण दयुस ठाढइ रहे, सनमुख सब राय राण ॥ ५ ॥

पटराज्ञी वर्णन

पटराणी 'परभावती', रूपे रम्भ समान।
देखत सुरनर किन्नरी, अइसी नारि न आन ॥ ६ ॥

1 नीमोयो 2 अरिजन गये छ दूर

चंदवदन गजराज गति, पनग वेणि मृग नयण ।
कटि लचकनी कुच भार तइं, रति अपछर हइ अयन ॥७॥

ढाल २ योगिना रा गीतनी राग-मल्हार

राणी अवर राजा तणें जी, रूप निधान अनेक ।
पिण मनड़ो परभावती जी, रंज्यो करीय विवेक । राजेसर ॥१॥
चतुराई चित दीध, राजेसर, मन मोती गुण वींध ॥रा० च०॥

सतर भक्ष भोजन सर्भे जी, नित-नित नवली[1] भांति । रा०
व्यंजन रूड़ी विध करइजी, खातां उपजें खांति । रा० ॥२॥ च०॥

रूपवंत नइ रागणी जी, गुणवंती गज गेलि ।रा०।
मन राजा रो मोहीयो जी, सोक्यां सहुइ ठेलि । रा० ॥३॥च०॥

भोजन तो परभावती जी, हाथ परुसइ हूँस ।रा०।
वीजी राणी वारणें जी, सहजें जाबा सुंस ।रा० ॥ ४ ॥ च० ॥

मांहो मांही मोहस्युं जी, रति सुख माणइ राय । स० ।
खिण एक विरह नवी खमइ जी, दीठां दोलति थाय ।रा०॥५॥च०॥

पालइ राम तणी परइ जी, न्यायइं राज नरेस । रा०
आप भुजा अरीअण हण्या जी, सरद कीया सहुदेस ॥६॥च०॥

राजकुमार वर्णन

जनम्यो पुत्र महाजसी जी, प्रतापी पुण्यवंत । रा०
'वीरभाण' वखते वड़ो जी, दिन दिन अधिक दीपंत॥७॥च०॥

1 नव नव

भोजन प्रसंग

एकण दिन भोजन समइं जी, दासी बोलै राज। रा०
पीउ पधारो भोजन समइं जी, ठाढो होवै नाज ॥रा०॥८॥च०॥
सिंहासन सोवन तणो जी, आवै बैठा राज। रा०।
रतन जड़ित थाली वड़ी जी, कनक कचोला साज[1] रा०॥९॥च०॥
रुड़ी परइं परूसइं रसवती जी, राजा जीमइ राग। रा०।
खाटा मीठा चरपरा जी, सखर वणाया साग। रा०॥१०॥च०॥
कदली दल हाथैं करी जी, ढोलै सीतल वाय। रा०॥
विचि विचि मीठी वातड़ी जी, जीमतां घणां जीमाय॥११॥च०॥
मोसा दोसा मसकरी जी, हासें वीनती तेह। रा०।
कहिवो हुवै ते सहु कहइं जी, भोजन अवसर जेह ॥१२॥च०॥
जीमतां रुड़ी जुगति स्युं जी, कहि राजा किण हेत। रा०।
स्वाद रहित सव रसवती जी, कां न करो चित चेत ॥१३॥च०॥
आजकालिए रसवती जी, निपट करो निसवाद। रा०।
कहि चतुराइ किहां गइ जी, कै पकड़्यो परमाद ॥१४॥च०॥
तव तटकी बोली तिसइं जी, राणी मन धरि रोस। रा०।
राणी[2] आणो कां नवी जी, वो मति मुगनै[3] दोस॥१५॥च०॥
म्हे केलवि जाणां नहीं जी, किसो अ करीजैं वाद। रा०।
पदमणि का परणो नवी जी, जिन भोजन हुवै स्वाद ॥१६॥च०॥

---

१ साज २ नारी ३ मूढ

राजा गुरु स्त्री आगि नो जी, नवि कीजैं आसंग ।रा०।
'लब्धोदय' इण परि कहें जी, बीजी ढाल सुरंग[1] ॥१७॥च०॥
[सर्व गाथा ४२]

पद्मिनी पाणिग्रहण प्रतिज्ञा

दोहा

रीसाणो ऊठ्यो तुरत, तजि भोजन तिण वार।
राणो तो हुं रतनसी, परणुं पदमणि नारि ॥ १ ॥
मोसा तो बोल्या सुनें, जइं में राख्यो मान।
हिवें परणुं तरुणी पदमणी, गालुं तुज्झ गुमान ॥ २ ॥
मूरिख तें मुझ नें गण्यो, वचन कह्यो अविचार।
जो पदमणि हाथे जीमस्युं, तो आवुं तुझ बार ॥ ३ ॥
मान गहेली माननी, विरुअउ बोल्यो वयण।
विण आदर न रहें कदे, सिंह सूर नें सयण ॥ ४ ॥

गाहा

जणणी जण बंधू, भजा गेह धणं च धन्नं च।
अवि माणया पुरिसा देस दूरेण छंडंति ॥ ५ ॥

दोहा

कीधी परतज्ञा इसी, मन सेती महाराय।
पदमणि परणु तो घरि रहुं, नहिं तो गिरि वनराय ॥ ६ ॥

---

1 सुचंग

सिंहलद्वीप प्रस्थान

ढाल (३) राग—मारु केदारो, चाल करतासुं तो प्रीति सहुं हूंसी करै

इम चित[1] विमासी राय, अश्व दोय घन भर्या रे। अ०
साथें एक खवास, छाना नीसर्या रे। छा० ॥ १ ॥

छल करि दोन्युं असवार कि, चाकर नें धणी रे। चा०
जाता नवि जाणें कोइ कि, गया ते भूंय घणी रे ॥ भू० ॥२॥

स्वामी कहुं कारिज साच कि, सेवक इम भणें रे। से०
अणजाण्यां आंधि न सेठ कि, दोड्यां किम घणें रे। दो० ॥३॥

विण गाम किहां थी सीम कि, मेह विण वादलह रे। मे०
ऊखर नवि ऊगें अन्न कि, न खेती विण हलह रे। न० ॥४॥

तिण हेतइं भाखो मुझ कि, गुझ हिरदें तणो रे। गु०
कीजै तसु उपरि काज कि, विचारी आपणो रे। वि० ॥५॥

तव बोल्यो राजा एम कि, परणुं पदमणी रे। प०
आदरि करि करिहु उपाय कि, वात कहुं सी घणी रे। वा० ॥६॥

बोलें सेवक धन्न मो पास कि, असंख्य मानें पणो रे। अ०
पिण नवि जाणुं गृह गाम कि, ठाम पदमणि तणो रे। ठा० ॥७॥

थानिक जाणे विण मारग कि, पड्यो भूभलां फिरै रे। प० ।
तरु तलि लीधो विश्राम कि, ते देह ऊमें रे। ते० ॥८॥

---

१ चितवि मन मइं

तिण वेला पंथी एक कि, भूख त्रिस भेदीयउ रे। भू०
विण अमलें गहिलें देह कि, पंथ[1] अति देखियउ[2] रे। पं० ॥६॥

अटवी मांहि माणस एक कि, जोतां नवि जुड़यो रे। जो०
तदि देख्यो राजा तेण कि, पगि आवी पड़यो रे। प० ॥१०॥

कीधा सीतल उपचार कि, अमल पाणी दीयो रे। अ०
भोजन मेवा वहु भांति कि, राय संतोषीयो रे। रा० ॥११॥

पंथीक नै कौतिक वात कि, राय पूछें वली रे। रा०
देख्यो तें पदमणी देश कि, किहा हि सांभली रे। कि० ॥१२॥

सुणि राजन सिंघलद्वीप कि, दक्षिण दिशि अछै रे। द०
आडो वहै जलधि अथाह कि, पार जेहनो न छै रे। पा० ॥१३॥

तिहां पदमणि नारि अनेक कि, रूपें अपछरी रे। रू०
सुणि राजा देइ कान कि, सीख तिण सुं करी रे। सी० ॥ १४ ॥

मनि आणियो महाराय कि, दीप सिंघल भणी रे। दी०
चालविया चपल तुरंग कि, पवन थी गति घणी रे। प० ॥ १५ ॥

लांघ्या गिर नगर निवाण कि, सूर अति साहसी रे। सू०
दोन्युं आया दरिया तीर कि, मन मांहि अति खुशी रे म०॥१६॥

जगि पुण्य सहाइ जास कि, तास पूजें मन रली रे। ता०
मुनि 'लब्धोदय' कहै एमकि, को न सकै कली रे। को० ॥ १७ ॥

---

1 पंख 2 खेदियउ

समुद्र वर्णन

दोहा

जल भरीयो दरीयो घणो, उछलता उफांन ।
कल्लोले कल्लोले थी, उदक वध्यों अनमान ॥ १ ॥

मच्छ कच्छ मांहि घणा, न सकै जाय जीहाज ।
न चले जोरो नीरस्युं, कीज्ये किसो इलाज ॥ २ ॥

चिंता मन भूपति चतुर, स्युं कीजै जगदीस ।
वेलि महा वीहामणी, पूजें केम जगीस ॥ ३ ॥

पदमणि स्युं पाणीग्रहण, विचि वारिधि अति सूर ।
ऊखाणो साचो हुओ, वाघ नदी जल पूर ॥ ४ ॥

गुड़ मीठो ऊंडी नदी, आय मिल्यो ए न्याय ।
हिकमति सी कीजी हिवें, कीजें कोड उपाय ॥ ५ ॥

योगी मिलन

जावइं आयो जेहवें, सेवक लीधो साथ ।
जोग पंथ साधइ जुगति, निरख्यो अवधूनाथ ॥ ६ ॥

काने मुद्रा कनक की, आसण चीता चर्म ।
लगाय विभूति तप जप करें, ते साधै शिव धर्म[1] ॥ ७ ॥

---

१ शर्म

ढाल (४)—सिहरां सिहर मधुपुरी रे, कुमरां नंदकुमार रे एदेशी

राग—कालहरो

सिध साधक योगी भणी रे, जाय कीयो आदेश रे।
वार वार वीनति करी रे, लागो पाय नरेश रे॥ १॥
वाल्हेसर सांमी, मानि नें तु अंतरयामी,
मानि नें शिवगति गामी, वीनतड़ी मुझ मानो वा०॥ आंकणी॥
मुझ मनि सिंघलद्वीप नी रे, पदमणि देखण चाह।
तुझ परसादे सहु हुस्यें रे, हिव मुझ सी परवाह रे वा०॥ २॥
विविध विनय वचने करी रे, सुप्रसन्न हुओ सांम।
आँखि उघाड़ी देखीयो रे, बोलायो ले नाम रे। वा०॥ ३॥
भूपति मन अचरिज थयो रे, किम जाण्यो मुझनांम।
ए ज्ञानी आयस अछै रे, पूरवस्यें मुझ हांम रे।वा०।४।
जोगी जंपे राणजी रे, तु आयो मुझ थांन।
कारिज थांरो हुँ करु रे, जो गुरु लागो कान रे।वा०।५।
ईम कही सांही समरणी रे, हाथे वेऊ असवार रे।
आयस अंबर ऊडीयो रे, लागी वार न लिगार रे।वा०।६।

सिंहलद्वीप प्रवेश

सिंघलद्वीपे मूकि नें रे, आयस हूअउ अलोप रे।
राजा रो मन रंजीयो रे, देख्यो नगर अनोप रे॥ वा०।७।

पद्मिनी दर्शन

सोवन महल सोहामणा रे, इन्द्रपुरी अवतार।
रतनजड़ित गोखें भली रे, बैठी राजकुमार रे॥ढा०॥८॥
साथें सखी रे झूलरें रे, गज गति चालें गेल।
चतुरां मनड़ो मोहती रे, साची मोहन वेलि रे।ढा०॥९॥
थानिक थानिक नव नवा रे, नाटिक निरखें राय।
हय गय हाट पटण घणा रे, जोतां आवा जायरे।ढा०॥१०॥

ढंढेरा श्रवण

नगर मध्य आया तिसें रे, ढंढेरा नो ढोल।
राजा वाजा सांभली रे, बोलें मधुरा बोल रे।ढा०॥११॥
पटह छबी नइं पूछीयइ रे, ढोल वाजे किण काज।
तव बोल्या चाकर तिके रे, वात सुणो महाराज रे।ढा०॥१२॥
सिंहलद्वीप नो राजीयो रे, 'सिंघलसिंघ' समान।
तास बहिन पदमणी रे, रूपें रंभ समान रे॥ढा०॥१३॥
जोवन लहर्यां जाय छे रे, परणें नहिं ते बाल।
परतिज्ञा जे पूरवे रे, तासु ठवें वरमाल रे।ढा०॥१४॥
जीपें बांधव नइं जिको रे, ते परणें भरतार।
तिण कारण मुझ राजीयो रे, पडह दीयो तिण वार रे।ढा०॥१५॥
'रतनसेन' राजा कहै रे, हुं जीपूं निरधार।
मल्लाखाड़ें रण मुखें रे, रामति करण प्रकार रे।ढा०॥१६॥
राजा मन आणंदीयो रे, रामति जीपें सूर।
सुणि पंथी शेत्रुंजनी रे रामति जीपें जेह रे।ढा०॥१७॥

वाचा साची आपस्युं रे, आपुं अति सनेह ।
अर्द्ध राज भंडार नो रे, भग्नीपति हुइ जेह रे ।वा०॥१८॥
राजा मन आणंदियो रे, रामत्ति जीपें एह ।
'लब्धोदय' कहैं सदा रे, पुण्य सहाय तेह रे ।वा०॥१६॥

क्रीड़ा विजय

दोहा

'रतनसेन' राजा कहैं, पूछो सिंघल भूप ।
कओल थकी चूके नहिं, कीजें खेल अनूप ॥ १ ॥
सेवक जाइ विनम्यो, हरख्यो सिंघल राय ।
बोलावी बहु 'मानसुं', वइठण दीधो ताय ॥ २ ॥
रामति रमवा रंग स्युं, बैठा बेऊं आय ।
जाणै सूर अनें ससी, मिलीया एकण ठाय ॥ ३ ॥
पासे बैठी पद्‌मणी, कोमल कंचन काय ।
राणो रूड़ी विधि रमें, तिम तिम आवैं दाय ॥ ४ ॥
ए छै कोई राजवी, रूपवंत रति राज ।
जो जीपें किम ही करी, तू तोठो महाराज ॥ ५ ॥

ढाल (५) ढुंढणीया री मेवाड़ी देशी, मेवाड़ि देशे प्रसिद्धास्ति

रमतां हे सखि रमतां रूड़ी रीत,
रसीयो हे सखि रसियो पद्‌मणि मन वस्यो जी ।
जीतो हे सखि जीतो हे राणो जोध,
सिंघल हे सखी सिंघल हार्‌यो मन उलस्यो जी ॥१॥

दोहा

पान पदारथ सुघड़ नर, अण तोल्या विकाय।
जिम-जिम पर भूयें संचरें, (तिम) तिम मोल मुहंगा थाय ॥१॥
हंसा ने सरवर घणा, कुसुम घणा भमरांह।
सुगुणा[1] नें सज्जन घणा, देश विदेश गयांह॥ २ ॥

पद्मिनी विवाह

ढाल तेहिज

रंगे हे सखि रंगे घालैं वरमाल,
घालै हे सखि घालैं हे जयसुख उचरें जी।
सिंघल हे सखि सिंघल भूप सनेह,
रूड़ी हे सखि रूड़ी हे साहमणि करें जी ।२।
वहिनी हे सखि वहिनी हे पद्मणि विवाह,
कीधो हे सखि कीधो लीधो जस घणो जी।
आधो हे सखि आधो हे देस भंडार,
दीधो हे सखि दीधो कओल सुहामणोजी ।३।
दासी हे सखि दासी हे दोय हजार,
रूपे हे सखि रूपे हे रति रम्भा वणी जी।
हाथी हे सखि हाथी हे हैवर हेम,
परिघल हे सखि परिघल द्यैं पहिरावणी जी ।४।
राणी हे सखि राणी हे अति हे सरूप,
एहवी हे सखि एहवी नारि न को अछै जी।

१ सापुरिसां थानिक घणा

भमरा[1] हे सखि भमरा भमइं अनन्त,
नारी हे सखि नारि हे सहु तिण पछै जी ।५।
परिमल हे सखि परिमल महकै पूर,
वासें हे सखि वासें हे भमरा चमकीया[2] जी ।
माणस हे सखि माणस केही मात[3],
हींसे हे सखि हींसे हे देव तणा हिया जी ।६।
राणो हे सखि राणो हे अति रंढाल,
घरणी हे सखि घरणी मनहरणी वरी जी ।
मननी हे सखि मननी हे पूगी आस,
सफली हे सखि सफली परतंग्या करीजी॥ ।७।
दिन दिन हे सखि दिन दिन नव नव भोग,
पूरें हे सखि पूरें हे सिंघल सुख सहु जी ।
रलीया हे सखि रलिया दिन नें रात,
रहतां हे सखि रहतां हे दिवस वहू जी ।८।
अवसर हे सखि अवसर हे पामी राय
मांगे हे सखि मांगे घर नी सीखड़ी जी ।
वीनती हे सखि वीनती हे तुम्ह स्युं एह,
मां सुं हे सखी मांसुं हे मति करयो अड़ी जी ॥६॥

---

१ रम्भा हे सखि रम्भा रति इंद्राणी, अपछर हे सखि अपछर पद्मणि रइ अछै जी २ वसिकीयाजी ३ गात

॥ साहसियां लच्छी हुवइ, नहु कायर पुरसांह
काने कुण्डल रयणमइ, मसि कज्जल नयणांह १

राजा हे सखी राजा हे सिंघल नाम,
राणी हे सखि राणी हे पहुंचावण भणी जी ।
साथें हे सखी साथे सैन्य अपार,
आवें हे सखि आवें हे तटि दरिया तणें जी ॥१०॥
पूर्या हे सखी पूर्या हे सथ्थल जीहाज,
बैंठा हे सखी बैंठा दोन्यु राजा रंगस्यु जी ।
पुहुँच्या हे सखी पहुँच्या हे वारिधि पार,
सेना हे सखी सेना हे घणी चतुरंग स्युं जी ।११।
तंबू हे सखी तंबू हे दरीया तीर,
खांच्या हे सखि खांच्या हे दल वादल भला जी ।
महीमांनी हे सखी महीमांनी हे घणे हेत,
मांडया हे सखी मांड्या हे भोजन भला[1] जी ॥१२॥
मांहो मांहि हे सखी मांहो मांहि हे रंग,
गाढा हे सखि गाढा सुख दोन्यु सगा जी ।
चलीयो हे सखी चलीयो हे सिंघल भूप,
पुंहुंचावी हे सखी पहुंचावी हे दरिया लगे जी ॥१३॥
जाणी हे सखी जाणी हे राणा जाति,
हरख्यो हे सखी हरख्यो हे सिंघलपति सही जी ।
सीधा हे सखि सीधा हे वंछित काज,
पद्मणी हे सखि पद्मणी हे मन में गहगही जी ॥१४॥

---

१ भटकलाजी

पुण्यें हे सखी पून्ये हे सघला सुख,
रन[1] मइं हे सखि रन में हे रंग लीला लहै जी।
पामें हे सखी पामें हे नव निधि सुख,
मुनिवर हे सखी मुनिवर हे लब्धोदय कहै जी ॥१५॥

परवर्त्ती चित्तौड़ प्रसंग

दोहा

वात सुणो हिव पाछली, राजा नी मन रंग।
छानो छटक्यो भूपती, कोई न लीधो संग ॥ १ ॥
राजा विण सोभे नहीं, राज सभा ने रात।
सोभो गढ सारैं कीयो, पिण नवी[2] जाणी वात ॥ २ ॥
जाय पूछ्यो महल में, राणी भाख्यो साच।
पद्मणि परणेवा सही, चाल्यो पालण वाच ॥ ३ ॥
सभा मांहि बैठो सकज, वीरभाण वड़ वीर।
कूड़ी वातज केलवी, पालें राज सधीर ॥ ४ ॥
लोकां आगें इम कहै, मांहि बैठा जाप।
जपें प्रथवीपति जेहथो, पहवी वधइं प्रताप ॥ ५ ॥

ढाल ६—ता भव वंधण थी छोड़ि हो नेमीसर जी, ए देसी

इम पालता राज हो राजेसर जी,
वउल्या पट खंड मास उपर वलि दिन घणा।
संकाणा मन मांहि हो राजेसर जी,
सहु कोई सेवक राणा तणा जी ॥ १ ॥

---

१ रन्नइ हे सखि रन्नइ वेलाउल लहैजी २ मवि लाधी वात

वाहिर नव-नव खेल हो रा० राति दिवस करतो रहतो खड़ो जी।
मुंहल मूल न देइ हो रा० मास्यो होइं रखे राजा वड़ो जी ॥२॥

चित्तौड़ आगमन

करता एहवी वात हो रा० राजा आयो रतन सुहामणो जी।
हैंवर दोय[1] हजार हो रा० गेंवर दोय सहस गाजे घणा जी ॥३॥
पालखी परधान हो रा० दोय हजार सहेली सुंदरी जी।
पटराणी ता वीच हो रा० सोवन कलसे पालखी करी जी ॥४॥
मदमाता मातंग हो रा० हींसे हय पायक वल अति घणाजी।
आया ते चित्रकोट हो रा० शूरा पूरा सुभट सुहामणा जी ॥५॥
नेजा कुहक वाण हो रा० वाजे वाजा पंच शवद भला जी।
सूणीय नासें शत्रु हो रा० रजि ऊडी रवि छायो वादला जी ॥६॥
परदल आया जाणि हो रा० कोलाहल हलचल हुई अति घणीजी।
चित चमक्यो वीरभाण हो रा० धाया शूर सुभट
जूझण भणी जी ॥७॥
तेहवें नृप नउ दूत हो रा० कागल लेई राजमहलें गयो जी।
वांची सगली वात हो राजेसर जी
गढपति आयो गढ आणंद थयो जी ॥८॥

चित्तौड़ प्रवेशोत्सव

बोलावी कोटवाल हो रा० वूहारी[2] जल छांट्या वली जी।
फूल अवीर विछाय हो रा० सिणगास्या वाजार हो सोभाभलीजी॥९॥

१ चार २ बुहरावें जल छंटाव्या गली भी

तोरण वांध्या वार हो रा० पोलि आरीसा सूरीज जलहलें जी।
वाजे गुहीर नीसाण हो रा० घरि-घरि ऊँची गूढी ऊछलेजी ॥१०॥

सोवन साखित सार हो रा० झूलमती चाले आगे हीसता जी।
सीसें तेल सिंदुर हो रा० गयवर जाणे परवत दीसताजी ॥११॥

सूहव करि सिणगार हो रा० पूरण कलस ले आवे कामनी जी।
मलपति गावैं गीत हो रा०
धन दिवस आयो अम्ह गढ़ धणी जी ॥१२॥

सोवन चउक पुराय हो राजेसरजी,
मोतीयां वधावे राय राणी भणी जी।
जीवो कोड़ि वरीस हो राजेसर जी,
गज गामनि असीस दीइ[1] घणी[2] जी ॥१३॥

पाए लागे दोड़ि हो रा० कुमर सकल सेवक साथें करी जी।
वात करें कुसलात हो रा० राजा प्रजा सगली राज रीजी ॥१४॥

गज चढ़े ढलकती ढाल हो रा० पाउ पधास्या राजा गढ ऊपरेंजी।
जग हूवो जसवास हो राजेसर जी,
धन राजा राणी जगि उचरैं जी ॥ १५ ॥

छठी ढाल रसाल हो रा० सामहेलें घरि आयो राजियो जी।
'ज्ञानराज' गणि सीस हो राजेसर जी,
मुनि 'लालचंद' कहै हरख्यो हीयो जी ॥ १६ ॥

दोहा

राणो आयो रतनसी, लोक सहू आणंद।
महिलां पडधारै तरै, मेल्यौ सगलो दंद ॥ १ ॥
जाइ मिलिया परभावती, म्हे पाली बोली वाच।
अब थां सुं ऊरण हुया, पदमणी आणी साच ॥ २ ॥

ढाल (७) रागधन्यासी, १ जाइरे जीयरा निकसि कै एहनी देसी,
२ वात म काढ़ो व्रत तणी ए देशी

मोटा महेल मनोहरू, पदमणी वासा जोगो रे।
विचरै साथ सहेलीयां, भोगवती सुख भोगो रे॥
मोटा महल मनोहरू ।आंकणी।
रतनसेन राणो गयो, पटराणी ने पासै रे।
परणे आया पदमणी, हिवै दीज्यो सबासो रे ॥२॥मो०॥
वचन तुम्हारो में कियो, अमनें केहो दोसो रे।
स्वाद करी जीमस्यां हिवै, करस्यां केहो[1] सोसो रे ॥३॥मो०॥
वचन सुणी दीवाण ना, वीलखी हुई ते नारी रे।
परभावती मन चिंतवै, हिवें कीजै किसुं विचारो रे ॥४॥मो०॥
में मारै हाथें कियो, केहो कीजे सोसो रे।
दोस जिको मुझ वचन नो, कीजे किणसुं रोसो रे ॥५॥ मो०॥*

---

१ कायापोसोरे

* आत्मानो मुख दोषेन, बध्यन्ते शुक सारिका। बकास्तत्र न बध्यंते, मौनं सर्वार्थ साधनः

प्रथम खंड प्रशस्ति

गिरुओ गच्छ खरतरतणो, जाणें सकल जीहानों रे।
गच्छनायक लायक वड़ों, जंगम युगिपरधानो रे ॥६॥मो०॥
श्री जिनरंगसूरीसरु, तसु श्राविक सिरताजो रे।
कुल मंडण कटारीया, मंत्रीसर हंसराजो रे ॥७॥मो०॥
जेह्नो जस जगि महमहें, करणी सुकृत कुवेरो रे।
परम भगति गुरुदेव रा, वड़ दाता मन मेरो रे ॥८॥मो०॥
भाई डुंगरसी भलो, लघु वंधव गुण वृंदो रे।
दुखियां दलिद्र भंजणो, भागचंद कुलचंदो रे ॥९॥मो०॥
तास तणो आदर करी, संवंध रच्यो सिरताजो रे।
पाठक ज्ञानसमुद्र तणा, शिष्य मुख्य ज्ञानराजो रे ॥१०॥मो०॥
सुपसाइं श्री गुरु तणें, 'लब्धोदय' गणि भाखें रे।
प्रथम खंड पूरौ कियो, धरम तणें अभिलाषें रें ॥११॥मो०॥

इति श्री राणा श्रीरतनसिंह पदमणी परणी पनोता प्रथम खण्ड ॥१॥†

---

† इति श्री पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा वंध श्रीज्ञानराजगणिराजानां शिष्यमुख्य पंडित लब्धोदय गणि विरचित कटारिया गोत्रीय मंत्रीश्रीहंसराज मंत्री श्रीभागचंदानुरोधेन राणा श्री रतनसिंह पदमणी परणयनो नाम प्रथम खंड ॥१॥

द्वितीय खण्ड

मंगलाचरण

वाणी निर्मल विस्तरै, नव खंडेहि नाम ।
तिण हेतें श्री गुरुभणी, प्रथम करूं प्रणाम ॥१॥
सुगण सुणेज्यो श्रुतिधरी, परहो तजो प्रमाद ।
बीजें खंड वखाणतां, सुणतां उपजै स्वाद ॥२॥

पद्मिनी सौंदर्य वर्णन

ढाल १ वागलीया री

राति दिवस भीनो रहै रे, पदमणि स्युं बहु प्रेम रे रंग रसीया ।
पंच विपय सुख भोगवै रे, दोगंधक सुर जेम रे रंग रसीया ॥१॥
राय राणी मन वसिया, अविहड़
जिम जोड़ी रसिया, जिम कंचन रस रसीया ।
जिम जोड़ी सारसीयां रे, अविहड़ लागी प्रीत रे रंग रसीया।आ०।
जीव एक नइं जूजूई रे, देही दीसें दोइ रे रंग० ।
चित लागो चतुरां तणो रे, चोल तणी परि जोइ रे रंग० ॥२॥

चंदवदन ऊपरि घटा रे, सोहैं वेणीदण्ड रे रंग० ।
(अथ) मृगानयणी ऊपरइ रे, वांध्यो जाल प्रचण्ड रे रंग० ॥३॥
ताटी मरकत मणि तणी रे, अथवा जाणि भुजंग रे रंग०
घाटी मन घेरण तणी रे, पाटि वणीय सुचंग रे रंग० ॥४॥
सैंथो सिंदूरइ भर्‍यो रे, जाणे रविकर एक रे रंग० ।
कत्र[1] तम पामी एकली रे, वांधी सव धरि टेक रे रंग० ॥५॥
सीसफूल तारा भला रे, अरधचंद सम भाग रे रंग० ।
विंदी जाणे मणि धरी रे, पीवत अमृत नाग रे रंग० ॥६॥
श्रवण किना सोवन तणी रे सीप सुघट मन फंद रे रंग० ।
कुंडल रे मिसि देखवा रे, आया सूरज चंद रे रंग० ॥७॥
अणियाले काजल भरी रे, निपट रसीले नयण रे रंग० ।
चंचल चतुरां चित हरइ रे, देखत उपजैं चैन रे रंग० ॥८॥
नयण कमल ऊपरि वण्या रे, भूंहा भमर समान रे रंग० ।
दीपशिखा सम नासिका रे, देखण रूप निधान रे रंग० ॥९॥
नासा शुक सोवन तणी रे, वेसर मोती जेह रे रंग० ।
आंव[2] सोवट चे चंच में रे, विधु-बालक सस्नेह रे रंग० ॥१०॥
काया सोवन तसु तणी[3] रे, गोरा गाल रसाल रे रंग ।
आरीसा कंदर्प तणा[4] रे, चंद[5] सरीसो भाल रे रंग० ॥११॥
पाका विंव मधु समा रे, ओपित विद्रुम जाण रे रंग० ।
मामोल्या जिम रातड़ा रे, अधर सुधारस खाण रे रंग० ॥१२॥

---

१ कंचि २ अंव मउर ३ ताया सोवन तवक सा ४ नो ५ कुंकम जेवा लाल रे०

(जाणें) मोती लड़ पोई धर्या रे, अधर विद्रुम विचि दंत रे रंग०।
चमकैं चूनी सारिखा रे, दाड़िम कूलीय दीपंत रे रंग० ॥ १३ ॥
कोकिल कंठ सुहामणो रे, पति भुज वल्ली खम्भ रे रंग०।
मोतिन की दुलड़ी वणी रे, त्रिवली रेख अचंभ रे रंग० ॥ १४ ॥
भुजादण्ड सोवन घड्या रे, कोमल कलस[1] मुनालि रे रंग०।
मूंगफली चम्पा कली रे आंगुलियां सुविशाल रे रंग० ॥ १५ ॥
कनक कुंभ श्रीफल जिसा रे, कुच तटि कठिन कठोर रे रंग०।
पाका वील नारिंग सा रे, मानुं युगल चकोर रे रंग० ॥ १६ ॥
कोमल कमल ऊपरें रे, त्रिवली समर सोपान रे रंग०।
कटि तटि अति सूछिम कही रे, थूल[2] नितंब वखाणं रे रंग० ॥१७॥
जंघा सुंडा करि वणी रे, उलटो कदली खंभ रे रंग०।
सोवन कच्छप सारिखा रे, चरण हरण मन दंभ रे रंग० ॥१८॥
सकल रूप पद्मणि तणो रे, कहत न आवें पार रे रंग०।
'लब्धोदय' कहै आठमी रे, ढाल रसिक सुखकार रे रंग० ॥१६॥

दोहा

हंस गमणि हेजइं हीइं, राति दिवस सुख संग।
राणो लीण हुओ तुरत, जिम चन्दन तरुहि भुजंग ॥ १ ॥

दूहा गूढ़ा गीत स्युं, कवित कथा बहु भांति।
रीझवियो राणो चतुर, क्रीड़ा केलि करंति ॥ २ ॥

१—कमलसुमाल २ पृथुल

राघव चेतन का दरबार प्रवेश

इम रहतां सुख सु' सदा, जे हूओ छै विरतंत।
सुणयो चित्त देइ[1] सुगण, मन थिर[2] करी एकंत ॥ ३ ॥
राघव चेतन दोइ वसे, चित्रकूट में व्यास।
राति दिवस विद्या तणो, अधिको अछे अभ्यास ॥ ४ ॥
राजा मान दियो घणो, भारथ वांचे आय।
राज लोक में रात दिन, महल अमहलें जाय ॥ ५ ॥

राघव चेतन पर कोप

ढाल (२) राग—गौड़ी, मन भमरा रे० ए देसी,

एकणि दिन पदमणि तणै मन रंगें रे,
संगइं बैठो राय लाल मन रंगेंरे।
क्रीड़ा आलिंगन करें मन रंगें रे, तेहवें व्यासजी जाय लाल० ॥१॥
राघव ऊपरि कोपीयो मन०, मूंह चढ़ाई राय लाल मन रंगें रे।
होठ वेहुं फुर फुर करइ मन०, किस आयो अण प्रस्ताव लाल० ॥२॥
फिट रे पापी बंभणा मन रंगें रे, मूरिख जट्ट गमार लाल मन रंगेंरे।
फिट रे थोथा[3] पंडीया मन रंगें रे,
मूल[4] न समझै गमार लाल मन रंगें रे ॥ ३ ॥
अणरुचती वातां करै म० अणतेड्यो आवें गेह लाल०
बोलै अणबोलावीयो म० साचो मूरिख तेह लाल० ॥४॥

---

१ कान २ तन ३ पोथा ४ साचउ मूरिखि विचार।

आपही वात कहैं हसें म० वेसणो आप ही लेह लाल०
विहु आलोच करतां विचैं म० जावैं चतुर न तेह लाल० ॥५॥

गैरमहैल नृप मंदिरें म० एकंते नर नारि लाल०
लाज समें जावइं जिको म० ते मूरिख निरधार लाल० ॥६॥

निभ्रँछयो राघव भणी म० काढ्यो हाथ ज साहि लाल०
जातां भुँइ भारी पड़ी म० पहुतो निज घर मांहि लाल० ॥७॥

राजा रूठो इम कहैं म० पदमणी देखी व्यास लाल०
आँखि कढावुं एहनी म० तो मुझ ने स्यावास लाल० ॥८॥

वात सुणी राजा तणी म० एम विचारैं व्यास लाल०
राजा मित्र न जांणीइ म० सिह किसो वेसास लाल० ॥९॥

काके सौचं, द्यूतकारेषु सत्यं ज्ञाने भ्रांतिः स्त्रीषु कामोपशांति
क्लीवे धैर्यं मद्यपे तत्वचिन्ता, राजा मित्रो केन दृष्टं श्रुतं वा ।१

अत्यासन्न विनासाय दूरस्था निष्फला भवेत् ।
सेव्यता मध्यम भावेन राजा वन्हि गुरुस्त्रियः

राजा री रीस भली नहीं म० चितचमक्यो राघव व्यास लाल०
न हुवे दोन्युं वातड़ी म० एक वैर नें वास लाल० ॥१०॥

आलोचैं मन आपणे म० छोड्यो गढ चीतोड़ लाल०
द्रव्य देईं नइं नीकल्या म० राघव चेतन जोड़ लाल० ॥११॥

त्यजेदेकं कुलस्यर्थे, ग्रामार्थे च कुलंत्यजेत् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थेपृथिवी त्यजेत्

राघव चेतन दिल्ली गमन

दिन थोड़ें दिल्ली गयो म० नगर हुओ जस नाम लाल०
योतिप जाणै अति घणो मन०
विविध विद्या गुण धाम लाल० ॥१२॥
शास्त्र अनेक वांचै भणै म० नव रस पोपइं नित लाल०
सौ सौ अरथ नवा करै म० चतुरां मोहैं चित्त लाल० ॥१३॥
वल पूरो विद्या तणो म० तेहनें स्यो परदेश लाल०
'लालचन्द' कहै सांभलो म० विद्या मान नरेश लाल० ॥१४॥

शाही दरबार प्रवेश

दोहा

सद्विद्या धन सासतो, विद्या रूप सुहाग ।
मान महातम[1] जस अधिक, विद्या मोटो भाग ॥१॥
पातिस्याह दिल्ली तदा, जास अखंडित आण ।
अविचल तेज अलावदी, प्रतपी बारह भाण ॥२॥
एक छत्र महि भोगवै, जस नव खंडे हि नाम ।
सुर नरपति जायें डरै, सेवकहि करै सिलाम ॥३॥
सेना सतावीस लख, भंजै अरि भड़वाह ।
तिण सुणीया बांभण गुणी, तेड़ायो धरि चाह ॥४॥
श्लोक कवित अभिनव करी, आया आणंद पूर ।
आदर सु आसीस दै, हजरति साहि हजूर ॥५॥

1 महतजस भोग सुख

ढाल (३) अलवेल्या नो। कहिनइ किंहाथी आविया रे लाल ए चाल०

श्लोक कवित्त कथा करीरे लाल, रीझ्यो निपट[1] पतिसाहि रे सो०।
सकल लोक धन-धन कहे रे लाल, विद्यावंत अथाह रे सो० ॥१॥
चतुर पंडित ब्राह्मण गुणनिलो[2] रे लाल। आंकणी
पातिसाहि दिल्ली तणो रे लाल, द्यै नित मोज अनेक रे सोभागी
गांम पांचसै अति भला रे लाल,
मनमइं धरीय विवेक रे सोभागी ॥२॥च०॥
इम रहतां आणंद स्युं रे लाल, दिल्लीपति रै पास रे सोभागी।
एक दिन राणा जी दीयो रे लाल,
तेह वैर चितारें व्यास रे सोभागी ॥३॥च०॥

राघव चेतन का प्रतिशोध षड़यन्त्र

वयर वालूं हिवें माहरो रे लाल, छूड़ायो गट गेहरे सो०
तो काढ़ूं चित्रकूट थी रे लाल, अपहरी पदमणी तेहरे सो० ४
सैंमुखी काम न कीजिइं रे लाल, जे पर पूठें थायरे सो०
आलोची मन आपणै रे लाल, मांड्यो एह उपाय रे सो० ॥५॥
भाईपणो एक भाट स्युं रे लाल, खोजा स्युं मन खंति रे सो०
मान दान देई घणो रे लाल, मित्र कीयो एकंति रे सो० ॥६॥
साहि तणै दरवार में रे लाल, पदमणि केरी वात रे सो०
जिण तिण भांति काढ़ज्यो रे लाल, मुझ मन एह सुहात रे सो० ॥७॥

१—मानि २ गुणी

एक दिन कोमल पांखड़ी रे लाल, भाट लेइ निज हाथ रे सो०
आवी सभा में वीनवे रे लाल, चिरंजीवो नरनाथ रे सो० ॥८॥

अथ भाट वाक्य

॥ कवित्त ॥

एक छत्र जिण पुहवी, निश्चल कीधी धर उप्पर।
आणं कित्ति नव खंड, अदल कीधी दुनीय प्पर॥
नल वीनल विव्भाड़ि, उदधि कर पाउ पखालिय।
अंतेउर रति रंभ, रूप रंभा सुर टालीय॥
हेतम दान कवि मल्ल कहि, अमर धुन्नि वे वखत गनि।
दीठो न कोइ रवि चक्क लगि, अलावदी सुलतान विणि।१।

ढाल तेहिज

पातिसाह अलांवदी रे लाल, देखी अनोपम तेहरे सोभागी
साहि वूझ्यो तेरे हाथ में रे लाल, भाट कहो क्या एहरे सो० ६
राजहंस[1] पंखी रहें रे लाल, मान सरोवर मांहि रे सो०।
तिण पंखी नी पांखड़ी रे लाल, ते देखी पतिसाहि रे सो० १०
मोज देई में नें इम कहे रे लाल, वाह वाह वे वाह रे सो०।
कहुँ वे ऐसी अउर भी रे, चीज देखी कहिनाह रे सो०॥११॥च०॥

पद्मिनी स्त्री के प्रति आकर्षण

ता परि भाट कहे सुणो रे लाल,
सव गुण पदमणि मांहि रे सो०।

---

१ कर सलाम भट चिंतवइ रे लाल सुग दिल्ली पति साह रे सो०

उआ की ओपम नें द्युं रे लाल,
अउर ऐसी कोई नाहिं रे सो० ॥ १२ ॥ च०॥
अद्भुत जाणे अपछरा रे लाल,
अति सुन्दर सुकमाल रे सो० ।
पतली कणयर कंवसी रे लाल,
पदमणि रूप रसाल रे सो० ॥१३॥च०॥
दीह्लीसर कहे भाट स्युं रे लाल,
अैसी पदमणि नारि रे सो० ।
तैं कहां ही देखी सुणी रे लाल,
कहि तुं साच विचारि रे सो० ॥१४॥च०॥
भाट कहै तुम महेंल में रे लाल,
नारी एक हजार रे सो० ।
तामै पदमणि सही होसी रे लाल,
दोय चारि निरधार रे सो० ॥१५॥ च०॥
दूजी ठाम न सांभली रे लाल,
कैसी कहिइं झूठ रे सो० ।
इम निसुणी खोजो कहै रे लाल,
आसंग मन धरि दूठ रे सो० ॥१६॥च०॥
वात फरोसतइं क्या कहै रे लाल,
वांभण साहि हजूर रे । सो० ।
कहाँ वे सुरनर मोहनी रे लाल,
पदमणि पुण्य पडूर रे सो० ॥१८॥ च० ॥

रावण घरि पदमणि सुणी रे लाल,
अउर नहिं संसार रे सो०।
साहि घरे सव संखिणी रे लाल,
क्या[1] कहिइ अविचार रे सो० ॥१८॥ च०॥
मांहोमांहि संकेत स्यु रे लाल,
भाट[2] खोजें कियो वाद रे सो०
'लालचंद' मुनिवर कहै रे लाल,
सुणतां उपजै स्वाद रे सो० ॥१६॥ च० ॥

दोहा

हसि कै साहि कहै इसो, क्यु वे खोजा खूब।
हम महलें सव संखणी, नहिं पदमणि महबूब ॥ १ ॥
तापरि खोजो वीनमें, बूझो राघव व्यास।
सव लक्षण गुण पदमणि[3] के, जाणै शास्त्र अभ्यास ॥ २ ॥
साहि कह्यो राघव भणी, स्त्री के केती जाति।
कैसा लक्षण पदमणी, साच कहो ए वात ॥ ३ ॥
सुविचारी राघव कहै, स्त्री की चारु जाति।
पदमणी[1] चित्रणी[2] हस्तणी[3] संखणी[4] असी भांति ॥४॥

---

१ साहि कह्यो तिण वार रे सो० २ वांमण ३ नारि का

पद्मिनी आदि स्त्री के लक्षण

॥ कवित्त ॥

रूपवंत रति रंभ, कमल जिम काया कोमल
परिमल पहोप सुगंध, भमर भमें[1] वहुपरिकरे उत्पल
चंपकली जिम रंग, चंग गति गयंद समाणी
शशि वदनी सुकमाल, मधुर मुख जंपे वाणी
चंचल चपल चकोर जिम, नयण कांति सोहे घणी।
कहे राघव सुलतान सुणि, पहोवी हुवे[2] अइसी पदमणी ॥ १ ॥

कुच युग कठिन सरूप, रूप अति रूडी रामा।
हस्त वदन हित हेज, सेज नितु रमें सुकामा
रूसै तूसै रंग, संगि सुख अधिक उपावै
राग रंग छतीत्त, गीत गुण ज्ञान सुणावै।
स्नान मज्जन तंबोल स्युं, रहइ अहोनिश रागणी
कहे राघव सुलतान सुणि, पहोची हुइइसी पदमणी ॥ २ ॥

वीज जेम झलकंत, कांति कुंदण जिम सोहै।
सुर नर गण गंधर्व, रूप त्रिभुवन मन मोहै ॥
त्रिवली तन वेउ लंक, वंक नहु वयण पयंपइ
पति सु प्रेम अपार, अवर सुं जीह न जंपइ
स्वामी भगति ससनेहली, अति सुकुमाल सुहावणी।
कहे राघव सुलतान सुणि, पहोवी हुइ इसी पदमणी ॥ ३ ॥

---

१ वहु भमै चलावल २ इसी हुई

धवल कुसुम सिणगार, धवल वहु वस्त्र सुहावै
मोताहल मणि रयण, हार हीइ[1] ऊपरि भावै
अलप भूख त्रिस अलप, नयण लहु नींद न आवै
आसण रंग सुरंग, जुगति सु काम जगावै
भगति जुगति भरतार री रहै अहोनिश रागणी
कहै राघव सुलतान सुणि, पद्मणी हुवै इसी पमदणी ॥ ४ ॥

श्लोक

पद्मिनी पद्म गन्धा च पुष्प गन्धा च चित्रणी
हस्तनी मच्छ गन्धा च दुर्गन्धा[2] भवेत्संखणी ॥ १ ॥
पद्मिनी स्वामिभक्ता च पुत्रभक्ता च चित्रणी ।
हस्तिनी मातृभक्ता च आत्मभक्ता च संखणी ॥ २ ॥
पद्मिनी करलकेशा च लम्बकेशा च चित्रणी ।
हस्तिनी उर्द्धकेशा च लठरकेशा च संखिणी ॥ ३ ॥
पद्मिनी चन्द्रवदना च सूर्यवदना च चित्रणी ।
हस्तिनी पद्मवदना च शूकरवदना[3] च संखणी ॥ ४ ॥
पद्मिनी हंसवाणी च कोकिलावाणी च चित्रणी ।
हस्तिनी काकवाणी च गर्दभवाणी च संखणी ॥ ५ ॥
पद्मिनी पावाहारा च द्विपावाहारा च चित्रणी ।
त्रिपादा हारा हस्तिनी ज्ञेया परं हारा च संखणी ॥ ६ ॥
चतु वर्षे प्रसूति पद्मन्या त्रय वर्षाश्च चित्रणी ।
द्वि वर्षा हस्तनी प्रसूतं प्रति वर्षं च संखिनी ॥ ७ ॥

---

१ हृदयस्थल २ क्षीरगन्धा ३ काक

जैन मन्दिर व कीर्त्तिस्तंभ

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग—राजस्थान]
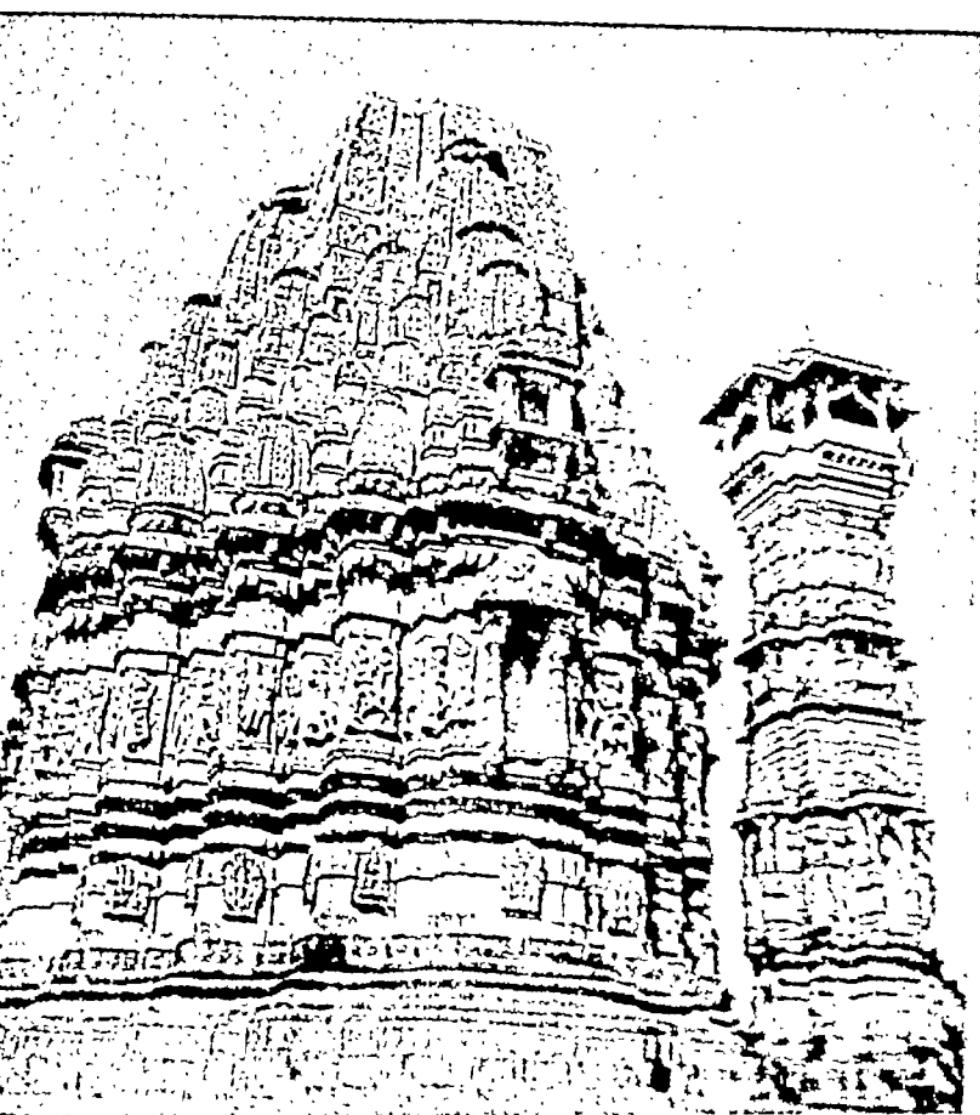
पद्मिनी श्वेत शृंगारा, रक्त शृंगारा चित्रणी।
हस्तिनी नील शृंगारा, कृष्ण शृंगारा च संखणी ॥८॥

पद्मिनी पान राचन्ति, वित्त राचंति चित्रणी।
हस्तिनी दान राचन्ति, कलह राचंति संखिणी ॥९॥

पद्मिनी प्रहर निद्रा च, द्वि प्रहर निद्रा च चित्रणी।
हस्तिनी त्रय प्रहर निद्रा च, अघोर निद्रा च संखिणी ॥१०॥

चक्रस्थन्यो च पद्मिन्या, समस्थनी च चित्रणी।
उर्द्धस्थनी च हस्तिन्या, दीर्घस्थनी संखिणी ॥११॥

पद्मिनी हारदन्ता च, समदन्ता च चित्रणी।
हस्तिनी दीर्घदन्ता च, वक्रदन्ता च संखणी ॥१२॥

पद्मिनी मुख सौरभ्यं, उर सौरभ्यं चित्रणी।
हस्तिनी कटि सौरभ्यं, नास्ति गंधा च संखणी ॥१३॥

पद्मिनी पान राचन्ति, फल राचन्ति चित्रणी।
हस्तिनी मिष्ट राचन्ति, अन्न राचन्ति संखिणी ॥१४॥

पद्मिनी प्रेम वांछन्ति, मान वांछन्ति चित्रणी।
हस्तिनी दान वांछन्ति, कलह वांछन्ति संखिणी ॥१५॥

महापुण्येन पद्मिन्या, मध्यम पुण्येन चित्रणी।
हस्तिनी च क्रियालोपे, अघोर पापेन संखिणी ॥१६॥

पद्मिनी सिंघलद्वीपे च, दक्षिण देशे च चित्रणी।
हस्तिनी मध्यदेशे च, मरुधरायां च संखिणी ॥१७॥

अन्तः पुर की बेगमों में पद्मिनी गवेषणा

ढाल (४)

रागमारू, वाल्हाते विदेशी लागइं वालहो रे[1] ए गीतनी देशी—

इण परि पद्मिणी रा गुण सांभली रे, हरख्यो मन सुलतांन ।
हम महेलैं पद्मणी केते अछैरे, परखो व्यास सुजाण ॥१॥ इण०॥
सुन्दर सहेली पद्मणी मन वसी रे ॥ आंकणी ॥
व्यास कहै आलिम साहिव सुणो रे, किम निरखुं तुम नारि ।
निरख्यां विगर न जाणु पद्मणी रे, कीजे कवण विचार॥२॥ सु०॥
तव दिल्लीपति महेल करावियो रे, मणिमय एक अनूप ।
व्यास वुलाय कहे पद्मणी रे, निरभया देखी स रूप ॥३॥ सुं०॥
सकल नारि प्रतिविंव निरखियो रे, वैठी मणगृह मांहि ।
देखी हरम हस्तनी चित्रणी रे, यामें पद्मणी नांहि ॥४॥ सुं०॥
व्यास कहै सुर नर मन मोहनी रे, अद्भुत रूप अनेक ।
है चित्तहरणी तुरणी महल में रे, पिण नहीं पद्मणी एक॥५॥सुं०॥

पद्मिणी के लिए सिंहलद्वीप पर चढ़ाई

एह वात सुणी आलिमपति कहै रे, क्या मेरा अवतार[2] ।
कैसी पतिसाही विण पद्मणी रे, अउरति अउर असार ॥६॥सुं०॥
(विण) पद्मणी सेजे पोढुं नहीं रे, हेजे न करूं रे संग ।
पद्मणी ऊपरि कीजे उवारणा रे, राज रमणी सवंग ॥७॥ सु०॥
मनड़ो लागो मारू मुरट ज्युं रे; पद्मणी परणवा चाह ।
व्यास वतावो चावी पद्मणी रे, इम वोले पतिसाह ॥८॥ सुं०॥

---

१ वालउं रे सवायउ वैर हुं माहरी २ जमवार ।

सिहलदीप अछै दक्षिण दिसइजी. आडो समुद्र अथाग।
व्यास कहै पद्मिणी ठावी तिहाजी. पिण महा दुर्घट माग ॥९॥
साहि कहै मुझ आगे व्यासजी. दरीया है कुण मात।
मुझ देखे सुरनर सहुको डरै रे. सोखु सायर सात ॥१०॥ सु०॥
तुरत चढ़ाई सिहलदीप ने रे. कीधी दिल्लीनाथ।
धुं धुं धुं नीसाण घुरे भलाजी. शूर सुभट ले साथ ॥११॥सु०॥
सोले सहस मेंगल मदझरता भला रे. जाणे घन गज्जंति।
लाख सतावीस हैंवर हींसतारे. चंचल गति चालंति ॥१२॥ सु०॥
च्यार चक राजन संसय पड्या रे, धर हर धूजेरे सेस।
रज ऊडीरे गयणे रवि ढांकियारे, संक्यो मनहि सुरेस॥१३॥सु०॥
इलगारें करि करी उलंघी मही रे, आया दरीया तीर।
रिण रंढाला मरदाना वली [1] रे. साथे बहु सूर नें वीर॥१४॥सु०॥
देख्यो दरियो भरियो जल घणेजी. तव बोले नरनाथ।
वारिधि पूरो हल वीहला हुइ रे. मुझ्झ घाले हाथ ॥१५॥ सु०॥
दल वादल डेरा ऊभा किया रे. ऊतरीयो सुलतान।
सिहलदेश दुहाई फेरि के रे. पकड़ो सिपल राण ॥१६॥ सु०॥
'लालचंद' कहै साहि अलावदी रे. बोलाया बड़ वीर।
सझ हुई [2] सिहलद्वीप नें ते. जे मरदाना वीर ॥१७॥ सु०॥

दुहा

हुकम लही आया वही, जिहां सायर गम्भीर।
जल सुं जोर न कोई चलै. लूण लागा मीर ॥१॥

---

१ घड़ा, २ करि।

सायर ऊपरि हठ[1] कीयो, आलिम साहि अपार।
प्रवहण नवा घड़ावि ने, चोढ्या[2] वहु जूझार ॥२॥
साहि कहै सुभटां भणी, आ वेला छें आज।
लड़ी भड़ी गढ भेलिज्यो, पकड़ज्यो सिंघलराय ॥३॥
लाख लाख मोजां दीइं,[3] चलीइ[4] वकारें स्वामि।
कहें तदि पाछो कुण रहै, सूर सुभट रे नाम ॥४॥
वैठा ते दरीया विचै, जेहवै आघो जाय।
आय पड़्या भमऱ्या विचइ, वाजैं सवलो वाय ॥५॥

ढाल (५)—

राग-मल्हार सहर भलो पिण सांकडो रे नगर भलो पण दूर, ए देशी।

तेहवे दरीयो ऊछल्यो रे, भागी वेड़ी भटाक मेरे साजना।
फिरी आदइ आलिम भणी रे, वूडैं तेह कटक। मेरे साजना ॥१॥
जल सु' जोर न को चलै रे, सुभट रह्या जल मांहि मेरे०
पदमणी परही जाणि द्यो रे, छोडो केडो साहि मेरे० ॥ २ ॥
आलिमपति इणि परि कहै रे, मैं नवि छोड़ुं केड़ि मेरे०
मो आगें दरीयो रहे रे, अव नांखुगो उथेड़ि मेरे० ॥ ३ ॥
वरस रहुँ पदमणी वरु' रे, पकडु' सिंघलराय मेरे०
वीजा सुभट वुलाइये रे, मु'आ ति गइअ वलाय मेरे० ॥ ४ ॥
सुभट मन में संकीया रे, फोकट दरीया मांहि मेरे०
काम विना किम दीजिइ', रे, साहि विचारत नांहि मेरे० ॥५॥

१ कोपियाँ, २ चाल्या, ३ लहइ, ४ वलि वपुकारे।

आलिम अमरस मनि घणो रे,पिण दरीयो भरपूर मेरे०
खाणो पीणो परिहर्यो रे, बैठो चिंता पूर मेरे० ॥ ६ ॥
चिंता निद्रा परिहरइ रे, चिंता ले जाइ दुक्ख मेरे० ।
चिंता अहनिशि तन दहइ, चिन्ता फेड़इ भुक्ख मेरे० ॥ ७ ॥
चिंता चिता समाख्याता चितातो चिन्ताधिका ।
चिता दहति निर्जीवं चिन्ता जीवंतप्यहो ॥
साहि कहे तेहनें घणो रे, धुंगा देश भंडार मेरे०
दरीयो खोदि मारग[1] करइं रे, जावइं वारिधि पार मेरे० ॥८॥
लालचिया निरधार[2] तिहां रे, मांनि हुकम तिहां जाय मेरे०
देखि दरीयो इम कहे रे, खोदे कुंण खुदाय मेरे० ॥ ६ ॥
जे सिंहल पहुँचै जाइ रे, ते पावइ लाख तुरंग मेरे० ।
ते दूणो पावइ पटउ रे, जे भेलइ तास दुरंग मेरे० ॥ १० ॥
जे मारें सिंघल धणी रे, तिगुणो तास पसाय मेरे०
जे आणें पद्मणी भणी रे, ते सच गढ़नो राय मेरे० ॥ ११ ॥
इम लालच देखाडीयो रे, तो पिण न वहे इम मन मेरे०
नव लख सुभट सभि थया रे, मानि नहिं[3] साहि वचन मेरे ॥१२॥
दो तड़ वाघ तणउ वण्यउरे, लसकरिया ने न्याच मेरे०
इक दिस डर पतिसाह रउ, बीजे नांखे समुद्र वहाय मेरे० ॥१३॥
सुभटां व्यास बोलाइयो रे, आलिम सुं एकान्त मेरे०
पापी व्यास कुमतो कीयो रे, मांड्यों सुभटा अन्त मेरे० ॥१४॥

१ पाथर २ निरधन पणा ३ मानप

दूहा

वचन विमासी वोलियइ, ए पंडित नो न्याय।
अविमासी कारिज करइ, ते नर मूरख राय ॥१५॥

स्त्री वालक पुहोवीधणी रे, ए तिहुँ एक सभाव। मेरे०
मूढ नवि छांडै आपणी रे, भावें तो घर जाय। मेरे० ॥१६॥

आवी अनाथ जाणे नहीं रे, वालिभ ए जण च्यार मेरे०
वालक मंगण प्राहुणो रे, लाड गहेली नार मेरे० ॥ १७ ॥

एहवो कोइ मतो करो रे, आलोची मन आप मेरे०
आलिमपति पाछो फिरै रे, तो चूकें सव पाप मेरे० ॥ १८ ॥

आपणो मन आलोचि ने रे, जे करसी निज काज मेरे०
ते पामें सुख सम्पदा रे, 'लालचन्द' मुनिराज मेरे० ॥ १९ ॥

शाही हठ का छल से प्रतिकार कर दिल्ली पुनरागमन

दूहा—

व्यास कहै तुमे सांभलो, सुभट होइ सव एक।
हिकमति एक करो हिवैं, फिरें साहि रहे टेक ॥ १ ॥

मदझर मातंग[1] पांचसैं, सोवन जड़ित[2] साधार।
पाखरिया[3] पंच सहस, कोड़ि एक दीनार ॥ २ ॥

सिणगार्या पटकूल सुं, नव नव भांते नाव।
सोवन कलस सरस[4] रच्यो, भरयो वस्तु वहुभाव ॥३॥

---

१ गाता २ जाखित सार ३ वलि पाखरिया सहससय ४ सा सिर ठवड

अणजाण्या नर सीखवो, ए सिंघल मूक्यो दंड।
हुं तुम्ह नी पग खेह छुं, अब तुं[1] आलिम छंड ॥ ४ ॥
नाक नमण इण परि करो, और न कोई उपाय।
अहंकार इम राखज्यो, जिम आलिम फिर जाय ॥५॥

ढाल (६)—कोई पूछो वांभणा जोसी रे ए देशी। अथवा यत्तनी

इम व्यास वचन अवधारी रे, हरखी तब[2] सेना सारी रे।
सहू संच कीयो तिण रातें रे, दंड ल्याया ते परभातें रे ॥ १ ॥
दिन ऊग्यां आलिम जागें रे, देख्या प्रवहण मन रागें रे।
कहो क्या वे आवत सूझें रे, अइसउ सेवक कुं बूझें रे ॥ २ ॥
तब व्यास कहै सुणि सामी रे, सही तोहै एह सलामी रे।
सिंघल राजा तुम मुकी रे, सबली आग्या प्रभुजी की रे ॥ ३ ॥
सोना कलसे अति सोहै रे, चमकत चूनी मन मोहै रे।
फरहरें नेजा धजा फावइ रे, बहु नेड़ा[3] प्रवहण आवें रे ॥ ४ ॥
देखत आलिम सुख पावें रे, वाहण दरीया तटि आवें रे
सुलतान चरण धाइ लागें रे, सब पेसकसी धरी आगें रे ॥ ५ ॥
सिंघल तुम पग नी खेहा रे, सेवक सुं राखो सनेहा रे।
बंदे कुं साहि निवाजें रे, ए चूनो तुम पान काजें रे ॥ ६ ॥
तुम दिलीसर जगदीसो रे, नमठेह सुं केही रीसा रे।
इम विनय वचन सुणीइजे रे, सिरपाव सिंघल नें भेजें रे ॥ ७ ॥
पहरायो ते परधानो रे, दीधो तेहनें बहु मानो रे।
सिंघल मूंक्यो ते लीधो रे, सुभटां ने वांटे दीधो रे ॥ ८ ॥

१ कइ २ मानि ३ मतउजइ

सिंघल सौं कीधो सनेहो रे, मान देई मूंक्या तेहो रे।
समारी सहू राघव वातो रे, जिम तिम वणी आवै धातो रे ॥९॥

दूहा

जेहनइ घटि बहु बुद्धि हुवइ, तेसारइ सहु काम।
भंजइ गंजइ वल घड़इ, वलि आणइ निज ठाम ॥ १ ॥

ढाल (७) यतनी—मनसा जे आणो एह

अलिमपति कूच करायो रे, वेघो दिल्ली गढ आयो रे।
घरि घरि गूठी ऊछलीयाँ रे, बहु मंगल धुनी रंग रलीयाँ ॥ १ ॥
बैठो तखत पतिसाहो रे, गढ सकल थयो उछाहो रे।
मिलि मिलि नर नारी भाखै रे, यो[1] आयो पदमणी पाखैं ॥२॥
आलिमपति महेलां आया रे, भितरि हथियार धराया रे।
सेवक घरि[2] पाछो जावैं[3] रे, तब[4] बड़ी बीबी बुलावै ॥ ३ ॥
तुम साहिब पदमणी परणी रे, ते दिखलावो हम तुरणी रे।
देखां दीदार एकबार रे, कैसी हुवे पदमणी नारि ॥ ४ ॥
जसु घरि नहिं पदमणि नारी रे, कैसो कहीइं घर बार रे।
कैसी तेरी पतिसाही रे, पदमणी नाहिं एकाही ॥ ५ ॥
विण पदमणी खाना[5] खावैं रे, इम वार वार संतावैं रे।
विलखो होय खोजो आवैं रे, आलिम नैं बहुत भखावै ॥ ६ ॥
गच्छ मोटो खरतर गायो, महावीर पाट चल आयो रे।
सूरीश्वर श्रीजिनरंग रे, तसुशासन श्रावक चंग रे ॥ ७ ॥

---

१ किम २ घरि ३ भावइ ४ बडकण बीबीं बतलावइ ५ खाली नावइ

मंत्रीसर श्रीहंसराज रे, वड दातारां सिरताज रे।
पुण्यवंत महा परवीण रे, गुणरागी नइ धर्म लीण ॥ ८ ॥
समरथ सगलइ ही कामइ रे, तास भ्रात डुंगरसी नामइ रे।
भागचंद वडउ भागवंत रे, मन मोटइ लखमी कांत ॥ ९ ॥
दीपक सम राजदुवारइ रे, कुल आभ्रण सोभा धारइ रे।
तसु आग्रहि कीधउ एह, खंड बीजउ संपूरण तेह ॥ १० ॥
पाठक श्री ज्ञानसमुंद रे, गणि ज्ञानराज मुनीचंद रे।
गुरुराज तणै सुपसाया रे, मुनिलब्धोदय गुण गाया रे ॥ ११ ॥

॥ इति द्वितीय खण्ड सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीपद्मिनीचरित्रे ढाल भाषाबंधे उपाध्याय श्री ज्ञान समुद्र गणि गजेन्द्राणां शिष्यमुख्य विद्वद्राज श्रीज्ञानराज गणिवराणां शिष्य पं० लब्धिउदय मुनि विरचितं कटारिया गोत्रीय मंत्रिराज श्री हंसराज मं० श्री भागचंदानुरोधेन राणा श्री रतन सिंहलद्वीप गमन श्री पद्मिनी पाणिग्रहणं श्री चित्रकूट दुर्गागमन सम्बन्ध प्रकाशो नाम द्वितीय खंड ॥

राघव चेतन दिल्लीगमन साहि वारिधि यावत् गमनागमन सम्बन्ध प्रकाशनो नाम द्वितीय खंड २ (बड़ौदा प्रति)

तृतीय खण्ड

मंगलाचरण

दूहा

मात पिता बंधव हितु, गुरु सम अवर न कोय।
तिण हेतइं गुरु प्रणमतां, मनवंछित फल होय ॥ १ ॥
तिणकुं राग करी नमूं, इष्ट देवता आप।
खंड कहुं अब तीसरो, सुणतां टलै संताप ॥ २ ॥

पद्मिनी की पुनर्गवेषणा

अणख[1] बोल बीबी तणा, सुणि के आलिम साहि।
धमधमीयो कोप्यो घणो, अति अमरस मन मांहि ॥ ३ ॥
ततखिण व्यास बुलाइ नै, इम पूछै सुलतान।
सिंहलद्वीप विना अवर, पद्मणि आहीठाण ॥ ४ ॥
चावो गढ चीतोड़ छै, पहोवी मांहि प्रधान।
रतनसेन रावल[2] जिहां, राजै अमली माण ॥ ५ ॥
शेषनाग सिरमणी जिसी, तस घरि पद्मणि नारि।
लेई न सकै कोइ तिण, किम कहिइं अविचार ॥ ६ ॥
एवड़ो सिंहलद्वीप नो, फोकट कीध प्रयास।
गढ चीतोड़ किसो गजो, साहि कहै सुणि व्यास ॥ ७ ॥

---

१ नाजुक २ राणउ तिहां।

चित्तौड़ पर चढ़ाई

ढाल (१) राग—आसा सिन्धू
भणइ मन्दोदरी दैत्य दसकंध सुणि एह कड़खा री चाल

चढयो अलावदी साहि सबलै कटक,
सकज सिरदार भड़ साथ लीधा।
मीर वड़वीर रिणधीर जोधा मुगल,
सलह कारी सावता तुरंत कीधा ॥१॥च०॥
इन्द्र ने चंद्र नागेन्द्र चित चमकीया,
धड़हड़्यो शेप नें धरा धूजें।
लचकि किचकीचकरें पीठ क्रूरंमतणी,
हलहलें मेरु दिगदंत कूंजें ॥२॥च०॥
आवियो साहि चित्रोड़री तलहटी,
लाख सतवीस उमराव लीधा।
गाजती राजती जाणीइं गज घटा,
आप करतार नवी पार लीधा[१] ॥३॥च०॥
तरणि छिप गयो रयणि जिम तारिका,
खलकि खुरताल पाताल पाणी।
गुहीर नीसाण घन घोर जिम घरहरें,
हलहिवै वेग ल्यो हिंदुवाणी ॥४॥
गजां सिर धजां वहू नेज वाजां करी,
उरभि मुरभि रहें पवन वाधो।
हयवरा गेंवरां उमरा सांतरा,
आप करतार नवी पार लाधो ॥५॥च०

१ मसत गजराज गजगाह कीधइ

राण कुल भाण सुलतान आयो सुणी,
झटक दे कटक सहु सम्भ कीधो ।
मुँछ वल घालि वहू रोस भाखे रतन,
हलाहिव साहि नइं करां सीधो ॥६॥च०॥

भलां तुं आवियो मुझ मन भावीयो,
दूत रजपूत मूंकी कहायो ।
हूं हिजें साहि हुसीयार हिवें जाह मत,
भलां सिंघल थकी भाजि आयो ॥७॥च०॥

माहरा साथ रा हाथ हिवें देखज्ये,
ढीलिपति रहैं मति हिवैं ढीलो ।
भाजतां लाज तुझ कां ज आवै नहिं,
देखयो साहि मोटो अडीलो ॥८॥च०

कीयो गढ सांतरो नाल गोलां करी,
मांडीयां ढीकली अरहट्ट यंत्रं ।
धान पाणी घणा वसत संचा किया,
मिली[1] बुद्धिवंत करे वहु मंत्रं ॥९॥च०॥

तुरत[2] रा तीर जिम वेंण रावल[3] तणा,
सुणत परमाण पतिसाहि[4] रूठो ।
भभकति आग में जाणि घृत भेलीयो,
साहि कहे हलां करि सुभट रूठो ॥१०॥च०॥

---

१ महा मंत्रवी २ ततारा ३ राणा ४ सुलतान

कोट करि चोट उपाड़ि अलगो करो,
बुरज गुरजां करी करो हिवें भूक ।
ढाहि ढम ढेर गढ घेरि करि पाकड़ो,
करो हिवें बंदि दिन अंध घूक ॥११॥च०॥
करुँ मुख रगत युवगत आलिमधणी,
डारि दूयुं फूंकि थकी[1] गढ चीतोड़ ।
राण सुं पदमणी चिडी जिम पाकडूं,
कवण हिंदू करें हम तणी होड़ ॥१२॥च०॥

युद्ध वर्णन

होय हुसीयार हथीयार गहि ऊठीया,
मीर वड़ वीर रिणधीर रोसइं ।
सुणो पतिसाहि अल्लाह अब क्या करे,
देखि तुझ साथरा हाथ मोसें ॥१३॥च०॥
इम कहि मुगल सिर चुगल जिम मूंडीया,
धाय गढ कंगुरे आय लागा ।
पीठ परि रीठ पाथर[2] तणी पड पडै,
अडवडै लड़धड़ै भिड़ै आंगा ॥१४॥च०॥
भड़ा भड़ि भड़ा भड़ि नाल छूटै भली,
कड़ाकड़ि कूट वाजै कुठारा ।
तड़ातड़ि तड़ातड़ि सबद गढ ठावतां,
धड़ाधड़ि वाण लागै ऊठारा ॥१५॥च०॥

---

१ गढ सकल २ पाथर

भूंवीया लूंबीया मीर गढ ऊपरा[1],
गोफणा फण-फणा वहें गोलां।
गडा गड़ि गिर तणा गडागरि गिर पड़ै,
चड़ाचड़ि ऊछलै मुगदल्ल[2] रहो ला ॥१६॥
जालमी आलमी जोध मिलि भूभीया,
थरहरै धरा धमचक धूजी।
सरस संग्राम री ढाल ए पनरमी,
सुगुरुराज ग्यान 'लालचंद' वाजी[3] ॥१७॥च०॥

दूहा

एकण दिशि रावल[4] अनम्म, आलिमपति दिशि एक।
भभकारे[5] वेहुं सुभट, राखण रजवट टेक ॥१॥
खाणो दाणो पूरवै, रावल रण रंढाल।
भारथ में[6] योद्धा भिड़ै, रिणयोद्धा जिम काल ॥२॥
आलिम चिंता अति घणी, पदमणि पेखण प्रेम।
गढ हाथैं आवै नहीं, कहो हवै कीजै केम ॥३॥
दिल्लीपति दाखै इसौ, सुभटां नैं समभाय।
सहु तुमे हिव सामठा, जुड़ो[7] तुरंगां जाय ॥४॥
नेड़ा होय गढ:सु निपट, खोदो खानि सुरंग।
वुरजां तणा पुरजां करो, देशी धड़ा दुरंग ॥५॥

१ कांगुरे २ मूवल होला ३ वांची ४ रणढ अपुकारे ५ भड़ ६ रिन
७ जड़उ दुरंगे

ढाल (२) चरणाली चामुंडा रण चढ़े एहनी

साहि कहै सुभटां भणी, होज्यो हिवें हुसीयारां रे।
मरदानी मरदां तणी, देखेंगे इण वारो रे ॥१॥
रिण रसीयो रे अलावदी, मीर बड़ा रण-धीरो रे।
हलकारे हल्लां करे, मुगल मूंकी वड़धीरो रे ॥२॥ रिण०
मरण तणो डर कोई नहिं, मरना है इक वारो रे।
बहुत निवाज वड़ा करूं, द्युं बहु देश भंडारो रे ॥रिण०॥
दिल्ली अब दूरें रही, हिकमति[1] अब मति हारो रे।
रोड़ो इक-इक खेसतां, होय पाधर दरहालो रे ॥४॥ रि०॥
कुटका कोट तणा करो, खोदि करो खल खटो रे।
कूटे पाड़ो कांगुरा, नेड़ा होइ निपटो रे ॥५॥ रि०॥
निसरणी ऊंची करो, सुभट करो पैसारो रे।
आणो रावल[2] इण घड़ी, कुहण क्यासु गमारो रे ॥६॥रि०॥
तुरत उठ्या तड़भड़ि करी, सुणि के साहि वचनो रे।
मीर मुगल मसती हुआ, सलह[3] पहरी यतनो रे ॥७॥ रि०॥
धेठा होय ने धपटीया, दड़वड़ लागा[4] डागा रे।
वानर जेम विलगीया[5], लपटी गढ नें लागा रे ॥८॥ रि०
गणण गणण गोला वहै, जाणे[6] सीचाण अजाणो रे ॥
सगग सगग सर छूटतां, वगग वगग कूहकवाणो रे ॥९॥ रि०॥

---

१ हिम्मति २ राणउ ३ ओसण पहर कनन्न रे ४ जाणें ५ विलगिया
६ जाण सीचाणा जाणो रे

मारै मीर महाबली, ताके वाहै तीरो रे।
कूटे कोटनै कांगुरां, धुव[1] खंडै वड धीरो रे ॥१०॥ रि०॥
रिण रहीया हय हाथीया, कीधा जाणे कोटो रे।
रुधिर तणी रिण नय वहइ, सूर कमल दड[2] दोटो रे ॥११॥ रि०
आतसबाजी ऊछली गयणे घोर अंधारो रे।
आरा बे नर ऊछलै, जाणं सूरातन[3] रिण सारो रे ॥१२॥ रि०॥
नारद नाचें मन रुली, डिम डिम डमरू वाजें रे।
जोगणियां खप्पर भरें, रुहिर पीवै मन[4] छाजै रे ॥ १३ ॥ रि० ॥
डडकारा[5] डाकणि करै, राक्षस देवइ रासो रे।
रुंडतणी माला रचै, ऊमयापति उल्लासो रे ॥ १४ ॥ रि० ॥
सुर भणी सुरलोक स्युं, ऊतरै अमर विमाणो रे।
अपछर आरतीयां करइ, कामणि कंचन वानो रे ॥ १५ ॥ रि०॥
मुगल वसत लूंट घणी, माम कोठार[6] भंडारो रे।
माथें कीधी मेंदनी, हूओ गढ़ हाहाकारो रे ॥ १६ ॥ रि० ॥
हेरा करें डेरा हणों, राति वाहैं राजो रे।
मुगल घणा तिहां मारीया, सबल लूटाणा साजो रे ॥१७॥ रि०
सांझ लगें दिन प्रति लड़ैं, पिण कोई न सीझइ कामो रे।
फोकट मुगल मरावीया, आलिम चिंतै आमो रे ॥ १८ ॥ रि०॥
कल बला दोनउं जे करइ, तउ कारिज चढइ प्रमाणो रे।
'लालचंद' कहें साहि सुं बीस कहइं इम वाणो रे ॥ १६ ॥ रि०

---

१ ग्रीव पड़ै २ दल ३ सुत ४ मत धानैं रे, ५ ढड़डाटा ६ गोठि

कपट प्रपंच रचना

दूहा

छानो कोइक छल करो, मति प्रकासो मर्म्म।
कपटै वात करो इसी, जिम रहै सगली सर्म ॥ १ ॥
करो सुंस जेतै कहै, वोल वंध सवि साच।
हम मुसाफ उपारि है, विचलां नहिं वाच ॥ २ ॥
इम विचारि गढ मूंकीया, जे पाका परधान।
रावल[1] सुं इण परि कहै, करी तसलीम सुजाण ॥ ३ ॥
मेल करण हम मूंकीया, जो तुम मानो वात।
प्रीत वधें हम तुम प्रगट, सवही एह सुहात ॥ ४ ॥
दरस देखि पदमणि तणो, भोजन करि तसु हाथ।
आहीठाण गढ देखि नै, साहि चलंगे[2] साथ ॥ ५ ॥

ढाल (३) बात म काढो व्रत तणी ए देशी २ काची कली अनार की रे

तासु तणी वातां सुणी, वोलै राव रतनो रे। सुणि हो राजन्ना।
गढ तुम हाथ आव नहीं, जो करो कोड़ि जतनो रे॥ १ ॥ ता०
पाणी[3] वलतो ही पतीजीइं, जो उठावै मुंसापो रे।
सुंस करै मन सुध स्युं, छोडै सकल कलापो[4] रे ॥ २ ॥ ता०
वलि प्रधान इम वीनवे, सुणि हिन्दू पतिसाहो रे।
देश गाम दूहवां नहीं, दंड तणी नहिं चाहो रे ॥ ३ ॥ ता० ॥
राजकुमारी मांगां[5] नहिं, नहिं तुमस्युं दिल खोटो रे।
नाक नमणि हम[6] सुं करो, देखाड़ो चित्रकोटो रे ॥ ४ ॥ ता०

---

१ राणा २ चलें ले ३ पिण जउ मेल करइ [illegible] रेतौ, मह [illegible] मसाफ ४ खिलाफ ५ परणउ ६ जउ तुम।

मैं अपणा कृत कर्म सुं, असुर कुले अवतारो रे।
पूरव पुण्य प्रमाण सुं, तूं हिंदूपति सारो रे ॥५॥ता०॥
जीव एक काया जूई, तूं पूरव भव मुझ भ्रातो रे।
हम तुम सूं मेलो हुओ, वैठि करइं दोय वातो रे ॥६॥ता०॥
हरख वहुत हमकुं अछै, भोजन पदमणी हाथो रे।
दीदार पदमणी देखियै, ओरण चाहै आथो रे ॥७॥ता०॥
पाछै[1] दिल्ली कुं चलें, हम तुम होय सनेहो रे।
तव रावल[2] तिणसुं कहै, जो नवि जोर करेहो रे ॥८॥ता०॥
तो नचिंत पावधारिइं, लसकर थोड़ो लेइ रे।
आरोगो आणंद सुं, हम घर प्रीति धरेइ रे ॥९॥ता०॥
साहि भणी वातां सहु, जाय कहै परधानो रे।
सुंस सपति[3] निज वांह सुं[4], झूठै मनि सुलतानो रे ॥१०॥

श्लोक—मुखं पद्मदलाकारं, वाचाचंदन शीतलं।
हृदयं कर्त्तरी तुल्यं, त्रिविधं धूर्त्त लक्षणम् ॥१॥

राघव मंत्र[5] उपाईयो, रावल झालण काजो रे।
छेतरवा छल मांडियो, साहि कीयो वहु साजो रे ॥११॥ता०॥
घरभेदू राघव मिल्यो, सामिधरम दियो छेहो रे।
वरभेदू थी घर रहै, खोवै पणि घर तेहो रे ॥१२॥ता०॥
घर भेदइ लंका गई रेहां, रावण खोयो राज ।सु०
वररउ उंदिर दोहिलउरेहां, सुगम अवर मृगराज ॥१३॥

१ पीछे दिल्ली कुच डेरहों २ राणौ ३ सर्वादि ४ दुयइ ५ कीघट मंत्रणठ, राणा।

सुलतान का चित्तौड़ प्रवेश

पोलि उघाड़ी गढ तणी, सरल सभावें राणो रे।
मुंक्या तेडण[1] मंत्रवी, वेग[2] पधारो सुलतानो रे ॥१४॥
तीस सहस लोह लुंबीया, ले पैठो सुलतानो रे।
समचा सुंते[3] संचर्या, जाण पड़ि नहिं राणो रे ॥१५॥
देखवा कोतिक मिल्या तिहां, नरनारी जन वृंदो रे।
पिण किणहि जाण्यो नहिं, दिलीपति रो छंदो रे ॥१६॥

सुप्त गुप्तस्य दम्भस्य, ब्रह्माप्यंतं न गच्छति।
कौलिको विष्णु रूपेण, राजकन्या निसेवते ॥२॥

कपट कोई नवी लिखी सकै, जो करी जाणै कोई रे।
'लालचंद' मुनीवर कहै, पिण भावी हुइ सो होई रे ॥१७॥

दूहा

आया दीठा सामठा, आलिम सुं असवार।
खुणस्यो मन मांहि खरो, रावल जी तिण वार ॥१॥
बूलाया आया तुरत, सझ[4] कीयांह सुभट।
दल वादल आई मिल्या, हिंदू मुगलां थट ॥२॥
दिलीपति ढीलो हुवो, पहुंचे कोई[5] न पाण।
अचरिज[6] आसंगी न सकै, बोलै एहवी वाण ॥३॥
कांहे कुं मेलो कटक, खोटो म करो खेद।
हुं लड़वा आव्यो नहीं, नहिं छै को छल भेद ॥४॥

---

१ मोटा २ पाउ धारउ ३ सब ४ सदनी किये ५ न को उपाय
६ आसंग सकै न कोइ किण, आलम खेलट दाव।

कोतिग देखी गढ तणो, हुं जास्युं निज ठाम।
वली रावल जी इम कहै[1] सुणि दिलीपति साम ॥५॥

ढाल (४)

१ तिण अवसर वाजै तिहां रे ढंढेरा नो ढोल ए देसी
२ मेवाड़ी दरजणी री ढाल

एतला[2] आण्या सा भणी रे, तीस सहस असवार।
विण कारण वानर जिसा रे, माता मुगल जे इणवार रे ॥१॥
धुरत दिल खोटा रे, काइं रे तुं साहिब मोटा;
वाचा चूको रे, आलिम वाचा चूको। आंकणी।
चूक कियो तो चूरस्युं रे, सेक्या पापड़ जेम रे।
पीसी न्हांखुं पलक में रे, आटा में सिंधव जेम रे ॥२॥धु०॥
हलकारै[3] हलकां करी रे, ऊठै सुभट अपार।
सार मुखैं तिल तिल करै रे, एकेको एक हजार ॥३॥धु०॥
गढगंजन सुभटां भणी रे, तनक हुकम ह्वै मुझ।
तो[4] चिड़ीया जिम पाकड़ै रे, ए तीस सहस दल तुझ रे ॥४धु०॥
आलिमपति इम चितवै रे, राय सुणो अरदास
निज घरि आया प्राहुणा रे, कहो किम कीजै उदास रे ॥५ धु०॥
सगतै केम सत्ता करो रे, कांय पचारो पाण।
थोड़ा ही होवै घणा रे, लीज्यें फेलि महमान रे ॥६॥धु०॥

१ वदइ २ एतइ ३ हलकारंतां हेक नइ रे ४ चिढियां री परि।

राणा का आतिथ्य

हम जीमवा आया हुँता रे, नहिं लड़वानो काज।
घणो मामलो कांय नहीं रे, आज सुभक्ष सुं हगा नाज रे ॥७॥
जीमतां जो आणो अछो रे, खरच तणो मनि खेद।
कहो तो फिर पाछा फिरां रे, ते भाखो हम सुं भेद रे ॥८॥
भणइ रावल आलिम भणी रे, भलै पधार्या साहि।
बीजा बोलावो वले रे, जीमवा नी सी परवाह रे ॥९॥
ओछा बोल न बोलीइं रे, दिल में राखी योग।
बोल बोल वेऊं हस्या रे, हाथ देई तालि जोग रे ॥१०॥
मांहो मांहि मिलि गया रे, सबल हुओ संतोप।
दोप सहु दूरे किया रे, राख्यो रावल रो तोप रे ॥११॥
रावल भगति भोजन तणी रे, सहूअ कराई सज्ज।
रूड़ी व्यंजन रसवती रे, आरोगण आलिम कज्ज रे ॥१२॥
पदमणि सुं प्रीतम कहै रे, खरी धरी मन खंति।
जिण विधइं जस रस रहै रे, भोजन दीजइ तिण भंति रे ॥१३॥
प्रीतम सुं पदमणि कहै रे, हुँ नहिं परसुं हाथ।
मो सम दासी माहरी रे, ते परसस्यैं दिल्लीनाथ ॥१४॥
मानि वचन महाराय जी रे, सिणगारी जव दासि।
काम तणी सेवा जसी रे, रूपे रंभा गुण रासि रे ॥१५॥
खांति करी खिजमति करें रे, आसण बैसण देइ।
साख[1] तिहुँ सावती करी रे, तेड़इं दिल्लीपति तेइ रे ॥१६॥

---

१ साखित राहु।

हरखित चित आवै हिवै रे, दिलीपति सुलतान।
'लालचन्द' मुनिवर कहै रे, सुणयो हिव चतुर सुजान रे॥१७॥

दूहा

ऊंचा अमर विमाण सा, मोटा महैल अनेक।
गोख झरोखा जालियां, धोल ति शुद्ध विवेक॥१॥
सरग मृत्य पाताल सव, सुन्दर वन आराम।
चात्रक मोर चकोर वहु, चितरीया चित्राम॥२॥
कनक थंभ कलसे करी, मंडित मोहण गेह।
झिगमगि ज्योति जड़ाव की, चलकती चन्दरुएह॥३॥
रंगित मंडप मांहि हिव, जाजिम लांवी जेह।
वारु करै वीछामणा, मोल घणा छै जेह॥४॥
मोखमल मोटा मोल रा, पंच रंग पटकूल।
जरी कथीपा जुगति सु, सखर विछावै सूल॥५॥
तरहदारविण मइं ठव्यो, सिंहासण तिण[1] वार।
माणिक मोती लाल वहु, जड़ीया रतन अपार॥६॥
तिहां आवी वैठा तुरत, सवल साथ सु साहि।
चिंतइ मानव लोक में, आणी भिस्त अल्लाह॥७॥

भोजन सत्कार

ढाल (५) अलवेल्या नी

पहरी पटोली पांभड़ी रे लाल, दासी सुन्दर देह; मन मान्या रे
एक आवी आसण ठवै रे लाल, रूप अधिक गुण गेह; मन०॥१॥

---

१ मुखकार।

भोजन भगति भली करै रे लाल, सुंदर रूप अचंभ। मन०
दासी पदमणि सारखी रे लाल, रूपैं जांणें रंभ। मन० ॥२॥
सोवन झारी जल भरी रे लाल, कनक कचोला थाल। मन०
ले आवै भावै घणे रे लाल, कामणि अति सुकमाल। मन० ॥३॥
नाना व्यंजन नव नवा रे लाल, चतुर समारया चाख। मन०
खाटा मीठा चरपरा रे लाल, रूड़े स्वादें राखि। मन० ॥४॥
आंवा नींबू कातली रे लाल, मांहि बूरो मेलि। मन०
कूंकणीया केलां तणी रे लाल, कीज्ये ठेला ठेलि। मन० ॥५॥
नीली चउला नी फली रे लाल, काकड़िया कालिंग। म०
काचर परवर टींडसी रे लाल, टींडोरी अति चंग। म० ॥६॥
मुंगवड़ी पेठावड़ी रे लाल, खारावड़ी मन खंति। मन०
डबकवड़ी दाधावड़ी रे लाल, व्यंजन नाना भंति। मन० ॥७॥
राय डोडी राजा दनी रे लाल वली खुरसाणी सेव। मन०।
दाडिम दाख सोहामणा रे लाल, खरबूजा स्युं टेव। मन० ॥८॥
खांति समारया खेलरा रे लाल, राईता ईमेलि। मन०
घोलवड़ा कांजीवड़ा रे लाल, माट भरया छै ठेलि। मन० ॥९॥
कारेली ने काचरा रे लाल, तली मूंफी घृत संगि। मन०
पापड़[1] एरंडकाकड़ी रे लाल, सीरावड़ीय सुचंग। मन० ॥१०॥
मोठ मठर चूंला फली[2] रे लाल, छमकारया देइ वघार। मन०।
मुंल फूल फल पानड़ा रे लाल, अथाणा[3] सुलकार। मन० ॥११॥

१ पाखड़ फड़र २ छिणा ३ संधाणा

सुंदरि परूस्या सालणा रे लाल, हिव पकवाने हूंस । मन० ।
खारिक निमजा खोपरा रे लाल, प्रीसतां रूड़ी रुंस ।मन०।१२॥

दाख विदाम चिरुंजीया रे लाल, मेवा सगली जाति । मन० ।
खाजा ताजा खांडरा रे लाल, घेवर घूरो घाति । मन० । १३ ॥

सखरा लाडू सेवीया रे लाल, मोती मनोहर जाति[1] ।मन०।
घेवर [2]वड़लां हेसमी रे लाल, पैंड़ा[3] कंद बहुभांति[4] ।मन० ॥१४॥

पेंडा[5] डीडवाणा तणा रे लाल, पूड़ी[6] लापसी तेर ।मन०।
मुह्म तणीअ तिलंगणी रे लाल, जलेवी बीकानेर[7] । मन०॥१५॥

पहुआवर धनपुर तणा रे लाल, गुप चुप गढ ग्वालेर ।
करणसाही लाडू भला रे लाल, वारु बीकानेर ॥१६॥

बयानइ रा नीपना रे लाल, गुदवड़ा गुणखाण । म०
[गुंदवड़ा पाया तणा रे लाल, आंबा रायण आण ।मन०।]

रुस्तक रा दाणा भला रे लाल, गुंदपाक सुख खाण ।मन०१७॥

सीरा फीणी सूँहालीयां रे लाल, साबूनी सुखकार । मन० ।

इन्द्रसा नैं दहीथडा रे लाल, इम पकवान अपार ।मन० ॥१८॥

रायभोग गरड़ा तणी रे लाल, साठी सखरी सालि ।मन०।
देव जीर परुसै भला रे लाल, दिल मानैं ते दालि । मन०॥१६॥

मूंग मोठ तूअर तणी रे लाल, राती दाल मसूर ।मन० ।
उड़द चिणा ऊपरि घणा रे लाल, सुरहा घृत भरपूर ।मन०॥२०॥

---

१ रूप २ वावरह समी ३ केला ४ रूप ५ गट्टा ६ पेंडा नागपुरीय
७ गुपचुप गढ ग्वालेर; जलेबी सुं जीय

भोजन री मुगलें भली रे लाल, कीधी झाड़ा झाड़ि ।मन०।
उपरि गौरस आथणी रे लाल, परुसैं पदमणि मांड ।मन० ॥२१॥
चलू करी मूंछण दीया रे लाल, लूंग सुपारी पान । मन० ।
'लालचंद' कहै सांभलो रे लाल, तुरक करैं अति तान ।मन०॥२२॥

दासी के सौन्दर्य पर मुग्ध सुलतान को राघव चेतन का पद्मिनी दिखाना

दोहा

ज्युं ज्युं दासी नव नवी, सझि आवइ सिणगार ।
देखि देखि चित चमकीयो, आलिम भोजन वार ॥ १ ॥
रूप अनूपम रंभसम, उवा पदमी कहै याह ।
वार वार विह्वल थको, जंपै आलिम साहि ॥२॥
एक नहीं अम घर ईसी, कैसा हम पतिसाहि ।
याकै एती पदमणी, देखत उपजै दाह ॥३॥
वार वार झवखो किसुं, राघव बोलै एम ।
ए दासी पदमिणी तणी, आप पधारइ केम ॥४॥
चुंप दे कै देखो चतुर, विचली म करो वात ।
सहस दोय सहेलीयां, रहै संग दिन राति ॥ ५ ॥

ढाल (६) हंसला ने गलि घूघरमालकि हंसलउ भलउ, ए देशी

व्यास कहै सुणि साहिबा, पदमणि नो है साचो सहिनाण कि ।
काची कंचन वेलसी, नहिं रूपे है एहवी इंद्राणि कि ॥ १ ॥
झवकै जाणै वीजली, अंधारै है करती उजालकि ।
भमर सदा रुणझुण करइं, मोहा परिमल है नवी छंटै पास कि
॥२॥सुन्दरि भली ।

ते आवी न रहइ छिपी, जे मोहइ हे त्रिभुवन जन मन्न कि। सुं०
खिण विरहउ न खमि सकइ,
जतने करि राखइ राणउ रतन्न कि। सु० ।३।
(राणो) रात दिवस पासे रहै, धन्य देखे हे एहनो[1] आकार कि।
साहि कहै सुणि व्यास जी,
किण विधसु[2] हे देखै दीदार कि। सु० ॥४॥
व्यास कहै सुणि साहिवा[3] अति ऊँचो हे पदमणि आवास कि।
मुजरो कोई पामे नहिं,
रावल ही हे लहै भोगविलास कि। सु० ॥५॥

कवित्त

लाख दस.लहै पलिंग सोड़ि तीस लख सुणीजैं
गाल मसूरया सहस सहस दोय गिंदूआं भणीजैं ॥
तस उपरि मसोड़ि[4] मोल दह लखे लीधी।
अगर कुसम पटकूल सेझ कुंकम पुट दीधी ॥
अलावदी सुलतान सुणि विरह व्यथा खिण नवी खमैं।
पदमणि नारि सिणगारि करि रतनसेन सेझां रमैं ॥१॥

ढाल तेहीज—

जे देखइ पदमिणि भणी, ते गहिलो हे होवे गुणवंत कि। सु०
मान गलइ बहुनारि ना, इम बातां हे वे करि बुधवंत कि। सु०६

१ ए रति रूप उदार कि २ करि हे इम होइ० ३ सामिजी ४ दोवड़ि

इण[1] अवसरि पदमणि कहै,
सहीयां देखा हे केहवो पतिसाहि कि । सु० ।
जाली में मुख घाली नै,
गयगमणी हे देखै मन उच्छाह कि ॥७॥ सु०॥
ते देखी व्यासैं तिसैं तव वोले हे देखो सुलतान कि ।सु० ।
रतन जडित जाली विचइ,
वइठी वाला हे गुणवंत सुजान कि । सु० ॥८॥
तुरत देखी ने पदमणी, वोलइ आलम हे नागकुमारि कि । सु० ।
भद्र कि नाथा रुकमणी,
किन्नर किन होय अपछर नारि कि ॥९॥ सु०॥
वाह-वाह वे पदमणि ऐसी नहीं हे इन्द्र घरि इन्द्राणि कि । सु०
या कइ अंगूठा समि नहीं,
नारी हे जगि मांहि सुजाण कि । सु०॥१०॥
देखी आलिम अचरिच थयो,
नहि एहवी नारि संसारि कि । सु० ॥११॥
किती वात याकी कहौं,
मुझ मन हे मृग पाड्यो प्रेम पास कि । सु० ।
मुरछित हो धरणी पड़यो,
वलि मूंके हे मोटा नीसास कि सु० ॥१२॥
व्यास कहै सुणि साहिवा, स्युं खोवै हे फोकट निज सासि कि ।
और वुद्धि[2] इक अटकलां,
तव लगे हे मन धीरज देउ रासि कि । सु० । ॥१३॥

---

१ तिण २ कोई वुधि

जो रावल जिम तिम करी, पकड़ीजे हे तो पहुँचे मन[1] हूँस कि।
आलोची मन आपण, धीरज धरि हे मन पूरै हूंस[2] कि ॥सु०॥१४॥
केसरि चन्दण कुमकुमा, छंटीज्ये हे कीज्ये रंग रोल कि । सु० ।
वारू दीध पहिरावणी,
हय गय रथ हे आभरण अनेक कि । सु० । ॥१५॥
भगति जुगति राणइ भली, संतोष्या हे सकल राय राण कि। सु०
लालचंद कहि सांभलउ,
अस बोलइ हे सइंमुखि सुलतान कि सु० ॥१६॥

दूहा

बाँह झालि सुलतान कहैं, राय सुणो महाराउ ।
महमानी तुम बहुत की, अब हम गढ़ दिखलाउ ॥१॥
रतनसेन साथे हुओ, विषमी विषमी ठोड़ ।
देखायो सुलतान ने, फिरि-फिरि गढ चीत्तोड़ ॥२॥
विषम घाट वांको घणो, देख्यां छूटै गरब ।
खोट नहीं किण बात नो, साज सांतरो सरब ॥३॥
कीज्यें कोड़ि कलप्पना, तोहि न आवै हाथ ।
इम विचारी आपणें, इम जंपे दिल्ली नाथ ॥४॥
काम काज हम सुं कहो, बंधव जीवन प्राण ।
बहु भगति तुम हम करी, अब सीख[3] मांगे सुलताण ॥५॥
एम कही बगसै बसत, आलम बारम्बार ।
कनक रतन माणक जड़ित, आभ्रण शस्त्र अपार ॥६॥

---

१ आणकि २ जीमिया धान ३ विदा देहु महाराण

आलिम कहै ऊभा रहो, करयो मया सदीव ।
रावल कहै आगे चलो, ज्युं सुख पावं जीव ॥६॥
ईम कहि गढ बारणे,[1] संचरीयो महाराव ।
खुरसाणी खोटे मनै, देखैं दाव उपाव ॥७॥

राघव चेतन की कुमंत्रणा

ढाल (७)

राग-मारु. १ पंथी एक संदेसड़ो, २ कपूर हुवे अति ऊजलोरे एदेसी
व्यास कहै नहिं एहवो रे, औसर लहस्यें ओर ।
कहस्यो पछै न कह्यो किणै, थे मति चुको इन ठोर ॥१॥
साहिवजीथे मानल्यो मारी वात, वलि एहवी न पायवी घात ।
सुनि सुलतान मन चिंतवै रे, साच कहे छै एह ।
अवसर चूक गमाड़ियो, मोल न लहीइ तेर ॥२॥ सा० ।
हुकम कीयो हझां करी रे, विचल्यो साह वचन्न ।
जूझारे जाइ झालियो रे, कपटइ राण रतन्न ॥३॥ सा०॥

राणा की गिरफ्तारी

हम महिमानी तुम करी रे, अब तुम हम मेहमान ।
पेशाकशी पदमणी कीयां, हिवैं छूटेवो राजान ॥४॥सा०॥
साथे सुभट हुंता तिके रे, तेह हुआ मति मंद ।
हिकमति[2] कांइ न केलवी, राय पड़यो वहु फंद ॥५॥सा०॥
चेड़ी घाली वेसाणीयो रे, राह ग्रह्यो जिम चंद ।
जोरो कोई चालीयो, सिंह पड़यो जिम फंद ॥६॥सा०॥

---

१ बाहिरै २ हिम्मति

गढ ऊपरि वार्ता गई रे, हलहलियो हिंदुआंन ।
गढपति झाल्यो आपणो जी, कीज्यें केहोपान ॥७॥सा०॥
गढनी पोलि जड़ाइ नइंरे, मिल्यो कटक गढ मांहि ।
लोक सहु कहै राय जी, मुरिख अकलि सुनाह ॥८॥सा०॥
कांई कीयो कपटी तणों रे, असुर तणो वीसास ।
राय ग्रह्यो हिव पदमणी ने, गढनो करसी ग्रास ॥६॥सा०॥
आय बैठो सुभटां विचै रे, वीरभाण वड़ वीर ।
आलोचै मिल एकठा जी, सूर सुभट रिणधीर ॥१०॥सा०॥
एक कहै गढ में थकां रे, सबलो करो संग्राम ।
एक कहै रूड़ो हुवै रे, राति (दिवस) वाहें काम ॥११॥सा०॥
टाणो न मिले जूझतां जी, संकट मांहि सामि ।
एक कहै नायक विना जी, न रहै जूझयां मामि ॥१२॥सा०॥

हतं ज्ञानं क्रियाहीनं, अज्ञानं च हतं नरं ।
हतं निर्नायकं सैन्यं, अभर्त्तारि स्त्रियो हतं ॥१॥

सबलां सुं जोरो कीयां रे, कारिज न सरै कोय ।
कहै एक मरवो अछे जी, ज्युं भावै त्यूं होय ॥१३॥सा०॥
मूंआं गरज न का सरै जी, छल विण न सरै काज ।
'लालचन्द' छल वल कीयां जी, अविचल पामै राज ॥१४॥

चितौड़ दुर्ग में शाही दूत द्वारा पद्मिनी की मांग

दूहा

मिलि मिलि मोटा मंत्रवी, सूर सुभट रजपूत ।
इण विधि आलोचै तिसै, आयो आलिम दूत ॥१॥

आलिम[1] आया दूत वे, वूलाया देइ[2] मान।
आलिम साहि तणा वचन, ते परकासै परधान ॥२॥
आलिमसाहि अलावदी, मूंक्या करिवा प्रीति।
मानो जो ए मंत्रणो, तो रंग वाधइ वहु प्रीति ॥३॥

ढाल (८) मेवाड़ी राजा रे चीत्रोड़ो राजा रे, एहनी—

मुझ[3] मानो वातां रे; जिम होवै धाता रे;
वले एहवी रे घातां घांतां दोहरीं रे ॥ १ ॥
साहि पदमणि तेड़े रे, तुम राजा छोड़ै रे;
वहु कोडै कर तोड़ै वेड़ी लोहनी रे ॥ २ ॥
गढ कोट भंडारा रे, धन सोवन तारा रे;
हय गेवर सारा माणिक जवहरु रे ॥ ३ ॥
अवर[4] नहिं मांगै रे, तुम देश न भांगै रे;
मांगे मन रंगे पदमणी मनहरु रे ॥ ४ ॥
मन मांहि विचार रे, वहु जूझ निवारै रे;
जो तुम देस्यो नारी सारी पदमणी रे ॥ ५ ॥
तो देस्यो राजा रे, धन मानै ताजा रे,
नहिं छूटण इलाजा वीजा तुम धणी रे ॥ ६ ॥
जो वातें सीधी रे, राणी नवि दीधी रे;
तो छोडैं गढ तोड़ैं नाखुं ईण घड़ी रे ॥ ७ ॥
भांजे तुम देस्यां रे, भांगी टूक[5] करेस्यां रे;
तुम राज हरेस्यां तुम सेती लड़ी रे ॥ ८ ॥

---

१ तिहां ने तेड़ो मूंकि नै २ बहुमान ३ तुम ४ अलग ५ भकभूर

ईम भाखी चाल्या रे, परधाने पाल्या रे;
　　वांहे करि झाल्या आल्या धन वहू रे ॥ ९ ॥
हम सिर तुम खोलै रे, वीरभाण इम वोलै रे;
　　हम गढ तुम ओलैं राय राणी सहू रे ॥ १० ॥
आलोची रातें रे, कहस्यां परभातै रे;
　　जातं रहवातै सुख हम तुम सही रे ॥ ११ ॥
पाउधारेंउ डेरै रे, आलिम पंति हेरै रे;
　　विसटालुं चर[1] पाछा फिरै इम कही रे ॥ १२ ॥
आलोचइं केड़ै रे, न हुंता जे डेरै[2] रे,
　　आंघा ले तेड़ै हेडै स्युं होसी रे ॥ १३ ॥

पथविचलित वीरभाण

आलिम अडीलो रे, किण ही परि ढीलो रे,
　　होवे न रढीलो तुरक गयो गुसे रे ॥ १४ ॥
जो दीज्यैं राणी रे तो न रहै पाणी रे;
　　विण दीवे गढ जाणी हाणि होवै पछै रे ॥१५॥
जोरें जो लेसी रे, वहु[3] वंद करेसी रे,
　　तो कांइ नव रहसी रजवट जे अछै रे ॥ १६ ॥
आ पदमणी दीज्यैं रे, घर सुत संधीजे रे,
　　विण दीधां वंधीजे, छीजै जन घणो रे ॥ १७ ॥
कोई वोल्यो वाणी रे, ए मुँकी अडाणी रे,
　　राणी धर लीजे राणो आपणो रे ॥ १८ ॥

---

१ नर २ नेड़ै ३ वलि

वीरभाण विचारइ रे, मन वैर संभारइ रे,
इण सोहाग उतास्यो मुझ माता तणो रे ॥१९॥

जो परही दीज्ये रे, सहिजइ छूटीज्ये रे,
कीज्यें न विलंभ इण वातें घणो रे ॥ २० ॥

सुभट समझावै रे, ए वात सुणावें[1] रे,
सगला सुख थावै जउ दीजइ इणें रे ॥ २१ ॥

किणही मनमानी रे, भलीय न जाणी रे, सुभटां ने न सुहाणी रे
विण नायक न ताणी बोल कह्यो किणे रे ॥२२॥

यस्मिन्कुले यत्पुरुषः प्रधानः सएव यत्ने न हि रक्षणीय ।
तस्मिन विनष्टे सकलं विनष्टे नानाभि भंगे त्वरकावहंति ॥

मन दुरमत[2] आवी रे, सगलां मन[3] भावी रे,
वीरभाण सोहावी[4] भावी जे हुवें रे ॥ २३ ॥

सगलां ही विचारी रे, परभाते नारी रे,
दीज्यै निरधार उठि ईम कहै रे ॥ २४ ॥

सुणि पदमणी सोचै रे, नयणे जल मोचें रे,
परधाने पोचे मन में खलभली रे ॥ २५ ॥

सुभटां सत हास्यो रे, राय वंधास्यो[5] रे,
अम काज विचास्यो भव हारण चली रे ॥२६॥

१ थणावै २ दुर्थीनी ३ समचावी रे ४ सोहावीजै सही रे ५ वंदि पधार्यो रे

पद्मिनी का स्वावलम्बन

किण सरणें जाऊं रे, दीन भाप सुणाउं रे,
सतहीण न थाउं मन कीज्ये खरो रे ॥ २७ ॥
ए सुभट कुजीहा रे, सी कीजइ ईहा रे
मुख असुर न पेखउं जीहा खण्डि मरउं रे ॥२८॥
समझी मन सेती रे, खत्री धर्म खेती रे,
मन[1] धीर धरेती जिम एती सती रे ॥ २६ ॥
सीता ने कुंती रे, द्रोपदि बहु भंती रे,
लही संकट[2] न सील चूकी रती रे ॥ ३० ॥
सत सील प्रभावइ रे, दुख नइ मउनावइ रे,
बहु आणंद बधावइ, दिन रयणी गरबइ रे ॥३१॥
हिवें[3] सील प्रभावें रे, सुणयो मन भावै रे,
मुनि 'लालचन्द' गावै पावै सुख ध्रुवें रे ॥ ३२ ॥

वीर गोरा के घर पद्मिनी गमन

दूहा

गोरो रावत तिण गढें, बादल तस भत्रीज।
बल पूरा सूरा सुभट[4], खत्री धर्म (राखै) तेहीज ॥१॥
तजी सेवा रावल[5] तणी, किणही कुबोल विशेप।
चाकर गयर थका रहें, गास गोठ तजि रेख ॥२॥

---

१ बहु २ कष्ट न चूकइ सत एका रती रे ३ सत ४ बिहुं,
५ श्री राण नी।

जेहवै ते जाता हुता, अवर ज सेवा कर्म ।
तेहवें गढ रोह्यो हुवउ, रहिया खत्रीवट धर्म ॥३॥
गांठि खरच[1] खाता रहै, अभिमानी वड़ वीर ।
गढ रोह्यो किम नीसरै, पर दुख काटण[2] धीर ॥४॥
एहवा नें पूछै नहीं, न्याय हुवे तो केम ।
पंडित नै आदर नहीं, मूरख सुं वहु प्रेम ॥५॥

ढाल (६) एक लहरीले गोरिलारे-ए देशी

गढ नी लाज वदै घणीरे, गोरो वादल राउरे ।
ते सुणीया मोटा[3] गुणी, वुद्धिवंत सूर साहाउरे ॥१॥
गढ नी लाज वदै रे । ॥आं०॥

चित सुं एहवो चिंतवै रे, चालि पढी चकडोलो रे ।
साथ सहेली नें भूलरै रे, ते गई गोरा नी पोलो रे ॥२॥ ग०॥
बैठो दीठो वारणै, गोरोजी गात गयंदो रे ।
हरपित मनि पदमणी हुवें, ए दूर करेसी दंदो रे ॥३॥ ग०॥
सामो धायो उलही, प्रणमें पदमणी पायो रे ।
मया करी मो ऊपरै रे, गोरिल वोलै माय रे ॥४॥ ग०॥
आज दिवस धन्य माहरो रे, आवी आलतुआ नें गंगो रे ।
पवित्र थयो घर आंगणो, अधिक पवित्र मुक्त अंगो रे ॥५॥ग०॥
काज कहो कुण आविया, माताजी मुक्त आवासो रे ।
तव वलती पदमणि कहै, अवधारो अरदासो रे ॥६॥ ग०॥

१ गरथ २ कातर ३ पदमिणी ।

सुभटें सीख दीधी[1] सहु रे, खोई खत्रीवट लीको रे।
असुरां घरि अमनें मोकलै, कुमतीयां लाज कितीको रे ॥७॥ग०॥
सीख द्यो हिव मुझ नै, आई छु[2] इण कामो रे।
ग्यान किसै मुझ नें गिणै, कहै गोरा इण गामो रे ॥८॥ग०॥
खरच न खावां केहनो, कोई न पूछै कासो रे।
तोपिण हिव चिंता तजो, आया जो इण ठामो रे ॥९॥ग०॥
अलगो भय असुरां तणो, हुओ हिव मात निचिंतो रे।
जाण्या सुभट वडा जिके, जिण दीधो एह कुमंतो रे ॥१०॥ग०॥
वर मरवो इण वात थी, राणी देई राओ रे।
छूटावीज्यें एहवो, सुभट न खेलै डाओ रे ॥११॥ग०॥
करसी ते जीवी किसु, थाप्यो जिण ए थापो रे।
कर जोड़ी राणी कहै, इण घरि एह अलापो रे ॥१२॥ ग०॥
खोयो राय गढ खोवसी, इण बुद्धि सारू एहो रे।
तिण तुझ हुं सरणो तकी, आई छुं इण[3] गेहो रे ॥१३॥ ग०॥
सिंह तणो स्यो स्यालीइ, कारिज करे समारो रे।
गज पाखर गजस्यु चलै, भींत निवाहै भारो रे ॥१४॥ग०॥
ए कारिज तुम स्युं हुवें, तूं हिज वीड़ो झालि रे।
सुभट वड़ो तुं माहरोरे, दोहरी वेला में ढालि रे ॥१५॥ग०॥
सुणि माता सुभटां वड़ो, गाजण थो मुझ भ्रातो रे।
तस सुत बादल तेहनें, पिण पूछीजे वातो रे ॥१६॥ग०॥

---

[1] देइ [2] इतरइ [3] हिव।

गोरा के साथ बादल के घर जाना

बेऊ चाली आविया, बादल नै दरबारो रे ।
विनय करी नें बादले रे, आय कीध जुहारो रे ॥१७॥ग०॥
पूछै कारिज पय नमी, कहो आया किण काजो रे ।
'लालचंद' कहै[1] तस अखीइं, जस[2] मुख हुवे लाजो रे ॥१८॥ग०॥

दूहा

गोरो कहै बादल सुणो, पदमणि साटै राय ।
छूड़ावीज्यै एहवो, सुभटे कीयो उपाय ॥१॥
ते ऊपरि ए पदमणी, आई आपां पासि ।
स्युं करिवो सूधो मतो, वेवो कहो विमासि ॥२॥
सरम छोड़ी बैठा सुभट, आपे अछां उदासि ।
छोड़ी दीधो रायनो, गाम गोठि तजि[3] ग्रास ॥३॥
लाजत छै नीची दियां, कुल खत्री धर्म सार[4] ।
डीलै दोय आपां सुभट, आलिम कटक अपार ॥४॥
किण विधि जीपीजइ किलो[5], ते भाखो भत्रीज ।
तिणए[6] आवी तुम कन्न, पदमणि आपहीज ॥५॥

ढाल (१०) नाहलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे. ए देशी । राग-मारू
पदमणि बोले वीरा बादलारे, सुणि मोरी अरदास ।
हुं सरणागति आवी ताहरै, सांभलि तुझ जसवास ॥१॥पद०॥
हिव आधार छै एक तुम तणो रे. दोहरी पेला दाखि ।
सगति न हुवै तो सीख द्यो. राखि सकै तो राखि ॥२॥पद०॥

---

१ तसु दाखीय २ जेहनइ ३ जे ४ भार ५ एकिलो ६ जिसके आगे तुम्हारे पास

महितर पाछे मन जाण्यो करूं रे, देखुं छुं तुम वाट ।
सील न खंडुं जीभड़ी खंडस्युं रे, कै नांखुं सिर काट ॥३॥पद०॥
पच्छिम ऊगै रवि पूरव थकी रे, वारिधि चूकै ठीक ।
जलणी जलुं कै जल मैं पडुं रे, पिण नहु लोपुं लीक ॥४॥पद०॥
एक वार आगै पाछै सही रे, इण भव मरवो होय ।
तो स्युं करुं हिव जीव नै रे, एक भव में हुवै दोय ॥५॥पद०॥
जउ उदयागत आवइ आपणइ, पूरव कृत पुण्य पाप ।
विण भोगवियां ते नवि छूटियइ, करतां कोड़ि कलाप ॥६प०॥
किण जाण्यो थो एहवा कष्ट में रे, पड़सी रतन[1] पडूर ।
पिण एहवी भावी वणी रे, जेहवो कर्म अंकूर ॥७॥प०॥
सिंहल देश किहां दरिया परै रे, किहां मेवाड़ सुदेश ।
किहां सिंघल वीरा री वइनडी रे, किहां महाराण नरेश ॥८॥
कोइक पूरव भव संबंधसुं रे, आइ मिल्यो संजोग ।
भवितव्यता रइ जोग मिलइ इस्यो रे, वणियो एम वियोग ॥९॥
पिण मन माहि हिवै जाणुं अछुं रे, कोइक पुण्य प्रमाण ।
बंधव जी तुम सुं भेटो हुओ रे, तो भय भागो सुलतान ॥१०॥
मात पिता थे बंधव माहरा रे, हिवं तुम सगली लाज ।
सील प्रभाव मुझ आसीस थी रे, जैत करो महाराज ॥११॥प०॥
अविचल नांम नव खंडे करी रे, भांजो अरि भड़वाय ।
राखो पदमणि रतन[2] छुडाइ ने रे, थंभो गढ जसवाय[3] ॥१२॥

१, २, राण ३ थाट ।

अंत थायज्यो रिपु जीपिनें रे, पूरो मुजन जगीस ।
बादल वीरा ए मुझ वीनती रे, जीवो कोड़ि वरीस ॥१३॥५०॥
साहसि करतां मन वंछित सरै रे, वरदायक सुर होय ।
ए काची काया थिर नवि रहै रे, जग में थिर जस सोय ॥१४॥
इम सती वचने प्रेरियो रे, मन थयो मेरु समान ।
,लालचंद' कहै[1] चढती कला रे, सामीधर्म गुण जाण ॥१५॥

बादल द्वारा राणाको मुक्त कराने की प्रतिज्ञा

दूहा

सुणि वातां मन उल्लसी, बोलें बादल वीर ।
केहरि जिम त्राडकि नें, अतुली बल रिणधीर ॥१॥
बाबा सुणि बादल कहें, सोई रहो सुभट ।
तो भत्रीज हुं ताहरो, खलां करु तिलवट्ट[2] ॥२॥
एकण पासे एकलो, एकणि साहि कटक ।
बाबा तो हुं बादलो, मारि करु दहवट्ट ॥३॥
मात पधारो निज महल, पवित्र थयो मुझ गेह ।
चित में चिंता मती करो, जेर[3] करु नय जेह ॥४॥
पाव धरु पतिसाह ने, छोडावुं श्री राजान[4] ।
जो वांसे जगदीस छै, तो करस्युं वचन प्रमाण ॥५॥

ढाल (११) मधुकर नो

काम घणा श्री राम ना, कीधा श्री हणमंत रायत ।
तिमहुं श्री रावल तणा, करस्युं काम अनंत रायत ॥१॥

१ मुनिवर २ खलखट्ट ३ ओज्दो ४ राण ।

बीड़ो झाल्यो बादलइं, आप भुजावल जोर रावत ।
मूकउ मनधरी खलभली, घो नोवति सिर ठउर रावत ॥२॥
सामिधरम सुपसाउलैं, नइं तुम्ह सत पसाय रावत ।
परदल नें भांजी करी, ले आवो महाराय रावत ॥३॥वी०॥
जिण तुम सु इम दाखियो, जावो असुरां गेह रावत ।
जीभ जलो[1] तिण मनुष्य री, खत्रीवट न्हांखी खेह रावत ॥४॥
विरुद वखाणी पदमणी, सिर पर लूण उतारि रावत ।
सूर सुभट सिर सेहरो, तूं अमलीमाण संसारि रावत ॥५॥वी०
गोरो जी सुणि वोलड़ा, मन तन हरखित होय रावत ।
सुर होवे असुरां मिल्यां, कांयरे कायर होय रावत ॥६॥वी०॥
मन नचिंत तुमे करो, महल पधारो माय रावत ।
वादल वोल न पालटइ, जो कलि उथल थाय रावत ॥७॥वी०॥
सूरिज ऊगें पच्छिमें, मूंकै समुंद मरयाद रावत ।
ध्रुव चले पिण न चलइ, सापुरिपां रा साद रावत ।

वादल की माता के मोह वचन

महल पधार्या पदमिणि, तेहवै वादल माय रावत ।
सगली वात सुणी करी, पासै ऊभी आय रावत ॥६॥वी०॥
नैंण झरै मन दुख करइं, मुख मूकै नीसास रावत ।
विनो करी सुत वीनवै, किम दीसो मात उदास रावत ॥१०॥
मो जीवंतां मातजी, चिंता सी तुझ चित्त रावत ।
कांय तूं आमणदूमणी, कहो मुझ स्युं धरी प्रीत रावत ॥११॥

---

1 वलो ।

पूत सुणो माता कहै, सगतें स्यो जंजाल रावत ।
कांय मांड्यो किण रैं वलैं, ए घर जांणी ख्याल रावत ॥१२॥

पूठैं स्युं देखो घणो, आगें पाछे तुम एक रावत ।
तूं मुझ आंधा लाकड़ी, तुं कुल थंभण टेक रावत ॥१३॥वी०॥

जीव जड़ी तुं माहरैं, तूं मुझ प्राणआधार रावत ।
तो विण वेटा माहरैं, सूनो ए संसार रावत ॥१४॥वी०॥

हिव तूं जूझण ऊमह्यो, पोति समाही काल रावत ।
दांत अछैं तुझ दूधरा, अजी अछै तुं वाल रावत ॥१५॥वी०॥

तुझ नें लाज न कोई चढैं, गढ में सुभट अनेक रावत ।
भ्रास न कोई भोगवां, राय तणो सुविवेक रावत ॥१६॥वी०॥

कदी कीधा जाणो किसा, वेटा तें संग्राम रावत ।
'लब्धोदय'[1] कहै वहु परैं, माय समझावै आम रावत ॥१७॥

दूहा

रिणवट रीत जाणैं नहीं, विचि[2] विचि बोले एम ।
किम अणजाण्यो कीजिए, कारिज अनड़[3] नि तेम ॥१॥

अजी न साधी घर वरणि, कहतां आवै लाज ।
अती उच्छक उतावलो, रखै विगाड़ै काज ॥२॥

कीधा कदे न आज लगि, एक त्रिणा पी दोय ।
वालक वेटा वादला, किलो किसी परि होय ॥३॥

---

१ लालचंद २ वजि वजि बोले दाम ३ एम निटोल ।

बादल का मां को प्रत्युत्तर

तब हसी बादल वीनवै, हुं कित वालो माय ।
पूछुं तुझ नें पय नमी, ते मुझ ने समझाय ॥४॥
पोढुं हिवैं न पालणै, फिरि[1] फिरि न चूंखुं धाय ।
आड़ो करतो आगलै, धांन[2] न मांगु माय ॥५॥

ढाल (१२) श्रेणिक मन अचरिज थयो, ए देशी

बादल इण परि वीनमैं, मात नहीं हुं वालो रे ।
रिणवट आलिम साह सुं, जोइ करूं ढक चालो रे ॥१॥बा०॥
थापी नै वली उथपुं, राय राणा सुलतानो रें ।
तो सुं कारज ए हुवै, कांय मन में डर आणो रे ॥२॥बा०॥
नान्हइ किसनइ नाथियो, बासिग नाग वडेरो रे ।
नास करइ रवि नान्हड़ो, अंधकार बहुतेरो रे ॥३॥बा०॥
बाल्हड़ो केहरी बचो, भांजे गैंवर थाटो रे ।
तो हुं थारो छावड़ो, रिपु न्हांखुं दहवाटो रे ॥४॥बा०॥
मति जाणो थे मात जी, कुल नें लाज लगाऊं रे ।
गंजण छावो गाजतो, आज करी नें आऊंरे ॥५॥बा०॥
जो पाछा पग चातरुं तो जाणो मति रजपूतो रे ।
कायर वाणी किम कहैं, देखो सुत करतूतो रे ॥६॥बा०॥
सूर वचन रजपूत[3] ना, चित में चिंता व्यापी रे ।
मन मांही बहु खलभली, सीख न तास समापी रे ॥७॥बा०॥

१ धूढि न चूंखुं धाइ २ थान ३ सुनि पुत्र नउ ।

बादल की पत्नी का प्रयास

बहुआं ने आइ कहैं, माहरो वचन ज मानो रे।
थे समझावो जाय ने, जो क्युं ही नेह पीछाणो रे ॥८॥बा०॥
सोल शृंगार सझि करी, सुकलीणी सुविलासो रे।
जाणे झबकी बीजली, आवी प्रीउ नैं पासो रे ॥९॥बा०॥
रूपइ रंभा सारिखी, मृगनयणी गज गेलि रे।
कंचनवरणी कामिनी, साची मोहन वेलि रे ॥१०॥बा०॥
विनय वचन करि वीनवइ, हसत वदन हितकारो रे।
साहिब वीनति सांभलो, तन मन प्राण आधारो रे ॥११॥बा०॥
साथ सबल पतिसाह नो, मुगल महा दुरदंतो रे।
एकाकी इण परि कहो, किम पूजीजे[1] कंतो रे ॥१२॥बा०॥
कहैं बादल सुण कांमनी, जोइ करूँ जे जंगो रे।
वज्र घणो नानो हुवइं, तोड़ै गिरि उत्तंगो रे ॥१३॥बा०॥
बात करंतां सोहिली, पिण दोहली रिण वेला रे।
सामी एहवइ मंत्रणइ, कांय करो जन हेला रे ॥१४॥बा०॥
सूर पणै बादल कहै, स्यानैं भय देखावो रे।
तेह नाहिं हुं बादलो, हिव तुं देठो दावो रे ॥१५॥बा०॥

बोलइं मोटा बोल, निरवइं निरवाहइ नहीं।
तिण माणस रो मोल, कोड़ी कापड़ियो कहइ ॥१॥

गोला नालि वहै घणा, हय गय रथ भड़ झूझै रे।
घोर अंधार रिण रजकरी, सूरिज सोइ न सूझै रे ॥१६॥बा०॥

---

1 पहुंचीजइ।

मुगल महाभड़ साहसी, मूंकै दोय दोय वाणो रे।
'लालचंद' पतिसाह स्युं, पूजे केहो किम पाणो रे ॥१७॥बा०

दूहा

शस्त्र ग्रही मोटा सुभट, दयें चौकी दिशि च्यार।
साहि सबल पति एकलो, भलो न एह विचार ॥१॥
तब बादल हसि नें कह्यो, कही किसी थे वात।
रावल छोडावुं रतन, तो गाजन मुझ तात ॥२॥
हुं गंजुं हय गय सुभट, भांजि करुं भकभूर।
सतावीस लख दल सहित, साहि करुं चकचूर ॥३॥
नारि कहै[1] रह्यो रावलो, किसो जणावो पाण।
अजीस नारी आपणी, साधि न[2] हुवे सुजाण ॥४॥
नारी सुं न्हाठा फिरो, मिटी न वाली लाज।
तो कहो कसी परि जूझस्यो, करस्यौ केहो काज ॥५॥

दृढ़प्रतिज्ञ वीर बादल को स्त्री द्वारा सीख

ढाल (१३) नदी यमुना के तीर उडै दो पंखीया —ए देशी—
तउ वलतो बादल कहै सुण कामनी।
तिण दिन आवीस सेज तुमारे जामनी ॥१॥
जीपी आउं जिण दिन वैरी हुं एतला।
छोडावुं श्री राण कि लोह[3] करी कै भला ॥२॥

१ कहर हुवो बड़ो २ सीधी नहीं ३ लाफरि मछि मला।

तो दस मास न झाल्यो भार मुझ मात जी ।
तें भाखीज्यें वात करूं तिण में कजी ॥३॥

सूरातन मन देखी नारी तब इम कहै ।
भलो भलो भरतार सुं मन में गहगहै ॥४॥

हम हैं तुमारी दास कि पग की पानही ।
निरवाहैजो वात जेती मुझ स्युं कही ॥५॥

मति किणही वातइ हारि जाहु कि लाजवइ ।
वंश वधानइ शोभ चिहूं वहु छाजवइ ॥६॥

घालैयो नें घाव घणो साहस करी ।
खेसवयो रिण खेत खड़ग हणी खलकरी ॥७॥

होय इछोहा लोह घणा धे वावयों ।
हल करयो हथवाह अरी दल गाहयो ॥८॥

द्यो मति पाछा पाव मरण भय[1] मति गणो ।
जीवण थी इणि वात सुजस कहि यो घणो ॥९॥

भिड़तां भाजै जेह मरै निहचै करी ।
कानि सुणइं पहवात मरूं लाजइ खरी ॥१०॥

सुभटां मांहि सोभ घणी धे खाटयो ।
नव खंडे करी नाम अरी दल दाटयो ॥११॥

सुभट कहावै नाम सहू ही सारिखो ।
पण रिण मांहि तास लहिज्ये पारखो ॥१२॥

---

१ जड ।

तिम करयो जिम हुं मन मांहि गहगहूँ ।
छल वल करयो काम घणो कासुं कहूँ ॥१३॥
जीवन मरणे साथ तुमारो मइं कियो ।
हिव करयो हथवाह करी करड़ो हीयो ॥१४॥
भूखा घर नी नार पूछी[1] कुमतो कहै ।
तिण सगलें संसारि वहुत अपजस लहै ॥१५॥
उत्तम राजकुमार सदा सुमतउ दियइ
धीरज कुलवट रीति रहइ जग जस थियइ ॥१६॥
हिव साची मुझ नार जिणें सुमतो कह्यो ।
निज कुल राखण रीत हिवै मन गहगह्यो ॥१६॥
सुभट तणो सिणगार करायो[2] नारीइं ।
वंधाया हथियार भला निज करि लीइं ॥१७॥
निज माता रा चरण नमी चित हरखीयो ।
होय घोड़ै असवार गौरिल घर सरकीयो ॥१८॥
करी जुहार कहि राज रहो तां लगै घरें ।
जाय आउं एक वार कटक पतिसाह रें ॥१६॥
कहै गोरो मुझ वात सुणो तुम वादला ।
तुम जाओ मुझ छांड रहै किम मुझ कला ॥२१॥
काकाजी मन मांहि न तुम चिंता करो ।
रिणवट एको साथ हुसी आपां खरो ॥२२॥

---

१ पूठी कुमतइ २ सजाओ ।

कौल करूं छुं दक्षिण हाथ देई करी।
हुं जाऊ छुं घास भास देखण करी ॥२३॥

मेवाडी सुभटों की सभा में

बादल ले आदेश गौरा रावत तणो।
सुभट मिल्या तिहां जाय साहस मन में घणो ॥२४॥
देखि सभा सगली मनमइं विस्मय थई।
आवइ नहिं दरबार कदे क्यों आवई ॥२५॥
सुणिज्यइ गाजन नंदण सूर महाबली,
सही विचारी वात कोइक रिण री रली ॥२६॥
बैठा राजकुमार सुभट सहू एकड़ा।
धसि आयो तिण ठाम (सुभट) सहु हुआ खड़ा ॥२७॥
दे आसण सनमान प्रीयोजन पूछ ही।
आया बादल राज कहो ते किम सही ॥२८॥
आलोची सी वात बादल विहसी कहै।
जिण थी थी सुभटां लाज राज कुमरो रहै ॥२९॥
आलोची निज वात गोरी ने सहु कही।
राणी देई राय छुड़ावण री सही ॥३०॥
आलोच्यो आलोच अम्हारो ए अछै।
कीज्यें तेह विचार कहो जे तुम पछे ॥३१॥
बादल बोले वारु कीयो ए मंत्रणो।
पिण एक माहरी वात सुणि आलोचणो ॥३२॥

सगतें सुभट संग्राम करै मन गहगही ।
पिण नवि मूंकै माण वात जें संग्रही ॥३३॥
मान विना नर कण विण कुकस जेहवो ।
'लालचंद' नर टेक न[1] छंडै तेहवो ॥३४॥

कवित्त

अंगीकृत अनुसरइ होइ सापुरिस जु साचा,
अंगीकृत अनुसरइ होइ कुल जातै जाचा ।
अंगीकृत ईश्वरइ जहर पीधउ दुख हंतइ ,
वारिध वाड़व अग्गि वहैं पाणी सोसंतइ ।
काछिवउ कंध वहु धावही, अजहु भार एवड़ सहइ ।
मुनि लाल वयण आदरि जके, सो सज्जन वहु जस लहइ ॥१॥

दूहा

काया माया कारमी, जात न लागइं वार ।
सूरपणें कायरपणें, मरणो[2] छै एक वार ॥१॥
तउ ढांढा हुइ किम मरौं, मरउ तउ मरण समारि
पत जास्यै पदमणि दीया, अमचउ एह विचारि ॥२॥
राय लीइं राणी दीइं, जाण्या यदि जूझार ।
मस्तक केस न को रहइ, अपकीरति संसार ॥३॥
नाक मुंकिजो ऊभरयां, केहो जीवन स्वाद ।
देश विदेश छांडो[3] पडो, तजीइं किम कुल मरजाद ॥४॥

---

1 वात निवाहइ 2 कोई मरण न टालणहार 3 छांटो मरु इम रहइ

वीरभाण वलतउ कहइ, वोल्यंइं घणे पराण ।
वादल वात भली कहउ, पिण समझा नहीं तिलमान ॥५॥
वादल वात भली कही, अनेन समझां मोड़ ।
रखे राणी राजा लीयो, तो पति राखो चितोड़ ॥६॥
ढाल १४ म्हारी सुगण सनेही अतमा, ए देशी
आलिमपति अलावदी, ईश्वर नो अवतार रे भाई ।
मुगल महाभड़ जेहनै, लाख सतावीस लार रे भाई ॥१॥आ०॥
एक हुकम करतां थकां, उठै एक हजार रे भाई ।
सगले थोके सावतो, पहुंचीजे किम पार रे भाई ॥२॥आ०॥
कलै कलै पदमणी राखसुं, राय छंडी हजूर रे भाइ।
पतिसाह प्रति लोपी ने, घूक अंध नित घूर रे भाई ॥३॥आ०॥
कहि वादल सुण कुंवरजी, स्यउ आपां ए सोच रे भाई ।
काइ आलोचइ केहरी, मारंतां मदमोच रे भाई ॥४॥आ०॥
इम करतां जो को मरइ, तउ जगि कीरति होई रे भाई ।
कन्या साटइ पामतां, सुंहगी कीरति सोई रे भाई ॥५॥आ०॥
कुमर कहै इण वात री, कीज्यैं ढील न काई रे भाई ।
सोई अरजून जाणीइं१, जे वेधो वालै गाय रे भाई ॥६॥आ०॥
रहै पदमणी आपणै, नइं वलि छूटइं राण रे भाई ।
इण वातइ कुण नहि हुवइ, सुप्रसन्न मनहि सुजाण रे भाई ॥७॥
वादल कहै२ सहू भलो, हुइ आवीसीइ कुम नाम रे भाइ ।
करज्यो वांसइ कुमर जी, सवलो ऊपर सामि रे भाई ॥८॥आ०॥

१ समझिइ, जि फोड़ २ फोलर

पहिली मति ऊंधी करी, आलम तेड्यो मांहि रे भाई ।
तेड्यो तो मारण तणो, कीधउ दाव सु नाहि रे भाई ॥९॥आ०॥
जहर कहर मुगल मिल्या, गढ में तीस हजार रे भाई ।
छल वल करि नवि छेतस्या, तौ स्यौ सोच हिवार रे भाई ॥१०॥
लसकर मांहि जाइ नै, ले आवूं छुं वात रे भाई ।
इम कहि नै अश्वे चढ्या, साहस एक संघात रे भाई ॥११॥आ०॥
ऊतरीयो गढ पोलि थी, निलवट निपट सनूर रे भाई ।
अँगै आऊध अति भला, प्रतपै तेज पडूर रे भाई ॥१२॥आ०॥
एकलमल अश्वे चढ्या, अभिनव इन्द्र[1] कुमार रे भाई ।
आलिम देखी आवतो, पूछायो तिण वार रे भाई ॥१३॥आ०॥

सीह न जोवइ चंदवल न जोवइ घर रिद्धि ।
एकलड़उ वहुआ भिड़ा ज्यां साहस त्यां सिद्धि ॥

पूछ्यां थी वादल कहै, मेलि करण रै मेलि रे भाई ।
जाइ कहउ हुँ आवियउ, पदमिणि तुम नइ गेलि रे भाई ।१४।आ०
तुम उपगार करुं वड़ो, मानै जो मुझ वात रे भाई ।
सेवक आवी इम कहै, हरख्यो आलिम गात रे भाई ॥१५।आ०।
तेड़ायो आदरि करी, दीठो अति वलवंत रे भाई ।
वैसाण्यो दे वैसणो, मान लहै गुणवंत रे भाई ॥१६॥आ०॥

हंसा जहाँ जहाँ जात है, तहाँ तहाँ मान लहंत ।
कग्गा वग्ग कग्ग वग, कग वग कहा लहंत ॥

---

1 अग्नि ।

वुद्धिवंत बादल राइ ने, पूछै श्री पतिसाहि रे भाई।
सलाम करी बैठो तिसै, आलिम हूओ उच्छाहि रे भाई ।१७।आ०।
'लालचन्द' कहै बुधि थकी, दोहग दूर पुलाइ रे भाई ।१७।आ०।

दूहा

नाम तुमारा क्या कहो, किसका है तूं पूत।
क्या महीना रोजगार क्या, किसका है रजपूत ॥१॥
किण भेज्या किण काम कुं, आया है हम पास।
तब बलतो बादल कहै, बुद्धिवंत होइ विमास ॥२॥
बोली जाणइ अवसरइ, माणस कहीइ तेह।
बादल क्षण परि बोलीयउ, जिम वधीयो आलम नेह ॥३॥
बल थी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल।
बानर बाघ विणासियो, एकलड़इ सीयाल ॥४॥
नाम ठाम कहि वीनवें सुभट चढ्या अभिमान।
तिण मुंकियो छानों मनें[1], पदमणीयें[2] परधान ॥५॥

ढाल (१५)—सइमुख हुं न सकूं कही आछी आछे लाल

जिण दिन थी तुम देखीया जिमया मझन्नरि नाह।
तिण दिन थी पदमिणि मन वसिउ तुम्ह मांहो रे ॥१॥
सुण आलिम धणी। विरह विथा न खमाणी रे,
बात किसी घणी ॥आंकणी॥
ते धनि नारी नारी जाणीइं जेहनि ए भरतार।
इण थी रूप अवधि अछै, काम तणो अवतारो रे ॥२॥सु०

1 मनइ 2 पदमनी।

राति दिवस झूरती रहैं, मूकैं मुखि नीसास ।
नयणे नीझरणा झरैं, नारी अधिक उदासो रे ॥३॥सु०॥
जिण दिन थी थे वीछार्या, नयणे नेह लगाय ।
सुख जाणइ यम सारिखो, भुवन भाठी सम थायो रे ॥४सु०॥
तरुणापउ विस सउ लगइ, सोल शृंगार अंगार ।
अगनि झालि सम चांदलउ, जालण वालण हारो रे ॥५॥सु०॥
भूषण जाणि भुजंग सा, चउकी चाक समान ।
वीछु सम ए विछीया, सिज्या अगनि समानो रे ॥६॥सु०॥
चारु जेह विछावणा, तीखा वरछा जाणि ।
पड़द्इ तेह पहाड़ सउ, अन्नण आवइ खाणो रे ॥७॥सु०॥
देह गई सब सूकि नैं, नयने नींद हराम ।
राति दिवस रटती रहैं, साहिब जी तुम नामो रे ॥८॥सु०॥
भूख प्यास लागैं नहीं, चिन्ता व्यापी देह ।
कीधी का तुम्ह मोहिनी, निवड़ लगायो नेहो रे ॥९॥सु०॥
मास लोही नामइ रह्यउ, छाती पड़ियउ छेक ।
दुक्ख दुसह किम करि सहइ, तुम्ह विरह सुविवेको रे ॥१०॥सु०॥
पलक गिणैं एक मास सउ, घड़ीय गिणैं छम्मास ।
वरस समान दिन नइ गिणइ, इम विरह पीड़इ तास रे ॥११॥सु०॥
तुम्हसुं लागउ नेहलउ, जाण मजीठउ राग ।
पटकूल फाटैं थकैं, रहैं त्रागा सुं लागो रे ॥१२॥सु०॥
तूं जीवन तूं आतमा, तन मति प्राण आधार ।
सासैं सासैं संभरइ, पद्मिणि वार हजार रे ॥१३॥सु०॥

मुख करि किम कहतइ वर्ण, जे तुम्ह सेती राग ।
ते मन जाणै तेहनो, लागो जिण विधि लाग रे ॥१४॥तु०॥
विगति लहै विरहां तणी, विरही माणस तेह ।
'लालचन्द' कहइ मोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रे ॥१५॥तु०॥

दूहा

चीठी दीधी चूंपस्यूं, वांची देखें साहि ।
समाचार विगतें सहित, सगला ही गुण मांहि ॥ १ ॥

वक्त हजार दरवदिल मेर साजिइरिया न निहुं नमनु
वुइ कुनम् आदिल फेवद रद हजार ॥ १ ॥
तन रांर वाव साजिग् रंग हाजितार तार दीगर,
सरोजनें रतेव जुज वार योर यार ॥ २ ॥

मइ मन दीनो तोहि, जा दिन तो दरसन भयो ।
अव एती वीनति मोहि, प्रेम लाज तुम निरवहो ॥२॥
मइ मन दीनो तोहि, सकइ तो उलटि निवाहीयें ।
नातरि कहोइ मोहि, हुं मनि वरजउं आपणउ ॥३॥
निसि वासर आठउं पहर, छिण नहि विसरुं तोहि ।
जिहि जिहि नइन पसारहुं, तिहि तिहि देखुं तोहि ॥४॥
आठ पहोर चोसठि घड़ी, जवही न देखुं तुम्ह ।
न जाणुं तइं क्या कीया, प्राणपीयारे तुम्ह ॥५॥
दोवैतां दूहा सहित, चीठी एक उपाय ।
वादल दीधी साहिनें, अकलि थकी उपजाय ॥६॥
चले फहे आलिम तणा, वदि आया परधान ।
सुभटां मरणो आंगम्यो, पिण न तजें अभिमान ॥७॥

वीरभाण राजा सहित, सुभटां नै समझाय।
ज्युं ज्युं कान ढेराई नै, हुं आयो तुम पाय।।८।।
राणी मूँक्यो मो भणी, घणी वीनती कीध।
हिंव हुं जाणुं तुम तणी, होसी मनोरथ सिद्धि ।।९।।

ढाल (१६)—वंदणा करुं वारवार-ए-देशी-प्राहुंणारो

वालेसर हो वली परभातैं बात, कहस्युं आइ होसी जीसीजी।
दिलीसर हो वांची चीठी बात, सीख करां जावां घरे जी ।।१।।
जोती होसी वाट, विरह व्यथा पीड़ी थकी जी ।दि०।
जाय टालुं उचाट, तुम संदेश सूधा करी जी ।।२।।
इण परि सांभली बोल, पदमणि प्रेमइ वांधियो जी ।
आलिम मन झकझोल, कीधो वादल वाय करै जी ।।३।।
मूँकै मुख नीसास, चीठी वांचै चूंपस्युं[1] जी ।
आलिम मन मृगपाश, पदमणि कागद पाठइयो जी ।।४।।
नयणां रे नीर प्रवाह, विरह अगनि व्यापी घणी जी ।वा०।
ए अचिरज मन मांहि, भभकइ अधिकी भीजतां जी ।।वा०।।५।।
हृदय समुद्र अथाह, मांही विरहानल दहइ जी ।वा०।
नयन वीजलि रइ नाह, वूठइ न्याय न वीसमइ जी ।।वा०।।६।।
घल घट हलीयो रे जाय, प्रेम सुणी पदमणि तणउ जी ।वा०।
मुख सुं कागल लाय, वार वार चुम्बन करइ जी ।।वा०।।७।।
खूब लिख्या इण मांहि, संदेशा साचा सहु जी ।
दिलीसर हो उठे कराहि, काम तणै वाणै हण्यो जी ।।८।।

१ प्रीत सूँ ।

अहि सम आलिम साहि, साहि न सकतो को सही जी ।
पदमणि मंत्र चलाइ, वादल गारूड़ वसि कीयोजी ॥६॥
पाहुणउ तूँ हम आंज, कहुँ ते महिमानी करां जी ।वा०।
सगली तुम्ह नइं लाज, वादल राज हमां तणी जी ॥वा०॥१०॥
सुभटां सहु समभाय, साहि कहै वादल सुणो जी ।
सगली[1] तुम नें लाज, थापैयो एहिज मतो जी ॥११॥
करतां तुम उपाय, जो किम ही करि पदमणी जी ।
हाथ चढै हम आय, तो देखे कैसी करु' जी ॥१२॥
इम कहि हय गय सार, लाख सोनइया रोकड़ा जी ।
वारु वले[2] सिरपाव, वकस कीया वादल भणी जी ॥१३॥
रुको द्यु' तुम हाथ, प्रीत वचन मांहिं लिखुं जी ।
जाइ पड़ें पर हाथ, आलिम इम[3] वचने नहीं जी ॥१४॥
तुम विरह की वात, वचने करि कहिस्यु' घणी जी ।
चिठी आवै न घात, कोई जाणै भांजै मतो जी ॥१५॥
महिर करी हिव मोहि, वीदा करो वेघो घणो जी ।
आलिम साथे होय, पोलि लगे पहुँचावीयो[4] जी ॥१६॥
धन लेइ आयो देखि, हरख्यो माता नो हीयो जी ।
वंछित फल विशेष, "लालचंद" धरमे सहीजी ॥१७॥

दूहा

खुशी हुई नारी खरी, धन दिवस निज जाणि ।
गोरोजी[5] मन हरखीयो, करसी काम प्रमाण ॥१॥

---

१ दूध न डांग दिखाय, २ वस्त्र अपार ३ इलम वच नहीं जी
४ पहुँतो कीयो जी, ५ गोरोपिण मन गरजीयो ।

पदमणी पिण मन गहगही, ए मेलवसी भरतार।
सुभट सहू मन संकीया, ऐ ऐ बुद्धि भंडार ॥२॥
सगत छिपाई नवि छिपइ, सहजइं प्रगटइ तेह।
गांठड़ि इं जोइ वांधिइ, तउही अगनि दहेहि ॥३॥
जइ घट विधना गुण दीपइ, निंदइ मनि मतिमन्द।
जउ कुंडे करि ढांकीयइ, तउ छिप्यो रहतं कत चंद ॥४॥
एण समै आया तिहां, जिहां बैठा राय राण।
मांड्यो एहवौ मंत्रणो, बादल बुद्धि प्रमाण ॥५॥

ढाल (१७)—साधजो भलें पधार्या आज ए-देशी

सोवन कलश सुहामणाजी, करी जरी रमझोल।
सहस दोय सावत करो जी, चित्र रचित चकडोल ॥१॥
कुमरजी मानो ए मुझ वात, जिम कारज आवइ धात ।कु०।आं०
तिण मांहि दोय दोय भला जी, जे सलह[1] पहरी जुवान।
शस्त्र घणै करि सावता जी, वैसांणो बलवान ॥२॥कु०॥
पदमणि री विच पालखी जी, सखर करें सिणगार।
ढांको पदमिणी वस्त्र स्युं जी, भमर करइ गुंजार ॥३॥कु०॥
गोरो जी वैसाणयो जी, पदमणि जी रे ठाम।
पालखीयां सखीयांतणी जी, सुभट करो विश्राम ॥४॥कु०॥
लारो लार लगावयो जी, छेटि म राखो काय।
केलवणी करयो इसी जी, जिम वाहिर न दीखाय[2] ॥५॥कु०॥

---

१ जोसण २ लखाय।

गढ थी मांड सेना लगें जी, करयो हारा डोर।
वार घणीं विलंबयो जी, जतन करेयो जोर ॥६॥कु०॥
पातिसाह पासें जाईइं जी, हुं करस्युं जे वात।
रावल जी छोडायस्यां जी, पाछै करेस्यां घात ॥७॥कु०॥
भलो भलो सुभटें कह्यो जी, थाप्यो एहज थाप।
इम आलोच आलोचतां जी, प्रात हुओ गत पाप ॥८॥कु०॥
सुभट सहु समभाय नें जी, चढीयो वादल वीर।
तिम हिज पहुंतो लसकरे जी, धरतो तन मन धीर ॥६॥कु०॥
करी तसलीम ऊभो रह्यो जी, हरख्यो आलिम साहि।
पूछे बात कहो किसी जी, काम कीयो के नांहि ॥१०॥कु०॥
बहुत निवाज तुझ[1] कुं करु जी, वादल बोल्यो साच।
सिरै चढें कारिज सहू जी, साची[2] वादल वाच ॥११॥कु०॥
सुभटां नें समझाय ने जी, नाकें आई नीठ।
पदमणी नी आणी अछै जी, पालखीयां गढ पीठ ॥१२॥कु०॥
सुभट सहु मिलि विनती जी, कीधी छै सुणि सामि।
जोख पदमणी री करो जी, तो राखो हम माम ॥१३॥कु०॥
पेस करां जो पदमणी जी, तुम[3] उपजै वीसास।
विण वीसास किसी परैं जी, ह्वै सहु ने रंग रास ॥१४॥कु०॥
कहि आलिम कैसी परैं जी, तुम वीसासउ मन।
'लालचंद' कहै सांभलो जी, वादल कहेज वचन ॥१५॥कु०॥

---

१ बहुत २ अविचल ३ जो।

दूहा

मन मांहि संके सुभट, पदमणि दीधी राय ।
जो छूटे नहिं तो रखे, दोन्यु स्वारथ जाय ॥१॥
तिण हेते लसकर तुमे, विदा करावो साहि ।
सहस पंच[1] राखो नर्खे[2] जो डर आणो मन मांहि ।
इम सुनि कहइ उच्छक थको, काम गहेलो साह ।
कहो कुण थें हम डरइं, हम सूं जगत डराय ॥३॥
चतुर किहां तूं चातर्यो, वर्के जु अइंसी वात ।
हम सुं डरै जो सुर असुर, मानव केही मात ॥४॥
कूच तणो कीधो तुरत, आलिम साहि हुकम ।
लशकर के लोध्यां[3] घणो, पाम्यो सुख परम ॥५॥
सहस च्यार साऊ सुभट, रहो हमारे पास ।
अवर कटक सब ऊपड़ो, ज्युं हिन्दु हुवै वीसास ॥६॥
सहस च्यार पासे रह्या, अउर चल्या ततकाल ।
कहै साहि कीधो कीयो, अब बादल कओल सुपाल ॥७॥

ढ़ाल (१८) बलध भला छे सोरठा रे-एदेशी

लाख सोनइया रोकडारे लाल, सखर देई सिर पावरे सरागी ।
बादल ने आलिम कहे रे वेगउ पदमिणी ल्याव रे स० १
बुद्धि भली बादल तणी रे लाल, देखी खेलइ दाव रे स० ।
ले लखमी घर आवियो रे लाल, माता हरख अपार रे सरागी ।
वले संकेत बणाइयो रे लाल, सुभटां ने समझाय रे ॥२॥बु०॥

---

१ चार २ सुभट ३ लोके सबइ ।

ले आवयो पालखी रे लाल, लारो लार लगार रे सरागी ।
खत्रीवट राखेजो खरी रे लाल, कमियन करजो काय रे ॥३॥वु०॥
इम कहि आघो चल्यो रे लाल, ले लारें सुखपालरे सरागी ।
आलिम देख्यो आवतो रे लाल, बूलायो दरहाल रे स०॥४॥वु०॥
बुद्धिवंत तो अधिको हुंतो रे लाल, राघव चेतन व्यास रे सरागी
सामीद्रोह पणाथकी रे लाल, छल न लखांणो तास रे ॥५॥वु०॥
कहे वादल आलिम भणी रे लाल, पदमणी वीनती एह रे सरागी।
अब हुं आई तुम घरे रे लाल, निवहड़ करेज्यो मेह रे ॥६॥वु०॥
साची माया मन सुद्ध सु रे, मान महत सोभाग रे स०
मउज एहिज मांगु छुं रे लाल राखेज्यो मन राग रे स० ॥७॥वु॥
घरे महल तुम्ह कइ घणा रे लाल, खेल करउ मनखास रे स०
पिण पटराणी मुझ भणी रे लाल, करजो एहअरदास रे स०।८।वु०
आलिम कहे तुम ऊपरे रे लाल, नाखुं तन मन उवारि रे सरागी
जीव थकी पिण वालही रे लाल, भावे तु मारि उगारि रे ॥९॥वु॥
नारि एक करइ नहीं रे लाल, तुझ नख एक समान रे स०
तुम सेवक हरमां सवइ रे लाल, मइ वंदा सुलतान रे स० ।१०।
तुम कारण[1] हठ मैं कीयो रे लाल, लोपी वचन ग्रह्यो राय रे सरागी
राणी ले आवो वादलो रे लाल, ढील न कीज्यो काय रे ॥११॥
एम कही पहरावियउ रे लाल, ले आयो वकसीस रे स०
प्रमुदित मन परिजन हुओरे, साहस वसि जगदीश रे।स०॥१२॥

---

१ काजे ।

धोवत[1] पग थे आवियो रे लाल, इम सुभटां समझाय[2] रे सरागी
आयो वले आलिम कनै रे लाल, वारु वात वणाय रे ॥१३॥वु॥
परगट हुई पालखी रे लाल, सोवन[3] कलस सोहात रे सरागी।
वार वार विचमें फिरै रे लाल, वादल पदमणी वात रे ॥१४॥वु॥
होठ वुद्धि जेहने हुवइ रे लाल, दोहरी केही वात रे सरागी।
लालचंद कहि वुद्धि थकी रे लाल, वादल खेलइ घात रे ॥१५॥

दूहा

फिर फिर पदमणिरै मिसे, करतो वादल वात।
रह्यो पहोर दिन पाछलो, तेहवै पूगी[4] घात ॥१॥

लसकर पिण अलघो गयो[5], जूझण वेला जाणि।
वड़े वेर हम कुंभई, वादल[6] कहें ए वाणि ॥२॥

एक वार रावल ईहां, मुंकी हमारे पासि।
दोय च्यार वातां करी, आवूं तुझ आवासि ॥३॥

हाथें करि परणी हुंती, लोक तणै व्यवहार।
सीख करी पुंसली भली, आवण रो आचार ॥४॥

पदमणी वोल सुणी ईसा, सुणि वादल कहै राय[7]।
भली वात पदमिणी कही, हम खुशी हुआ मन मांय ॥५॥

---

१ थोभत २ सीखाय ३ देखि आलम दुख जात रे ४ पुहती
५ रहयो ६ सुनि वीनति सुलतान ७ साहि।

ढाल— (१६) सदा रे सुरंगा थे फिरो आज विरंगा कांय ए देशी

साची कही ए पदमणी, जेहमें एहवो सुविचार रे लाल।
आलिम वले वले इम कहे, धन भगतिवती भरतार रे लाल॥
वुद्धि करी रे बादलें, भलो सांमी ध्रम प्रतिपाल रे लाल॥वु०॥
तुरकें तुरत हुकम कीयो, जावो बादल आज रे लाल।
रावलजी छोडाय ने, हम मेलो पदमणी राज रे लाल॥२॥वु०॥
हुकम लेई नें आवीयो, जिहांछै रतनसेन महराण रे लाल।
करी तसलीम ऊभो रह्यो[1], राय कोप चढ्यो असमान रे लाल ३
फिट रे वैरी बादला कांई, सांमीद्रोही कीध रे लाल।
खत्रीधर्म खोयो तुमे, मो साटै पदमणी दीध रे लाल॥४॥वु०॥
निरमल कुल मइलो कीयो, मूडी खरीय लगाई खोड़ि रे लाल।
ते निसत्त हुया डर मरणरइ, मुझ लाजगमाई छोड़ि रे लाल॥५॥
बलतो बादल वीनवैं, ए अवर अछै आलोच रे लाल।
भलो होसी तुम भागस्युं, स्युं आणो मन में सोच रे लाल॥६॥
भूप चाल्यो मन समझि नइ, तव आलिम भाखें एम रे लाल।
राय आणो पदमणि मेलि नें, जिम सीख समपुं हेव रे लाल॥७॥
पदमणी दिशि राय चालीयो, बैठो पालखीयां मांहि रे लाल।
तब बात सहु साची लखी, बादल री वुद्धि सराहि रे लाल॥८॥
वेलां नहीं वातां तणी राय हुउ हुसियार रे लाल।
पालखीयां री सेन में, होय पहुंतो गढ रै पार रे लाल॥६॥वु०॥

---

१ जिस्यै।

गढ में पहुंचि वजाड़्यो, जांगी ढोल निसाण रे लाल ।
थे[1] पहुंता म्हे जाणस्यां, साचो ए सहिनाण रे लाल ॥१०॥वु०॥

वात सुणि हरखित थयो, तुरत गयो गढ मांहि रे लाल ।
कुशले छूटा कष्ट थी, जाणे सूरिज मूक्यो राहु रे लाल ॥११॥

आणंद मन मांहि ऊपनो, मन हरषित पदमणी नारि रे लाल ।
गढ में रंग वधामणा, धवल मंगल जय जय कार रे लाल ॥१२॥

पदमणी शील प्रभाव थी, वले बादल बुद्धि प्रमाण रे लाल ।
'लालचंद' कहै जस घणो, कुशले छूटा श्री राण रे लाल ॥१३॥

दूहा

सहनाणी पूरण भणी, हरषित तणो सहिनाण ।
नोवति[2] ढोल वजाड़ियां, घणा घुरइ नीसाण ॥१॥

सुणि वाजा गाज्या सुभट, उठ्या योध अनम्म ।
नवहथा जित भारथा, माणस रूपी जम्म ॥२॥

राघव मुख कालो हुओ, नवि लिखीयो परपंच ।
कूड़ घणो कीधो हुंतो, सीधो काम न रंच ॥३॥

सामी काम हणमंत[3] जाणयो, गोरो गुणह गंभीर ।
अरिदल देखी उलस्यो, सूरातनह सरीर ॥४॥

सुभट धस्या हुइ सामठा, मुखि गोरउ रिम राह ।
अंग अंगरखी सजी, वगतर सबल सनाह ॥५॥

---

१ तब २ जांगी ३ हनुमानसो ।

ढाल—(२०) नाथ गई मोरी नाथ गई ए देशी।

दिल्ली का नाथ, हिव तु देख हमारा हाथ मियां ऊभो०।
ऊभो रहें रे ऊभो रहें, ऊभो रहें
ऊभो रहे मत छोड़े पाउ, जो पदमणी परणेवा चाह ॥१॥
मीयां जी ऊभा रहो।

अम ऊभा तुम हुंती खंति, पदमणि परणेवा वहु भंति ॥२॥मी०॥
मैं आंणी छै जे तुम काज, ते हिवै तुझ देखाउं आज। मी०।
राणी जाया च्यार हजार, सूर सबल मोटा जूझार ॥३॥मी०॥
दोड़या ले हाथे करवाल, धूम मचायो मांड्यो ढक चाल ॥४॥
दीठा ते दिली रे नाथ, सगलो वूलायो निज साथ ॥मी०॥५॥
रे रे बादल कीधो कूड़, सगलो लसकर[1] मेल्यो झूड॥मी०॥५॥
रिण रसीयो आलिम रंढाल, हलकारया जोधा जिम काल।
करी किलकी जिम दोड्या देत, कायर प्राण
तजे[2] निकसी जंत ॥मी०॥६॥
कठत करें मीलिया दल होइ, जाणे जलहर[3] घन अति धोइ।
आई जोगणी जाणे आडंग, जुड़सी आलिम वादल जंग ॥७॥
भुजा[4] वले आलिम सु एम, वोले वादल गोरो जेम[5] ॥मी०।
दिली सु चढि आयो साहि, हिवैं भिड़तो भागै मति जाय ॥८॥
मुंडीयो तो हिव जासी माम, मांटी छै तो करि संग्राम ।मी०।
कहै आलिम क्या करै खुदाय, तें तो हम सु खेल्यो डाय ॥६॥

---

१ कारिज २ निकास्यइ लेत, ३ जलद कालाहणि होद ४ नूकि ५ हेव।

मांहो मांहि मांड्यो जोध, ऊछलीयो सूरातम क्रोध । मी० ।
छूटण लागा कुहकवाण, हथनालां करती घमसाण ।। मी०।।१०।।
सर छूटइ करता सणणाट, वकतर फोड़ि करै वे फाट ।।मी० ।
ध्रुव वाजें वरछी धीब, भाजै कायर लेई जीव ।। मी०।।११।।
ऊडी रज आकाशे जाय, रवि जिण थी मालिम न थाय ।।मी०।।
घोर अंधारे जाणे घोर, गाजे वाजै नाचै मोर । मी० ।।१२।।
धड़ धड़ वलय धारू जल धार, चमकै बीजल/जिम जलधार ।
तूटै सन्नाहे तलवार, ऊडइ तिणगा अगन सुझाल ।।मी०१३।।
खल हल खलक्या लोही खाल, पावस रित जाणे परनाल ।मी०।।।
रुहिर मांहि पंपोटा[1] थाय, दोड़ी[2] जोगणी पात्र भराय[3] ।।१४।।
करवाला धड़ फूटै घाव, छंछउ छलि कीधो भिड़काव ।।मी० ।
रुहिरज[4] प्रगटउ परिकास, नाच्यो नारद कीधो[5] हास ।।१५।।
गुडीया जाणे[6] जेम पहाड़, सूर भिड़तां थाए आड ।।मी० ।
मस्तक विण धड़ जूझइ अपार, करि करवाल करंता मार ।।१६।।
खीजे वाह्यो सुरइ खग्ग, आधउ तूटि रह्यउ सिरि नग्ग । मी० ।
फावइ सिर ऊपरि खुरसाण, सुर लह्यो
जाणइ स्वर्ग विमाण ।।मी०।।१७।।
झड़ ओझड़ वाहइ रिणघोर, जूझइ राणी जाया जोर । मी० ।
'लालचंद कहै समझें सूर, दोन्यूं दल वीरा रस पूर ।।मी०।।१८।।

---

१ पंखोटा २ जाणे उधा ३ तिराय ४ रुधिर ५ हासउ हास
६ गयवर ।

दूहा

ऊभी जय जय ऊचरै, ले वरमाला हाथ।
अपछर आरतीयां करै, घालै सूरां वाथ ॥१॥

डिम डिम डमरू वाजतां, साथे भूत वहु प्रेत।
रुंड (तणी) माला संकर रचै, सिलो करै रिणखेत ॥२॥

जासक पीवें योगणी, भरि भरि पात्र रगत।
डडकारा डाकणि करै, जिण दीठइ डरै जगत ॥३॥

ढाल (२१) कड़खा री—गच्छपति गायइ हो जुगप्रधान जिनचंद

जूझै महाभिड़ मुगल हिन्दू सवल सेन सनूर।
तिण मांहि मांझि आइ जुड़ीया नांखि फोजां दूरि ॥१॥
गोरिल्ल गाजियो रे अरि गजां भांजन सिंह।
वादल वाच्चिउ हो भारत (में) भीम अवीह ॥२॥गो०॥
आलिमपति अलावदीनह मुगल्ल मीर मसत्त।
रावत गोरिल्ल वीर वादल जानि मैंगल मत्त ॥३॥गो०॥
धूजियो धड़ हड़ मेरु पर्वत चढी धरणी चक्र।
जम वरुण जालिम डस्या दिगपति संकीया मन सक्र ॥४॥गो०॥
हैं कंप हूआ नाग वासिक ईश ब्रह्मा रूप।
मुख करै ऊंचो वेलि रै मिस देखि डरइ अकूप ॥६॥गो०॥
वाहइ जंलोह छ्छोह हाथें करइं कंध कड़ंक
घण घणा हार्थे हण्या घण घण पड़े योध पड़क[1] ॥७॥गो०॥

---

1 दड़क।

विहूं बाथ घालै घाव घालै डला होवै दोय ।
सनाह तूटै रगत फूटै पुरज पूरजा होय ॥८॥गो०॥

चुचूइं धारां वहै सारां माचीयो झड़ झूझ ।
छिन छिन्न धाए लोह लागा रह्या मांहि अलूझ ॥९॥गो०॥

बड़ वड़ा सामंत योध जालिम भिड़ैं[1] वादो वाद ।
अति अधिक सूरातन वसै आवै न खेड़ा आदि ॥१०॥गो०॥

गुड़ गुड़ंत गुहीर नीसाण गाजै देखि लाजै मेह ।
घाव पड़ै तिण घाव नाचै धाम धूमी देह ॥११॥गो०॥

रिण चाचरैं रजपूत कूदैं करै हाको हाक
कूट कुटे कीया कण कण मुगल आया[2] नाक ॥१२॥गो०॥

आलिम अरेरे अकलहीणा अंध साचा ढोर ।
इम कही खड़ खड़ खड़ग वाहे तड़ातड़ि रिण घोर ॥१३॥गो०॥

हुसीयार हुओ हथीयार वाहो रही दिल्ली दूरि ।
किहां अकलि[3] हीणा एह वंभणा अकलि दीधी कूर ॥१४॥गो०॥

गृह मात तात अर भ्रात वंधव नेह नाण्यो कोइ ।
चितारीया नहि माल मिलकत सुक्ख नारी कोय ॥१५॥गो०॥
होइ लोह गोला मुगल दोला जोर जुड़ीया जंग ।
हैवरा गलि गज गाह वंधै रह्या[4] विडद अभंग ॥१६॥गो०॥
वाजीया सिंधु राग वारू भलो मारू भेद ।
जिहां भाट चारण डुंब बोलइं विड़द मनह उमेद ॥१७॥गो०॥

---

१ भिडइ, २ आण्या, ३ बुद्धि ४ वह्या ।

सांभलें चीलां वाप दादा सूरमा न समाय।
जूझतां सुभटां खैंच निज रथ अर्क देखैं आय ॥१८॥गो०॥
तिण[1] अओसर गोरिल वीर धसीयो जिहां आलिम साहि।
वाही वारू घाव[2] घालै खड़ग सबलो ताहि ॥१६॥गो०॥
भागोज भूंडो लेय पाघड़ साहि मुहूडै मूंक[3]।
गोरिल बोलै फिट्ट तुझ नै जाति थारी[4] में थूक ॥२०॥गो०॥
भाजंतां नइ घाव घाल्यउ जाय क्षत्री धर्म
वीनवइ बादल छोड़ि काका जाण द्यो बेशर्म ॥२१॥
उपरि ऊभा किलो देखै रावल भाण रतन
सहु मिली भाखइ धन बादल गोरिल धन ॥२२॥गो०॥
धन सामीधर्मी वीर बादल कहै पदमणि एम।
जिण विना माहरो पुरुष[5] इण भव छूटतो कहो केम ॥२३॥गो०॥
तूं जीवज्ये कोड़ाकोड़ि वरसां० माहरी आसीस।
दिन दिन ताहरो चढत दावो करो श्री जगदीस ॥२४॥गो०॥
खल हण्यो खत्रीवट लीक राखी, जगत साखी नाम।
गोरिल रावत रिणे रहीयो, कीयो साचो[6] नाम ॥२५॥गो०॥
लूटीयो ल्हसकर आप वसि कर छोडियो आलिम।
जीत्यो पवाड़ो धर्म आडो आवीयो कृत कर्म ॥२६॥गो०॥
केई न्हासी छूटा मरी खूटा कीया अरीअण जेर।
जीवतो मूंक्यो साहि आलिम घालि सबले घेर ॥२७॥गो०॥

---

१ इण २ घाव ३ मुक्क ४ मांहि थक्क ५ दुक्ख ६ साको ताम।

कहै साहि सुण सामंत वादल कीयो तैं उपगार
जीवीदान दीधो सुजस लीधो झालि गढ रो भार ॥२८॥गो०॥
वादल आगै हारि खाधी सीख मांगइ साहि।
एकलो आयो आप असुरां दलां वूजत साहि ॥२९॥गो०॥
वीजली[1] मुहें खल खेत्र वेड़े जैत्र पामी जंग।
पूरो पवाड़ो किलें गोरिल सूर वादल संग ॥३०॥गो०॥
अन्याय मारग जैति न हुवै, जोइ सवलो होई।
एकलै डीलै गयो आलम, एह परतख जोई ॥३१॥गो०॥
नीति मारग जइति पामइ, रहइ राज अखंड।
कह लालचन्द जगत्ति ऊपर, नाम तेज प्रचंड ॥३२॥गो०॥

दूहा

दोय दिनां के अंतरैं, आलिम एक खवास।
निसा साम वेला जई[2] पहूंता ल्हसकर पास ॥१॥

ढाल— (२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचा। राग-मारू

ल्हसकर मांहि मुंकीयो राजेसर
करिवा खवरि खवास रे राजेसर
ऊमराव आया वही दीझीसर
मुगल पाठण उल्लास रे राजेसर ॥१॥ह०॥
करी तसलीम ऊभा रहया राजेसर वेकर जोड़ी ताम रे दि०।
वूझै आलिम साहि सुं रा० कटक गयो किण काम रे दी० ॥२॥

[1] विजड़ी [2] थई।

भूखा त्रिसीया एकला रा० दीसे ए कूण हवाल रे दी० ।
किहां पदमणी परणी तिका रे रा० ए तो दीसै छै ख्याल रे दी०।३।
कहै पतिसाह कीधो घणो रा० बादल हम सुं कूड़ रे दी० ।
सइतानी सबली करी रा० ल्हसकर मेल्यो धूलि रे दी० ॥४॥ल्ह०॥
पदमणी रे मिसि पालखी रा० कीधी पांच[1] हजार रे दी०
तिण में दोय दोय नीकल्या रा० योध करंता मार रे दी० ॥५॥
कहर जूझ हम सुं कीयो रा० कटक कीयो कचघाण[2] रे दी०
हम है या तौ ऊबरे रा० मया करी रहमान रे दी० ॥६॥ल्ह०॥
हम भी भूले मोह[3] तै रा० कछु कीनो पदमणी टौंन रे दी०
तोही हम आगइ टिके रे रा० नहितर हिन्दू कौंन रे दी० ॥७॥
इम कही असवारी करी रा० नाक मुं कीनइ साहि रे दी०
ज्यूं आयो तिणही परइं रा० पहुंतो दीली मांहि रे दी० ॥८॥
आलिम महल पधारिया रा० आई हरम अनेक रे दी०
विनो करी पाए पड़ी रा० विनती करै सुविवेक रे दी० ॥९॥ल्ह॥
देखावो वे पदमणी रा० हम कुं देखण हुंस रे दी० ।
कैसी चतुराई अछै रा० रूप जोवां[4] कैसी रूंस रे दी० ॥१०॥ल्ह॥
पदमणी का मुंह काला किया रा० हम खैर करी है खुदाय रे दी०
करीई खमा बीबी कहै रा० हम लागो तुम बलाय रे दी० ॥११॥

दूहा

कहि[5] ममा बैठो तुमां, धरो मन मइं ग्यान ।
भरा पालो अविहड़ थे, हीइं खुदाय धरि ध्यान ॥१॥

१ दोइ २ कतलान ३ गरब मइ ४ जु ५ कहि नाना बेटा तुमां राखउ बहुत गुमान । नारि काज कलमथ करउ धरउ न मन मइं ग्यान ।

इन्द्र चंद्र नागेन्द्र सब, जस सेवै सुर नर राय।
तिण रावण राज गमाड़ीयो, नारी तणै पसाय ॥२॥
बेटा काहे कुं फिरो, करते आप कलेस।
बैठा जौख कहो इहां, दिल्ली गढ निज देश ॥३॥
हिव बादल की वारता, सुणयो देई कान।
पातिसाह न्हाठा[1] पछै, रिण सोध्यो बादल जाण ॥४॥
जग में जस पसर्यो घणो, खाट्यो वड़ो विरुद।
गढनी पोलि उघाड़ीयां, लोक कहैं जसवद[2] ॥५॥

ढाल (३३)

करड़ो तिहा कोटवाल एदेशी राग—खंभाइती जाति सोलाकी या मारू

रावल रतन सुजाण, सनमुख आए सामेलो करे।
सिणगार्या बाजार, हय गय रथ पालखीया बहु परेजी ॥१॥
मिलया श्री महाराज, बादल सेती नेह घणैं करी जी।
ले आया गढ मांहि, बैसाणी गज छत्र सिरइ धरी जी ॥२॥
देई देश भंडार, बादल नइ कीधो अधराजीयो जी।
तैं राखी गढनी लाज, आज पछै ए जीव तुमे दीयो जी ॥३॥
तु जीवे कोड़ि वरीस, धनमाता जिण तु गरभें धर्यो जी।
द्यै पदमणी आसीस, तैं उपगार अम[3] थी बहु कर्यो जी ॥४॥
मस्तक तिलक वणाय, भरि भरि थाल वधावै मोतियां जी।
निज बंधव करि थाप, पहुंचावै निज घरि उछव कियां जी ॥५॥

१ चाल्या २ सद् ३ वड़ो अमने।

आवंतां निज गेह, चउहटइ च्यारौं दिश नारी मिली जी ।
बोलइ कीरति वाल, मोतियां वधावै गावइ मन रली जी ॥६॥
इम आयो निज गेह, सयण संबंधी परजन सहु मिली जी ।
प्रणमै जननी पाय, माताजी आसीस दीइं भली जी ॥७॥
सझि करि सोल शृंगार, अधर बिंब[1] निज नारियां जी ।
आवी आणंद पूर, धवल मंगल करती सुखकारीयां जी ॥८॥
हिवें गोरिल की नार, पूछै तुम काकौ रिण किम रह्यो जी ।
कहो किम वाह्या हाथ, किम अरियण मारया किम जस लह्यो जी
कहै वादल सुणो वात, केहो वखाण करां काका तणो जी ।
ढाह्या गैंवर घाट, मुंगलां सुभटां संहार कीयो घणो जी ॥१०॥
राख्यो आलिम एक, तुरकां सकल सेन मारी करी जी ।
तिल तिल हूओ तन, हुओ प्राहुणो अमरापुर वरी[2] जी ॥११॥
राखी गढ री लाज, उजवाल्यो कुल गोरेजी[3] आपणो जी ।
इम सुणी गोरिल नारि, रोम रोम जाग्यो तन सूरापणो जी ।१२
विकसित वदन सनेह, भाखै सुणि बेटा रिण वादला जी ।
वहैलो वारि म लाय, दोहरा बैठा ठाकुर एकला जी ॥१३॥
विच छेटी वहु थाय, रीस करेसी अमने श्री राय जी ।
काकी ठाम लगाय, ढील कीयां हिवमइं न खमाय जी ॥१४॥
सुणि कहै वादल वात, धन धन माताजी ताहरो हीयो जी ।
सतवंती तूं साच, धन तें आपो आप सूधारीयो जी ॥१५॥

१ आसोपउ ले २ खरी ३ गोरिल ।

खरचै धन नी कोड़ि, तुरंग[1] चढि सिणगार सहू सभी जी।
अगनी कीयो प्रवेश, उचरति मुख श्री राम राम जी ॥१६॥
पहूंती प्रीउ नै पासि, अरध आसण दीधो आणंद थयो जी।
जग पसर्‍यो जस वास, 'लालचंद' कहै दुख दूरइ गयो जी ॥१७

दूहा

सूर कहावै सुभट सहू, आप आपणै मन।
दाव पड्यां दुख उधरैं, ते कहीये धन धन ॥ १ ॥
सांमीधर्म वादल समो, हुओ न होसी कोय।
युद्ध जीत्यो दिल्ली धणी, कुल उजवाल्या दोय ॥ २ ॥
रावलजी छोडाईया, नारी[2] पदमणी राख।
विरुद वड़ो खाट्यो वसु, सुभटां राखी साखि ॥ ३ ॥
चैंन राज चितोड़ को, कीधो वादल वीर।
नव खंडे जस विस्तर्‍यो, सामीधर्म रिणधीर ॥ ४ ॥
निरभैं पालै राज निज, रतनसेन महाराव।
सेवक वादल सानिधें, पदमणि शील पसाव ॥ ५ ॥

ढाल (२४)

राग—धन्यासीइं, चाल—लोक सरूप विचारउ आतम हितभणी
सती शिरोमणि साची थई[3] पदमणि लहीयइं रे
सुख लहीइं सिरदार
पाल्यो कष्ट पड्यां जिण शील सुहामणो रे
तन मन वचन उदार ॥ १ ॥

---

१ तुरीय २ राणी ३ सलहीइं ।

श्री रावलजी छूटा मोटा कष्ट थीरे, सुख हुवो गढ़ें जेह ।
वड़ो पवाड़ो खाम्यो गोरे वादलें रे, शील प्रभावैं तेह ॥ २ ॥
शील प्रभावैं नासें अरि करि केंसरी रे, विपधर जलण जलंत ।
रोग सोग ग्रह चोर चरड़ अलगा टलै रे, पातिग दूर टलंत[1] ॥३॥
श्रीसुधर्मासामि पाट परंपरा रे, सुविहित गच्छ सिणगार ।
श्री खरतर गच्छ श्रीजिनराजसूरीसरू रे, आगम अरथ भंडार ॥४॥
तस पाटि उदयाचल दिनकररे, श्री श्रीजिनरंग वखाण ।
रीझवियौ जिण साहजहाँ दिल्लीसरू रे, करिदीधउ फुरमाण ॥५॥
तास हुकम संवत सतर छीडोतरे, श्री उदयपुर जाण ।
हिन्दूपति श्रीजगतसिंह राणो जीहां रे, राज करै जग भाण ॥६॥
तास तणी माता श्री जंवूवती रे, निरमल गंगा नीर ।
पुण्यवंत षट दरसण सेव करइ सदारे, धरम मूरति मतिधीर ॥७॥
तेह तणैं प्रधान जग में जाणिइं रे, अभिनव अभयकुमार ।
केसरी मंत्री सुत अरि करि केसरी रे, हंसराज हितकार ॥ ८ ॥
जिणवर पूजा हेतइ जाणि पुरंदरु रे, कामदेव अवतार ।
श्रेणिकराय तणीपरि गुरुभगता सही रे, सिंह मुकट सणगार ॥९॥
पाट सात पाछइ जिण देस मेवाड़मइंरे, थाप्यो गच्छ थिरथोभ ।
कटारिया कुलदीपक जग जस जेहनउ रे,
श्रीखरतर गच्छ शोभ ॥१०॥
तसु वंधव डुंगरसी ते पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भाण ।
विनयवंत गुणवंत सुभागी सेहरउ रे, वड़ दाता गुण जाण ॥११॥

---

१ पुलंत ।

तसु आग्रह करी संवत[1] सतर सतोतरे रे, चैत्री पूनम शनिवार ।
नवरस सहित सरस[2] संबंध रच्यो रे, निज बुद्धि ने अनुसार ॥१२
श्री जिनमाणिकसूरि प्रथमशिष्य परगड़ा रे विनयसमुद्र वड़ गात ।
तास सीस वड़वखती जगमइं वाचियइ रे,
श्रीहर्षविशाल विख्यात ॥१३॥

तास विनेय चवद विद्या गुण सागरु रे, वाणी सरस विलास ।
जस नामी पाठिक श्रीज्ञानसमुद्रजी रे परगट तेज प्रकाश ॥१४॥
साध शिरोमणि सकल विद्या[3] करि सोभतारे,
वाचक श्री ज्ञानराज ।
तास प्रसादे शील तणा गुण संथुण्या रे,
श्रीलब्धोदय हित काज ॥१५॥

सामिधरम ने शील तणा गुण सांभल्या रे, पूगै मननी आस ।
ओछो अधिको जे कह्यो कवि चातुरी रे, मिच्छादुकड़ तास ॥१६॥
नव निधनै वलि अष्ट महा सिद्ध संपदा रे, दूर मिटै दुख दंद ।
लब्धोदय कहै पुत्र कलत्र सुख संपजै[4] रे,
शीयल सफल सुख कंद ॥१७॥

गाथा दूहा ढाल आठ सै अतिनंद
सीअल प्रभावे संपदा इम जंपइ लब्धानंद ॥१॥

१ चैत्र सुकल तिथि पंचमी मृगशिरनें बुधवार २ नवउ ३ गुणेकरि ४ संपदा ।

इति श्री शील प्रभावे पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा बंधे
श्री रतनसेन रावल तास सुभट गोरा बादल रिण
जय प्रतापैः तृतीय खण्ड सम्पूर्णम्

सकल पण्डितोत्तम प्रवर प्रधान शिरोवतंस पंडित श्री ५ श्री कल्याणसागर गणि तच्छिष्य पंडित श्री ५ हर्षसागर गणि तत्शिष्य पंडित श्री सकल सभा शृङ्गार शिरोमणि रत्न पंडित श्री १९ श्री हीरसागर गणि...................... श्री ५ श्री गुणसागर गणि। तच्छिष्य पुण्यसागरेण लिखितेयं॥
सं० १७६१ वर्षे आशु वदि १० भोमे दड़ीवा मध्ये लिखितं॥
श्रीरस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ श्री भद्रमस्तु॥ शुभं भूयात् श्री॥
श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥

प्रति नं० ३८१४ (बं० ८२) श्री अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर। पत्र २० अंतिम पत्र १ तरफ खाली। पंक्ति १५ अक्षर ५६-६० प्रति पंक्ति। अंतिम पत्र थोड़ा नष्ट।

(२) इति श्री पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा बंध उपाध्याय श्री ५ ज्ञानसमुद्र गणि गजेन्द्राणां शिष्य मुख्य विद्वद्राज श्री श्री ज्ञानराज वाचकवराणां शिष्य पं० लब्धोदय विरचिते कटारिया गोत्रीय मंत्रिराज हंसराज सं० श्री श्री भागचंद्रानुरोधेन श्री गोरा बादल जयत प्रापणो नामस्तृतीय खण्डः॥ तत्समाप्तौ समाप्तमिदं श्री पद्मिनी चरित्रं तद्वाच्यमान श्राव्यमान चिरं नंदतादाचंद्रार्कं यावत् लिपि कारिता च सुश्रावक पुण्यप्रभावक.......................॥

॥ संवत् अठारेसै १८२३ वर्षे मिती भाद्रवा वद ८ दिने लिपी कृतं। वाचणवाला कुं धरमलाभ छै। लिखतं मकसुदावाद मध्ये लपि कृतं ॥ श्री ॥ श्री ॥ [पत्र ४८ जैनभवन, कलकत्ता

(३) गाथा दूहा सोरठा, सोल अधिक सै आठ।
कवित दूहा गाथा मिल्यां, सुणो सुगुरु मुख पाठ ॥१॥
ढाल सरस गुणचालसुं श्लोक तणी संख्या एकादश शत अधिक छै, पंचासत नइ सात, अनुमाने लालचंद कहइ ॥

इति पद्मिनी चौपाई संपूर्णम्। सकल पंडित शिरोमणि पं० श्री १०५ श्रीराजकुशल गणि शि० ग० ऋषभकुशल लिखितं आमेट नगरे संवत १७५८ वर्षे।

[ओरियण्टल इंस्टीच्यूट वडौदा प्रति नं० ७३३ की नकल गुलाबकुमारी लाइब्रेरी कलकत्ता में]

गोरा बादल कवित्त

गज बदन गणपति नमूं, माहा माय बुधि देय।
गुण गूंथूं गोरल का, जस वादल जंपेय ॥ १ ॥
चहुआंणां कुलि ऊपना, गोरउ अरु गाजन्न[1]।
चित्रकोटि गढ उदया, राउ रत्नसेन मनि रंग ॥ २ ॥
सउहड सिरोमणि निम्मयउ, गाजन सूअ वादल्ल।
वरस वीस त्रणि अग्गलउ, भड सूरतांणा सल्ल ॥ ३ ॥
दल असंख जिणी गंजीया, असपति मोड्या मांण।
राखी सरण पद्मावती[2], वंध छोडायउ रांण ॥ ४ ॥
काका भत्रीजा बिहुं, गोरउ अरू वादल्ल।
पद्मनी काजि भारथ कीउ, हडमत जिम सर भल्ल ॥ ५ ॥
सोहड सुभट बादल करी, असी न करसीं कोय।
सोहड़ा सोह चढावीय, गोरा वादल दोय ॥ ६ ॥
गढ डीली अलावदी; चित्रकोट गहलउत।
पद्मणि कारिज साधीयउ, कहसूं तेह चरित्र ॥ ७ ॥

कवित्त

चित्रकोट कैलास, वास वसुधा विख्यातह,
रत्नसेन गहलोत, राय तिहा राज करंतह।

---

१ बादल। २ पद्मणि काज भारथ कीयउ।

तुरीय सहइस पंचास, दोय[1] सइं महगल मंता,
राजकुली छत्तीस, सोहड भड सेव करंता।
प्रधान लोक विवहारीया, राजलोक सहुअै सुखी,
च्यार वरण गढ महि वसइ, जती मुनी नहीं कोय दुखी ॥८॥

एक दिवस महलउत, राय वइठउ भूंजाई,
सतर भख्य भोजन्न, मूंधि हस कर लेइ आइ।
के खारा के मीठ, केइ कछु स्वाद न आवइ,
तव पटरानी कह्यउ, वेग पद्मनी क्यों न लावइ।
धरि मछर संघलि सांचर्‌यउ, नेव जीत कन्या वरी,
पद्मनी ज आंणि परणज करि[2], राय रत्नसेन अइसी करी ॥९॥

विप्र एक परदेस थी, फिरत आयउ तिण ठायह,
सभा मझि जव गयउ, नयण पेख्यउ तव रायह।
फल कीधो तिण भेटि, वयण आसीस पयासइ,
विद्यावाद विनोद, वांणि अमृत गुण भासइ।
राघव सभा जव रिंजवी, तव राजिन मन भाइयो,
हुउ पसाव कीन्ही मया, आपस पास रहावीउ ॥१०॥

रत्नसेन राघव, रमति कारणि एक ठायह,
जीतो दांण तिहा राव, दांण मंगीउ सूभायह।
चढ्यो विप्र तव कोप, राय मनि मछर कीउ,
छंड्यो ए अस्थान, देव देसउटउ दीउ।

---

१ पंच। २ धति।

उचरइ विप्र ऐरिसह वयण, राउ एक प्रतिज्ञा हूँ करू,
पइहराउं लोह तुम्ह पय कमल, तव चित्रकोट बोहड फिरू ॥११॥
चित्रकोट तव छंडि चित्त एह वयण विचारयउ,
करवि होम आउध,[1] सबद[2] अइसउ संभारयउ।
वीस भवन महसांण, मंत्र योगिनी आराधी,
कहो नइ देव कुण काज, आज ए विद्या साधी।
उचरइ विप्र[3] स्वामिनसूणि, एह भेद मुझ अपीइ,
आगम निगम सहुइ लहूँ, तउ वाचा दे थर थपीइ ॥१२॥
तव तूठी योगिनी, हुई प्रसिद्धि[4] प्रसन्नी,
ब्रह्म रुद्र करि वाच, वाच निश्चल करि दीन्ही।
जिहां हकारइ मोहि,[5] , तोहि साचउ करि जांणइ,
आदि अन्त उतपत्ति, विपति तौ सहु पीछानइ।
आस्थान आप जोगिन हुइ, विप्र पंथ आश्रम करयउ,
आणंद अंग ऊलट घणइ, तव डीली[6] गढ संचरयउ ॥१३॥
वचन्न कला उतपन, पवन छतीस मिल्या तिहां,
राय रांणा मंडलीक, खांन ऊंवरे[7] खडे तिहाँ।
मन संकेत पूरवइ, जेह कछु मन माहि इछइ[8],
जे धन कारन धाय, आय विप्रन कूं पूछइ।
बात सुनी सूलतान एह, वे वजीर सचा कहउ,
दरवेश वेस अलावदी आय पडहंतउ विप्र पोह ॥१४॥

---

१ आहुत्त। २ मंत्र। ३ रांघव कहइ। ४ परतक्ष। ५ सोहि।
६ ढिल्ली। ७ ऊमरा। ८ अच्छइ।

कहइ न वात कछु अवही, कवही कर द्रव्य मिलिही मुझ,
कहइ न वात जनारदार, मइ सवद सुनीय तुझ ।
काल कोस फकीर, तीर सायर फिरि आवहि,
निखुता नाहि निलाट, लख्या नहीं कोरी पावहि ।
तव कोप कलंदर कहइ, क्या किताव दुनिया दीया,
संक्यउ स विप्र संसहि पड्यउ, एह योगनि तइं क्या कीया ॥१५॥
तव योगिन मन धरीय, करीय सेवा मइ कचीय,
वचन सौध नवि लहूं, वाच नह पालइ सचीय ।
वचन शुद्धि तउ लहइ, भक्ष जउ मोरउ जांणइ,
वेगि जाउ दरवेस कहुं जउ मंखण आंणइ
इहां राति किहां मंखण लहुं, तव घीउ लेउ करि संचर्यउ
अल्लावदीन सुरतांण को, सीस छत्र तुझ सिरि धर्यउ ॥१६॥

तव कोप किलंदर कहइ, क्या तुफाना उठायउ
तू वोलइ सवं भूठ, राज मुझ पइं किहां आयउं
एह वात सुणइं सुरतांण, करइ टुकटुक तन मेरा
करइ नहिं कछु विलंव, अउर सिरि कट्टइ तेरा ।
उचरइ विप्र दरवेस सुं, अलख लिख्या सो पइं कहुं,
जउ सीस छत्र तुझ कउं मिलइ, क्या इंनाम हु भालहूं ॥१७॥
तव खुसी भयउ दरवेस, कर्म करतार करहि जव
तोहि हइ गइ पाइक, करइ तसलीम तोहि सव
तखत तलइ मेरइ तु ही, तु हि दिल्लीवइ जांणू
कहे तुहि सव साच अउरका कह्या न मांनु

नयनाभिराम चित्तौड़ दुर्ग
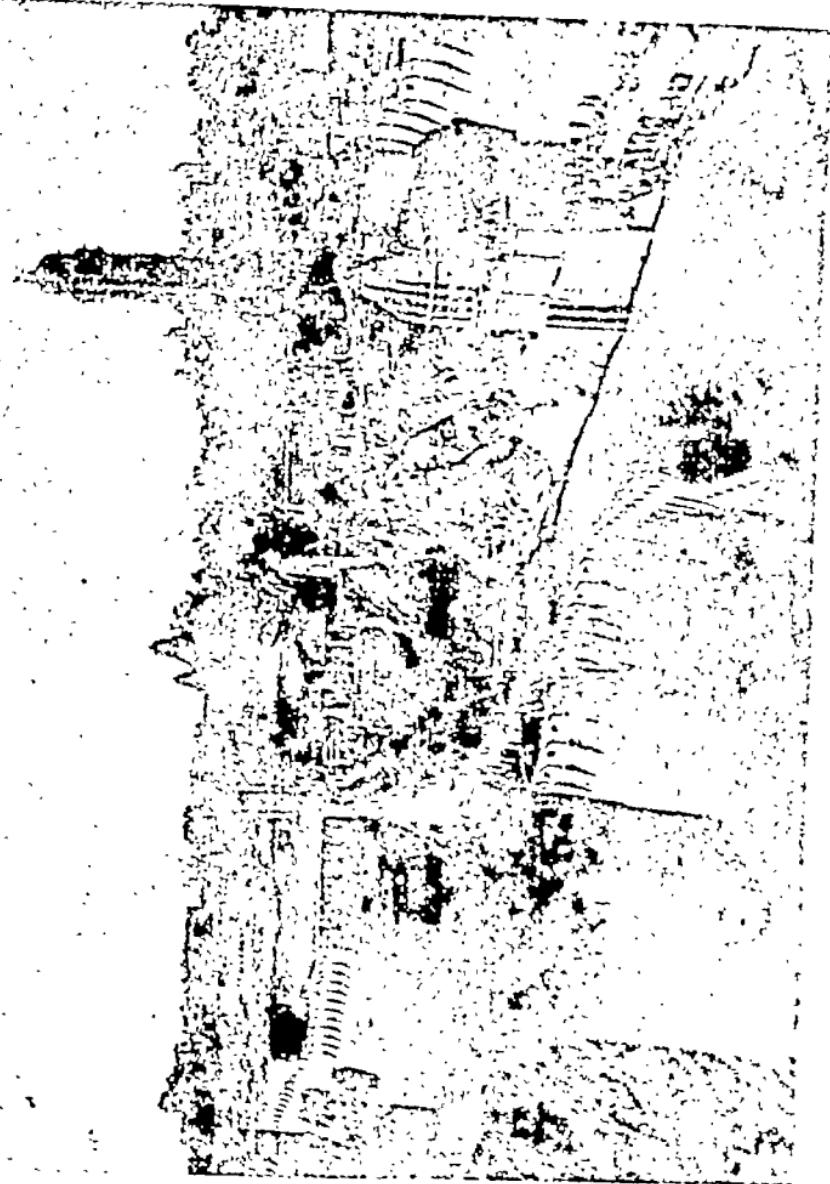
अल्लावदीन सुरतांण की, सीस छत्र काइम रहइ,
दरवेस वेस कहि विप्र सुणि, तुंहि मुंहि मागइ सोभी लहइ॥१८॥
फेरि वेस सुरतांण, तांम निज मंदिर आयउ,
ऊग्यउ सूर परभात, तवही वंभण वुलायउ।
सभा मध्य जव गयो, चित योगिणि समरंतउ,
छत्र सिंघासण सहित, साह नयणे निरखंतउ।
संक्यउ सु विप्र असपति सहित, निसचरिज रयणी फिर्यउ।
मंगह सु मंगि असपति कहइ, वाचा मोहि ऊरण करउ॥१६॥

दूहा

तव सुरतांण निवाजीयु, राघव वहुत उछाह,
जे मनि चीतइ सोइ करइ, वसि कीधउ पतिसाह॥२०॥
मल्ल भाट सुरतांण पय, आयउ मंगण कज्जि।
मुहुल तलइ जइ द्वा करइ जिहां खडे असपति सज्जि॥२१॥

कवित्त

एक छत्र जिण प्रथीय, धरीय निश्चल धरणि परि,
आंण किद्ध नव खंड, अदल किद्धउ दुनि भितरि।
अनिल नलणि विभाड, उदधि कर माल पखालिय,
अंतेवर रही रंभ, रूप रंभा सुर टालीय।
हेतम दांन 'कवि' मल्ल भंणि उदधि खंध वे वखत गुनि,
दीठउ न कोई रवि चक्र तलि, अल्लावदीन सुरतांन घनि॥२२॥
मम पढि भट्ट कवित, वुद्धि खोजुं देइ पूरउ,
सुख सवाद करि रोस, सिद्धहर मजलगि सूरउ।

किहां सुणी पदमिनी सेसधर अंती सोहइ,
सुरनर गुण गंध्रव, देखि मुनिवर मन मोहइ।
संखिनी सवे सुरतांण घरि, कोप हूउ वेजन कसइ,
लावत मारि खोजा निसुणि, पतिसाह मुरके हसइ ॥२३॥

दूहा

बंदण प्रतइ अलावदी, कहि सु वयण विचार।
कटारी सहिनांण लइ, राघव वेग हकारि ॥२४॥

कुण्डलीयउ

आलिमसाह अलावदी, पूछइ व्यास प्रभात।
सयल परीक्षा तुं करइ, स्त्री की केती जाति ॥२५॥
स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी,
रूपवंत पतिव्रता, मूंध सोहइ सुपियारी।
हस्तनी चित्रणी कर संखिनी, पुहवी वड़ी पदमावती,
इम भणइ विप्र साचउ वयण, आलमसाह अलावदी ॥२६॥

कवित्त

इम जंपइ सुरतांण, सुनि वे राघव इक वातह,
जाति च्यार की नारि, केम जांणीइ सुचित्तह।
गंध रूप सदभाव, केस गति नयण निरत्ती,
वयण वांणि तसु अंग, कहु किशि तखत किसि भंती।
हस्तिनी चित्रणी कइ संखिनी जाति तीन दीसइ घणी,
पातसाह अरदास सुणि, दुनी पियारी पदमिनी ॥२७॥

दूहा

राघव वयण इम ऊचरइ, सांभल साह नरेस।
त्रीया लखणे बूझीयइ, कोक तंणइ उपदेस ॥२८॥

सलोक

पद्मिनी पद्म गंधाच, अगर गंधाच चित्रणी।
हस्तिनी मद्य गंधाच, खार गंधाच संखिनी ॥२९॥
पद्मिनी पुष्फ राचंति, वस्त्र राचंति चित्रणी।
हस्तिनी प्रेम राचंति, कलह राचंति संखिनी ॥३०॥

कवित्त

गहिर महिर अलावदीन, राघव हकारीय,
नयण नारि निरखेवि, देखीइ हरम हमारीय।
हंसगमण गजचलणि, साहिजादी अनुरत्ती,
सुरत्ति सुर नर, स्त्रीया पेखि हस्तीनी,
चित्रणी क संखिनी क, किती साह घरि पदमिनी ॥३१॥
साह आलिम एक वयण, विप्र उचरइ सुमिट्ठउ,
लोयण ते हेतम कीय, जेणि परि रमणि मुह दिट्ठउ।
कहइ एम सुरतांण, कहु कइसी परि किज्जइ,
काच कुंभ भरि तेल, मुहुल मांही रास रचिज्जइ।
इक संग रंग ठाढी रहइ, सजे सिणगार सवि कांमिनी,
प्रतिबिंब निरखि राघव कहइ, सो कहुं साह घरि पदमिनी॥३२॥
पातिसाह राघव, आच तिण ठामि बइठा,
काच कुंभ ढालेइ, भरीय जस तेल गरिठा।

सजे सिंणगार सवि कांमिनी, भूयण सिरि छज्जइ ठढी,
के स्यांमा के गोर, केह गुण गाहा पढी।
निरखंति वयण मुख मज्झि नव, एह बात चित्तह गुणी,
दोइ जाति नारि दीसइ घणी, सु नही साह घरि पदमिनी ॥३३॥
रोस भयु सुरतांण, खांन अर पांन न भावइ,
वे ला इत मारि लवार, वेग पदमिणी दिखलावहि।
ले किताव कर धारि, करइ वंदिन वीनत्तीय,
संघलदीप समुद्र, अछइ पदमिण वहु भत्तीय।
हुसीयार होइ अरदास करि, एक अधू पेखइ जिहां,
संभली समुद्र संसइ पड्यउ, कोइ खुदीय खुते तिहां ॥३४॥
असपति कीयउ आरम्भ सु दिन साधीयउ दखिण धर,
पातिसाह कोपींयउ, कुंण छुट्टइ संघल नर।
दल गोरी पतिसाह, जुडइ संग्राम सुहुड भड़,
नव लख त्रिगुण तुरंग, चउद सहस मइंगल घड।
सूर्ज खेह लोपवि गयउ, पातालइं वासग डुड्यउ,
चिहु चक्करायसांसइ पड्या, पातिसाह किसपरि चड्यउ ॥३५॥
चड्यउ चंचल सुरताण, खेडि दख्यण तटि आयउ,
सेन सहू उत्तरी, तिवही बंभण बोलायउ।
चेतकरी चेतन्न, एम जंपइ खूंदालम,
मइं कताव तोही दीयउ, भयु सु दुनीयां मालम।
असपति कहइ चेतन सुनि, अब वेगइं संघल संचरउ,
जिसी भांति पदमिनी कर चढइ, सोइज मित्र चित्तह धरउ ॥३६॥

पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि साइर,
करउ मंत्र चेतन्न, कटक लंघीइ रिणायर।
सुणि आलम वीनती, नीर कउ अंत न जाणउ,
संघलदीप पदमिनी, घरहि घर अधिक वखाणउं।
भंजउ सु कोट असपति कहइ, देखि दाउ तिसकुं दिउ,
ग्रहे खग्ग सीस राजा हणउ, पकडि ग्राह पदमिणि लिउ ॥३७॥

हठि चड्यउ सुरतांण, खंणवि धरणि तलि पिल्लउं,
वेगि ल्यावि पदमिणी, सेन सवि साइर घल्लउं।
मिलि वइठा मंत्रवी, कहां हम पदमिणी पावइ,
वे वंभण तूं कूड, भूठ वातइं इहां ल्यावइ।
राघव कहइ तुम्ह मति डरउ, हुं करउं मंत्र मनि भाईयउ,
सुलतांण तांम समभाइ करि, वाहुडि डिल्ली लाईयउ ॥३८॥

सलहिदार हथियार, लेइ आगइ अवधारीय,
संभाले सवि सेल, मांहि भेजे चिति धारीय।
बीवी तव पूछीयउ, साह पदमिणि किहीं आंणी,
च्यारि त्रीया घरि नही, किसी तिस की सुरतांणी।
खुणसि भई सुरतांण मनि, तव अंदेसा किधा वहु,
संघल दल जे पठया हुई, वे राघव पद्मिणि कहु ॥३९॥

तब राघव चिंतवइ, वयर पाछिलउ संभारयउ,
कहुँ जिहां पदमिनी, साह जु चितइ धारउ।
गढ चितोड हिंदुआंण, रांण गहिलोत भणिज्जइ,
रत्नसेन घरि नारि, नारि सिंघली सुणिज्जइ।

उचरइ विप्र एरिस वयण, लोग त्रिण्हि जीता तिरी,
इसी नही रविचक्र तलि, मइं नव खंड देख्या फिरी ॥ ४० ॥

लाख तूल पल्लिंग, सउडि पिणि लख मिलइ तस,
अंतह पुड सइ पंच, अव्वर गिंदूया सहस जस।
तसु ऊपरि ओछाड, रंग बहु मूलइं लीधा,
अगर कपूर कुमकुमा, कुसम चंदन पुट दीधा।
अलावदीन सुरतांण सुणि, चेतन मुख सचउ चवइ,
पदमिणी नारि सिंणगार करि, राय रत्नसेन सेजइ रमइ ॥४१॥

पलांण्यउ अलावदीन, जल थल अकुलांणा,
राय रांणा खलभल्या, पड्या दह दिसि भंगाणा।
हय गय रथ पायक, सेन कांई अंत न पावइ,
जे मोटा गढपती, तेह पणि सेवा आवइ।
तव कोप करवि वल मुँछ धरि, कहइ साह विग्रह करउं,
मारउ देस हींदुआंण कुं, त्रीया एक जीवत धरउं ॥४२॥

वंकउ गढ चित्रकोट, सकति सुरतांण न लिज्जइ,
ऊठि आई मुसाफ, वोल जस राय पतिज्जइ।
डंड डोर नवि दिउं, देस पुर गांम न गाहूँ,
नांही गढ सुं काज, राजकुंअरी न व्याहुं।
राघव कहइ असपति सुणि, कहि राजा मारिन आहुडउं,
रत्नसेन मुझकुं मिलइ, तउ नाक नमिणि करि वाहुडउं ॥४३॥

कुंडलीउ ॥

दल सझवे सुरतांण, आय चित्रकोट विलिज्जइ,
भेजउ वेगि विसेट, वात मिलणे की कीजइ।
दीजइ कर की वाच, जेम 'गहिलोत' पतीजइ,
हम तम विचइं खुदाइ हइ, लेइ मुसाफ आदइ धरउ.
चितोड देखि वेगइं फिरउं, वाचा देइ थप्यउं खरउ ॥४४॥

दूहा

वेग विसेट चलाइयउ, पुहतउ गढह मझार।
सभा सहित राय भेटीयउ, वोलइ वयण विचार ॥४५॥

कवित ॥

वात करी तव मिठ, राय तस वयण पतिनउ,
जिण परि कही विसेट, सोइ परि राजा किन्हउ।
राजकुली छत्रीस, सहूति सभा भणिजइ,
असपति आवणु कह्यउ, कहु किणपरि बुधि कीजइ।
मिली प्रद्धान इंम चीतवइ, सेन सहु दुरिहिं पुलइ,
जण वीस सहित आवइ ईहां, तु पतिसाह रांणा मिलइ ॥४६॥
दिधी पोलि चिटकाइ, डस्या गढ तुरक नभाया,
गोरी गोधउ मंड, साथि लसकरह सवाया।
अव तु मेलु भयो, राय जिमणार कराया,
त्रीस सहस मेली गया, साथ लसकरह सवाया।
खांणाज खाइ जव उठीया, पकड़ि वांह राजा लीया,
वात ज करत लंघीय पोली, तव रतनसेन काठा कीया ॥४७॥

कीयो कूड सुरतांण, सांमि मोरउ ग्रहि वंध्यउ,
पदमणि द्यु तु जाउ, काजि कारणह समंधउ।
भलो न कीयो किरतार, केम गहिलोत वंधीजइ,
कीयो मंत्र मंत्रीयां, राय राखवि त्रिय दीजइ।
तदिन जीभ खंडवि मरउं, योगिणीपुर नवि दिखसउं,
पदमिणी नारि इंम उचरइ, अव कह सरणागति पइठिसिउ ।४८।
दुख भरी पदमिणी, एम परिपंच विचारइ,
कोई संसारि समरथ, सूर मोहि सरणि उवारइ।
जे गढ मांही रावत, तेह सवि हीणु भाखइ,
इसउ न देखु कोइ, मोहि सरणागति राखइ।
उचरइ नारि विलखी हूई, सरण एक हरि संभरउं,
पणि राजलोक मांहि चंदन रचे, सखी वेगि जमहर करउं ॥४६॥
सखी एक कहुं तोहि, मोहि जउ वयण पतिज्जइ,
मनावउ गोरल्ल, दुख सहु तास कहीजइ।
वरस पंच तस विखउ, राउ सु कुरखे चलइ,
ग्रांम ग्रास नवि लीइ, कुंण गुण मोहि उथलइ।
सुणि राउत्त कुलवट्ट तस, जिण सिर सूंप्यउ परकज सउं।
पदमिणी नारि इंम उचरइ, तु वादल सरणि पइठसिउं ॥५०॥
चडे संघासण तांम, करह करि कमल उघास्यउ,
जीहां गोरउ वादल, पाउ पदमिणी तांहां धास्यउ।
गंग उलटी पचिम प्रवाह, भणइ इंम गोरउ रावत्तह,
ए तुम्ह कुं वूझीइ, देत आइस हम आवत्तह।

पदमिणी नारि इंम उचरइ, तुम्ह लगइ कीजंति बल,
कर ऊभु करइ ज सांमि कज, करउ कित्त जिम हुइ कलि ॥५१॥

तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज दल मांही वडउ,
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज मोरउ भाईड़उ।
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज दल वडउ छजइ,
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुं ही देखवि राय गज्जइ।
सुणि गोरल्ल पदमिणि कहइ, मोहि दासी करि सुरतांण दइ,
कइ अल्लावदीन सुंखग धरि, कै राउ रत्नसेन छोडावि लइ ॥५२॥

सुहुड सुभट गोरल्ल, तांम गहगह्यउ सुचित्तह,
दल भंजउं सुरतांण, नांम तु थु रावत्तह।
सांमि कजि अणसरउं, नारि पदमिणी उवेलउं,
गढ राखउं भुज प्रांणि, मारि असुरां दल पिल्हउं।
कहइ गोरल्ल सुणि सांमिनी, जाउ तुम्हे गाजन्त घरि,
अवतार पुरूप विधना रच्यो, सु वीड़उ चु बादल करि ॥५३॥

लीन्ह पांन बादल्ल, रयण हूँ ते गढ भीतरि।
सत्ति तुम्हारइ साहस्स, साह भंजउं खिण अंतरि।
दोइ कुल भेटउं लाज, तु नाम बादल्ल कहाउं।
गोरी दल विन्नड़उं, कूटि करि बांधव ल्याउं।
जिम राम कज्ज हनुमंत करि, महिरावण बंध्यउ तिखिणि।
काटउ ज बंध राउ रत्न के, तु साहस भंजउ साह हणि ॥५४॥

चाड कूड विन्नयउ, मंत्री कउ मंत्र भुलांणउ,
रतनसेन बंधेवि लीय, गढह चिहुं दिसि अहिरांणउ।

कायर झंखइ आल, रांणी दे राजा लिज्जइ,
अल्लावदीन सुरतांण संड, केम करि खग्ग धरिज्जइ ।
इम कहइ चाड रावत सुणि, हीइ मंत्रि निचल धरउ ।
गढ रहइ राउ छूट्टइ सही, त्रीया देई इतउ करउ ॥५५॥

वयण सुणी रावत्त, रोस करि खरा रीसांणा ।
दोय चडीया अति कोप, दोय अति चतुर सयांणा ।
रिण मांही अणुसरया, सीस वड समुहा वंछी ।
मोल मुंहुंगा लहइ, चडइ कुंजर सिर तछी ।
गोरउ गरिष्ट वादल विषम, दोय साहस समुहा सस्या ।
फुट्टउ सु हीयो जिह्वा गलउ, जिणि पदमिणि देणा कस्या ॥५६॥

आवि माइ तिणि ठाय, पासि वादल इंम ठढीय,
तोहि विण पुत्र निरास, तुंह चल्यु झुझण कसीय ।
नयण मोरउ वादल्ल, वयण बादल्ल भणावीय,
प्रांण मोरउ वादल्ल, वार वारई समझावीय ।
आवती माय अग्र पेखि करि, उठि वादल्ल प्रणाम कीय,
वालक पुत्र जगि जगि जयो, किणइं कुमित्र कुमत दीय ॥५७॥

हुं किंत वालउ माय, धाइ अंचल नहि लगउं,
हुं कित वालउ माय, रोय भोजन नही मग्गउं ।
हुं कित वालउ माय, धूरि धूसर नही लिट्टउं,
हुं कित वालउ माय, जाइ पालणइ न घुटउं ।
वालउ ज माय मुझ क्युं कहउ, अवर राय रखउं जीउ,
सुलतांण सेन विनडउं नही, तव रे माय फुट्टइ हीउ ॥५८॥

रे बाले बादल्ल, मनह अपणइ न बुझिसि,
रे बाले बादल्ल, केम करि सांम्हु भूझिसि ।
गढ वींम्यउ सव ठाय, असुर दल देखउं भारी,
तुं नांन्हु बादल्ल, केम करि खग्ग संभारी ।
इंम कहइ माय बादल्ल सुणि, वयण एक मोहि चित धरि,
सांहण समुद्र सुलतांण का, कुण सुबल्ल अंगमिसि भर ॥५९॥

हुँ कित बालउमाय, गहिवि गयन्दतउ खेलउं,
हुँ कित बालउ माय, सेसफण विमुहा पिल्हउं ।
बालउ बासिग कांन्ह, नाथि आणीयु भुजा बलि,
बलि चाप्यु धर पीठ, वेणि दिधउ स्वांमी छल ।
बाली बाला पउरस घण, दुरजोधन वंधवि लीयु,
बादल्ल गयंद इंम उचरइ, तब सुणवि माय पिछित कीउ ॥६०॥

माय जाय पठवी, वेग तिही नारिज आई,
कुच कठोर कटि भीण, रूप जण रंभ सवाई ।
कोककला कांमिनी, पेखि त्रिभुवन मन मोहइ,
प्रेम प्रीति अग्गली, अंगि लक्षण जस सोहइ ।
बादल देखी जब आवती, तब सुचित विसमु भयु,
लालच्च नारि निरखु हवइ, तु मोहि सूर साहस गयो ॥६१॥

तब कमलिणि विस तरंग, नयण सूं नयण न मेलिग,
वयण वयण न हु मिली, अहर सुं अहर न पिल्लिग ।
अति भुज पवन प्रचंड, कठिण कुच कमल न भिडिग,
रहिसेन फरसेग अंग, त्रीय घाए नह पिठिग ।

सुख सेजन मांणी तनउं, कंता बाले फल कीय हुय,
संग्रांम सांमि किम झुझस्यउ, कहुन कुंमर गाज्जन सुय ॥६२॥
लोअण तेह खिसि पडउ, केय पर त्रीय उल्हासी,
चरण तेह गलि जाउ, जेण रिण पाछा नासी ।
हीयो तेह फुटीयो, जेण मन कीयो दुमंन्नउ,
श्रवण तेह सधीइ, जेण हरि सुण्यउ विमंन्नउ ।
बादल कहइ रे नारि सुणि, असुर सेन त्रिणवडि गिणउ,
नीपजे न सरवर सेन, जु न साह सनमुखि हणउं ॥६३॥

कुंडलीया

कंता झुझिसि कवण परि, किम करवाल ग्रहंति,
पेखि सांगि अणी अग्गला, किम करवर झालंति ॥६४॥
किम करवर झांलति, कुंत अणी अग्गल फुट्टइं,
खग्ग ताड वाजंति, सुहुड़ अधो धड़ तुट्टइ ।
जु प्रीय कायर होय, पेखि गय जूह गजंता,
तु मोहि आवइ लज्ज, जु तुं रिणि भजिसि कंता ॥६५॥
हय सूं हय नरदलउं, हस्ती सू हस्ति पछाड़उं,
कुंतकार सुं कुंत, खग्ग सुं खग्ग विभाडउं ।
छत्र छत्र छिनि छिनि, चमर आडंबर तोडउं,
तु जायु गाजन्न, साह समहरि चडि मोडउं ।
बादह्ल कहइ रे नारि सुणि, तब ही तुझ सेजइं सरउं,
चीतोडि रांण पदमावती, हूं बादल एकत करउं ॥६६॥
सुणि स्वामी वीनती, कयण एक कहुँ सु मिठउ,
मो सिरि चडइ कलंक, बांह कंकण नहि छुट्टउ ।

पूरि आस पदमिणी, मोहि निरासी किज्जइ,
आप हांणि घरि होइ, अवर कारणि जीउ दिज्जइ।
इंम कहइ नारि कंता निसुणि, सेन सहुय एकंत हुअ,
गोरल्ल पुठि समहर चडइ, रहु न कुंअर गाजन्न सुय ॥६७॥
अथग पवन जु रहइ, वहइ गंगा पच्छिम मुह,
मेर टलइ मरजाद, जाइ नवखण्ड रसातल हु।
सेस भारजु तजइ, चलइ रवि चन्द दखिण धर,
सुर असुर सहू टलइ, संक नह धरइ अप्पसर।
एतला बोल जउ सहू हुइ, हूँ वयण सच्चउ करउं,
बादल्ल गयंद इंम उचरइ, तुहि न नारि पाछउ सरउं ॥६८॥

गोरउ अर बादल्ल, आय दोय सभा वयठा,
जे गढ मांही रावत, तेह सहू मिल्या एकठा।
करउ मंत्र विचार, बुधि छल भेद करीजइ,
देणी कहु पदमिनी, जेम सुरतांण पतीजइ।
डोली कीजइ पंचसइं, सुहड सवे सन्नाहीइ,
एकेक डोली आठ आठ जण, इंम परिपंच रचाईइ ॥६९॥

रची एम परिपंच, वेगि तव दूत चलायो,
खवरि करउ सुरतांण, हुं तु पदमिणी पठायो।
जे दासी अंगरक्ख, हरम सवि डोलइ घल्लउं,
हीर चीर सोवन्न, लेई तुम्ह साथे चल्लउं।
इंम कहइ नारि पदमावती, पातिसाह अरदास सुणि,
जिस घड़ीय राय छुट्टइ सही, हुँ न रहुँ ईहां एक खिणि ॥७०॥

तव खुशी भयउ सुरतांण, वेगि फुरमांण चलायउ,
सुणि गोरे वादल्ल, साथि करि पदमणि ल्याउ।
जे तुम्ह कहउ सोई करउं, राउ की वेरी कट्टउं,
वाद गस्त हूं करउं, ईहां रहि नीर न घुट्टउं।
पहिराइ राइ तेजी दिउ, वोल वंध दे पठवउं,
इंम कहइ साह वादल्ल सुणि, तोहि निवाजि दुनिया दिउं ॥७१॥

कीयउ कूड वादल्ल, आय डोले संपत्तउ,
तस मांहि रख्यउ बालः, नाम पदमिणी कहंतउ।
हूउ हरख सुरतांण, जव ही आवत सुणी नारी,
गोरी तव पूछीउ, वोल वोलीयउ विचारी।
अल्लावदीन सुरतांण सुणि, एक वात मेरी सांभलउ,
पदमिणी नारि इंम ऊचरयउ, एक वार राजा मिलउं ॥७२॥

वादल्ल तिहां पठ्यु, राय जिहां वंधन वंधीय,
गहीय राय पय कमल, काज अप्पणउ इंम किधीय।
हूउ कोप राजांन, वइर तइं साध्यउ वयरीय,
रे रे कुवुद्धीय कुड, नारि किम आंणी मोरीय।
वादल्ल तांम इम उच्चरइ, खिमा करउ स्वांमी सही,
मइं वालक रूप पदमिणि करी, राउ नारि निश्चइ नही ॥७३॥

वादल्ल तव लेइ चल्यउ, राउ चकडोल सरसीय,
खगधारी सनमुख, भड्यउ सुरतांण सरसीय।
करी पारसी मुगल्ल, हींदू सव कूड कमाया,
लंकामणि उद्धरयउ, अतुल वल सेन सवाया।

मारि मारि करि ऊठीया, वादल्ल तिहां संमुह सस्चउ,
जब लगइ झूझि दल पति हूउ, तब लग हइंवर पक्खरचउ ॥७४॥
हुई हाक दल मांहि, भई कलकली व्रंबारव,
गय गुडिय हय पखरिय, सुहड सन्नाह करइ तब ।
एको सिर त्रूटंति, एक धड़ धरिणी लुट्टइ,
खग्ग ताल वाजंति, वांण सींगणि गुण छुट्टइ ।
इम भग्गउ सेन असपति सरस, पातिसाह बिलखउ भयउ,
गोरइ गयंद दल कुट्टायो, वादल्ल राउ तब लेई गयउ ॥७५॥
करी पईज वादल्ल, नारि ऊगारी बलहि छल.
मंनि संक्यउ सुरतांण कज्ज करि आयउ भुजा बलि ।
असपति मोडउ माण, सांमि आपणउ उवेल्यउ.
भंजे गय घण थट्ट, मीर मुगलां सत मेल्हउ ।
इंम सुणवि माइ आणंद कीय, पुत्त परदल भंजीयउ,
उवरी वात वादल्ल की, सो पदमणी कंत उवेलीउ ॥७६॥

कुंडलीया

गोरल्ल त्रीया इंम ऊचरइ, सुणि वादल तोहि सत्ति,
मो प्रीउ रिण माहि झूझीयउ, कहि किम वाह्या हत्थ ॥७७॥
कहि किम वाह्या हाथ, वत्थ वइ सुहुड़ पाछाडीय.
भंजी गय घण थट्ट, पाव दे सीस विभाडीय ।
हय गय रथ पायक, मारि घल्लीयउ घोरिल्लं.
वेग माइ सत्ति चडउ, एम रिण पड्यउ गोरिल्लं ॥७८॥
कहि धड़ कहि सिरि कहीं कमंध, कहिक पंजरही पडीउ.
कहीं कर कहीं करमाल कहि कहि मरवि छुडीयउ ।

कहीं एकावली हार, कहिंक धरणी धंधोलिय,
कहीं जम्बुक किहीं अंत मंस गिरधण विछोडीय।
गढ छल त्रीय छल सांमि छल, त्रिहुँ छल भिड्यउ सुकवि कहइ,
गोरल्ल सूर भेटण चली, सु खिण एक रवि रथ खंचे रहइ ॥७६॥
जे सिर पड्यउ धर पिट्ठ, धरा देई इंद्र पठायउ,
इंद्र हथ थल स्यु, सोइ सिरि ग्रिधिण उठायउ।
गिरिधण कर छुटेवि, पड्यउ गंगाजल मज्जं,
गंगाजल उत्तंग, हुओ अंमृत सिरि छज्जं।
इंम अंमीय गाह नयण चंदण चूउ, तव कंदल मंड्यउ वणउ,
गलि रूंडमाल गुंथेवि लीय, तो सर सिद्धि गोरल तणउ ॥८०॥
जे वादल्ल जंपंति, विरद वादल अरि गंजण,
संकडि स्वामि सन्नाह, असुर भारथ अरि गंजण।
कीयउ जुद्ध सुरतांण हण्या हसती मय मत्तह,
आयउ मोरउ कंत, तहिज दिद्धउ अहि वातह।
पदमिणी नारि इंम ऊचरइ, तोहि धन्य धन्य अवतार हूअ,
आरती ऊतारउ हो वर तुरिणि, जे वादल्ल जपंति तूअ ॥८१॥
अचल कीर्ति श्री रांम, अचल हनुमन्त पवन सुअ,
अचल कीर्ति हरिचंद, अचल वेली पुहवी हुअ।
अचल कीर्ति पांडवां, जेण कइरव दल खंडीय,
अचल कीर्ति अहिवन्न, जेणि चक्रावहु मंडीय।
विक्रम कीर्ति जिम अचल हूअ, भोज अचल जुग जांणीइ,
तिम अचल कीर्ति गोरल तूय, वादल कीर्ति वखांणीयइ ॥८२॥

॥ इति श्री गोरा वादल कवित्त सम्पूर्ण ॥

रत्नसेन-पद्मिनी गोरा बादल संबन्ध
खुमाणो रासो

षष्ठ खण्ड

॥ श्री माऊ अंबाय नमः ॥

गाहा

ओंकार मंत्र अंबा, जगज्जननी जगदंबा ।
लच्छ समप्पो लंबा, दलपति तुह चरण अवलंबा ॥२५॥

दूहा

कमला मात करो मया, मुझ उर वसिइं वास ।
आपो दोलत ईश्वरी, वांणी वयण विलास ॥२६॥

कवित्त रांणां री वंशावलिका

रांण प्रथम (ह) राहप, पाट नर सुर नरपत्ति ।
दिनकर हर सुरदेव, रतन जसवंत नृपत्ति ॥
अनतो अभयो रांण, प्रवल पथवीमल पूरण ।
नाग प्रांणग जेंसिघ, जेंत जगतेश उधारण ॥
जयदेव रांण जो नंगसी, भारथ पारथ भीमसी ।
गढ़पति मुगट गढ गंजगो, गाहड़मल गढ़ लखमसी ॥२७॥

जग असपति जसकरण, नवल विजपाल नरेसुर ।
नागपाल नरसीह, रांण गिरधर राजेसुर ॥
पीथड पुंनोपाल, मल्ल मोहण मय मत्तह ।
सीहडमल भीमक्क, रांण भाखर रण रत्तह ॥
लुंणग्ग करण लाखां दलां, मोड मंडल श्री लखमसी ।
अरसी हमीर खेतल खगां, अवनी सहु लीधी इसी ॥२८॥

चौपाई

रांणो रतनसेन गहिलोत, देसपती मोटो देशोत ।
राज करें नृप गढ़ चीतोड, राजकुली सेवें कर जोड़ ॥२६॥
एक दिन नृप वैठो वेसणें, पटरांणी सुं पेमें घणें ।
भोजन मांहें स्वाद न कोय, चतुराई तुम माहें न कोय ॥३०॥
रांध न जांणां भोजन भणी, परणो थे सींघल पदमणी ।
अंजस करे रांणो नीसर्‍यो, गढ़ चीतोड़ थकी ऊतर्‍यो ॥३१॥
अश्वें चढ़ीयो रांण उलास, साथें लीधो खांन खवास ।
रांणा ने सेवक पूछियो, आंपें केथ पयांणो कियो ॥३२॥
आपां जास्यां सींघल देश, तिहां जाए पदमण परणेस ।
अगुवो लीधो साथें भाट, ते सींघल री जांणे वाट ॥३३॥
रांणो दरियारें तट गयो, जालिम सिद्ध जोगी दरसियो ।
जोगी जंपें रतन नरेश, थे किम आया कवण विसेस ॥३४॥
आयस सूँ अधिपति वीनवें, पदमणी वरण जाऊँ हिवें ।
पार उतारो मुझ गुरदेव, सींघल ले जावो सुज हेव ॥३५॥

कर ऊपर दोई असवार, नृप सींघल मुंक्यो तिणवार।
आयस कीधो ए उपगार, परणण रो मुशकल व्यवहार ॥३६॥
बहिन अछें सींघलपति तणी, परतिख आप अछें पदमणी।
अभिग्रह लीधो एहवो नार, जीपें मुझ थी पासा सार ॥३७॥
अधिपति खाधी हार अनेक, जीपें तस परणुं सुविवेक।
रमवा बेठो रतन नरेश, हारवी पदमणि नें लघुवेश ॥३८॥
सींघल नृप व्याही पदमणी, दीधी परिघल पहिरावणी।
रह्यो केताइक दिन सासरें, चालणरी सीझाई करें ॥३९॥
सीख माँग चाल्या घर भणी, साथें लीधी नृप पदमणी।
घणे भाव बहु प्रीतें घणी, पहुंचाया सींघल रे धणी ॥४०॥
अनुक्रमें आया गढ चीतौड, रतनसेन मन अधिकें कोड।
राणी सुं जंपें राजांन, म्हें परण्या पदमणि करि मांन ॥४१॥
थे मोसो मांनुं वाहियो, बोल कह्यो सो निरवाहि [इ] यो।
अहनिस गेंर महिल आवास, पदमण सुं सेझें करें रजास ॥४२॥
एक दिन आयो राघव व्यास, पदमणि नृप बेठा सुविलास।
रांणो रतनसेन कोपिओ, पदमणि रूप ब्रांमण पेखियो ॥४३॥
आँख कढ़ावूं राघव तणी, इण दीठी निजरें पदमणी।
जीव लेइ नें भागो नींठ, अधिपति कोप्यो आकारीठ ॥४४॥
मांणस लेइ गढ़ थी उतर्यो, दिल्ली नगर राघव संचर्यो।
वांचे राघव शास्त्र अनेक, वात बखांण करें सुविवेक ॥४५॥
जस विसतरियो दि [ल्] ली मांह, तेडाव्यो पंडित पतिसाह।
आलम ने दीधी आसीस, द [ल्] लीपत कीनी बगसीस ॥४६।

राघव आलम पासें रहें, असपतिरी बगसीसां लहें ।
राघव कुवधि कियो मंत्रणो, काढु वैर हवें चोगणो ॥४७॥
रतनसेन ऊपर रिस राह, ले जाऊँ चित्रगढ़ पतिसाह ।
कोइक करस्यु हुँ कलि चाल, रतनसेन भांजु भूपाल ॥४८॥
भाट एक सु भाईपणो, तिण सु कहीयो ए मंत्रणो ।
अंब खास बेंठो असप [त्] त, हंस पाँख ग्रही सुविग[त्]त ॥४६॥
यारो इस सु भी मकशूल, प्रथवी माँहें कांइ अमूल ।
हजरत इस सु मेहरी खूब, महिला पदमणी हें महवूब ॥५०॥

गाहा

मांन सरोवर मज्झे, निवसे कलहंस पंखिया वहवे ।
ताणंतो सुकमाला, इसा पंखी मम हत्थे ॥५१॥

चौपाई

पूछें आलम पदमणि जेह, सोही वतावो हम कुं तेह ।
अंदर हुरम परिक्खा करो, पदमणि हो सो आगें धरो ॥५२॥
हजरत दीधा खोजा साथ, देख्यो हुरम तणो सहु साथ ।
हस्तणी चित्रणी ते संखणी, इसमें कोई नही पदमणी ॥ ५३॥
किस थांनिक हें कहो हम भणी, सींघलद्वीप अछें पदमणी ।
जास्यु सींघल लेस्यु हेर, जिहां हुवें जिहां ल्याउं घेर ॥५४॥
सींघल ऊपर थया तियार, आलिमसाह हुआ असवार ।
ल्हसकर लाख सताविस लार, उदधि पास आव्या तिणवार ॥५५॥
दीठो आगें उदधि अथाग, मांनव कोइ न लाभें थाग ।
उदधि ऊपर ह [ल्]लां करें, आलिम को कारिज नवि सरें ॥५६॥

जिहां जे वेसाड्या जूझार, वूडा उदधी में तिण वार।
जंपें आलम राघव व्यास, कीधो कटक तणो सहु नाश ॥५७॥
ओर वताओ कोई ठोड, कहें राघव पदमण चितोड़।
लेत्तां ते मुसकल अतिघणी, सेसतणी दुरलभ जिम मणी ॥५८॥
रतनसेन वांको रजपूत, महा सुभट माझी मजवूत।
आलिम कहें हिन्दू का क्याह, गढ़ चीत्तोड चढ़ुं उच्छाह ॥५९॥
पदमणि गहि बांधुं हिंदवांण, तोहुँ तखत वडो सुलतांण।

दूहा

सुण राघव आलिम कहें, कह पदमणि सहिनांण।
करुं ह(ट्) ठ तस ऊपरें, गढ़ घेरुं घमसांण ॥६१॥
सुण हजरत राघव कहें, नवरस महि सिणगार।
नांम च्यार हें नायका, वरणव कहुं विचार ॥६२॥

कवित्त

सुन हो साह कहें व्यास, धरहुं रस पेम उकत्तह।
वाखानहुँ सींगार, सुन हो चित होय सुरत्तह ॥
किती भांत नायका, कोन गुनरूप विलासह।
भाँत भाँत कहि भेद, करिहु निज वुध प्रकासह ॥
आलिम साह सुनीइं अरज, च्यार जात त्रिय के कहें।
नायका तीन सवके घरे, वखत वार पदमणि लहें ६३॥
कहें साह सुनि व्यास, करहो सवके वाखांणह।
रूप लच्छन गुन भेद, तुम हो सव वात सयांणह ॥

तनवि चित्रणी विचित्र, हस्तनी मस्त हसती ।
संखनि कुचित सरीर, नार पदमणी छत्रपती ॥
संखनी पांच हस्तनी दसह, पनरह रूप सु चित्रणी ।
कहें राघव सुलतांन सुंन, वीस विशवा पदमणी ॥६४॥

दूहा

सुनि सब त्रिय के रूप गुण, इम जंपहि सुलतान ।
अब चित पाई पद्मनी, करहुं विशेष वखांण ॥६५॥
पदमनि निरमल अंग सब, विकसत पदमणि [सुं] हेज ।
प्रेम मगन ऐसी खुलें, ज्युं पंकज रवि तेज ॥६६॥

छप्पय

चित चंचल वय स्याम नैन मृग भ्रोइ अलिंगन ।
तिल प्रसून तस समन सिहासन मुख अधर विद्रुमन ॥
अति कोमल सब अंग वयण सीतल अति हंस गति ।
तन सूछिम कटि छीन प्रगटी दामनि देह द्युति ॥
आनंद चंद पूरण वदन, मन पवित्र सब दिन रहें ।
आहार निमख इच्छित अमल, विमल ठोर पदमनि लहें ॥६७॥

दूहा

पदमणि चंपक वरण तन, अति कोमल सब अंग ।
चिहुं ओर गुंजित भमर, निमखन छारत संग ॥६८॥

सवैया

बालस वेस रहैं सबही दिन, मान करैं न कछू दिन लाजैं।
सेत सरोज सुं हेत धरे, अति ऊजल चीर सरीरहि छाजैं।
वारिज कोस बन्यो मदन ग्रह वीरज नीरज वास विराजैं।
देह लही मनमत्त निरंतर रंभा के रूप पदमणी छाजैं ॥६६॥

कवित्त

रूपवंत रतिरंभ, कमल जिम काय सकोमल।
परिमल पुहप सुगंध, भमर बहु भमैं विलावत।
चंप कली जिम चंग, रंग गति गयंद समांणी।
ससि वदनी सुकमाल, मधुर मुख जंपें वाणी॥
चंचल चपल चकोर जिम, नयण कंत सोहैं घणी।
कहें राघव सुलतांन सुण, पुहवी इसी हैं पदमणी ॥७०॥
कुच युग कठिण सरूप, रूप अति रूडी रांमा।
हसत वदन हित हेज, सेझ नित रमें सुकांमा॥
रूसें त्रूसें रंग, संग सुख अधिक उपावें।
राग रंग छत्तीस, गीत गुण ग्यांन सुणावें॥
सनांन मंजन तंबोल सुं, रहे असोनिस रागणी।
कहें राघव सुलतांन सुण पुहवी इसी ह पदमणी ॥७१॥
बीज जेम झलकंत, कांति कुंदण जिम सोहैं।
सुरनर गुण गंधर्व, रूप तृभुवन मन मोहैं॥
त्रिवली, मयतन लंक, वंक नहु वयण पयंपें।
पति सुं प्रेम अपार, अवर सुं जीह न जंपें॥

सांम धरम ससनेहणी, अति सुकमाल सोहांमणी ।
कहें राघव सुलतान सुण, पुहवी इसी हें पदमणी ॥७२॥
धवल कुसुम सिणगार, धवल वहु वस्त्र सुहावें ।
मुत्ताहल मणि रयण, हार हिदयेस्थल भावें ॥
अलप भूख त्रिस अलप, नयण वहु नींद न आवें ।
आसण रंग सुरंग, जुगति सुं काम जगावें ।
भगति हेत भरतार सुं, रहें अहोनिस रागणी ।
कहें राघव सुलतांन सुण, पुहवी इसी हें पदमणी ॥७३॥

चौपाई

पदमणि रा गुण सुणिया एह, जंपें असपति सुंण अवेह ।
करुं चढ़ाई गढ चीतोड, अव हींदू कुं नाखुं तोड ॥७४॥
पोरस आण लेऊं पदमणी, रतनसेन पकडुं गढ धंणी ।
दोडाया कासीद सताव, तेड़्या मुगल पठाण नवाव ॥७५॥
निरमल जोधा जें सभ किया, आधी राति दमांमा दिया ।
सवल सेन सुं आलिम चढ्यो, धर धूजी वासिग धड़हड्यो ॥७६॥

कवित्त

हसि वोल्यो सुलतांन, मौंण कर मुंछ मरोड़ी
रतनसेन कुं पकड़, चित्रगढ़ नांखुं तोड़ी ।
हय कंपें चक च्यार, थरकि जलनिधी अकुलांणों ।
सरग इंद खलभल्यो, पड़्यो दस दिसींह भगांणों ॥
फरवांण देस दिसहिं फटें, सव दुनियांण असी सुणी ।
मारिहें रतन हिंदुआंणपति, साह पकड़िहें पदमणी ॥७७॥

चौपाई

गढ चीतोड तणी तलहठी, इण पर आयो आलिम हठी।
लाख सताविस लसकर लार, डेरा दीधा अति विसतार ॥७८॥

धूंस नगारें धूजें धरा, गाजें गयण अनें गिरवरा।
हठियो आलम साह अलाव, गढ़ भंजण चित मन में दाव।
रतनसेन पण रोसें चढ्यो, पींधो आलम आवी पड़्यो।
सुभट सेन तेड़ाया सहू, वह से बलवंत आया वहू ॥७९॥

रतन सझ्यो गढ़ अवली वांण, छोडें नाल गोला नें बांण।
रतनसेन बोले गजखंभ, हींदू धरम तणो उत्तंभ ॥
पतिसाही रणवट पांहुणो, भोजन जीमाडां खगतणो ॥८०॥

आ [व] ध नाना विध पकवांन, आतस गोला खाग विधांन।
खाठी भगत जिमाडो इसी, खग व्रत मद धारा [नां]
मोजसी ॥८१॥

इसो चखावो अजरोरु [कू] क, फिरें न लागें रणवट भु[कू] ख।
आपें पाखें अवर कुंण इस्यो, झेलें पांहुण आलिम जिस्यो ॥८२॥

उत अलाव इत रयण नरेश, हींदूपति ने पति असुरेस।
मांहो मांहे करें संग्राम, मुगल पठांण वहु आव्याकांम ॥८३॥

असपति कोइ न चालें जोर, रतनसेन रांणो सिर जोर।
घे ऊपर थी भिड मारिका, असपत्ति सहिवें फाटा धका ॥८४॥

कोइक तोत तणा करि मता, रतनसेन पकडां जीवता।
वचन तणा दीजें वेंसास, विण फंदे पाडीजें पास ॥८५॥

मूंकीजें पक्का परधांन, एम कहावें द्यो हम मान।
तेडी मांह खवावो खांण, निजर देखावो आहीठांण ॥८६॥
पदमणि हाथें जीमण तणी, खाँत अछें म्हांनु अति घणी।
कांई न मांगें आलमसाह, छडा साथ सु आवें मांह ॥ ८७ ॥

कवित्त

हमहि पठाए साह, कहण कु कथ अवल्ली।
जो तुम मानों वाच, साह फिर जावें द [ल] ली।
दिखलावो पदमनी, और सव गढ़ दिखलावो।
विग्रह को नवि करही, बाँह दें प्रीत वधावो।
गढ़ देख मिलहि सिरपांव दें, बहुत मया आलिम कर (ही)।
रतनसेन सुण (हो) वीनती, सुहर मांह दुतर तरही ॥ ८६ ॥

चौपाई

बोल बंध द्यो साचा सही, वाच हमारी विचलें नही।
नाक नमण करि कोट दिखाय, पदमणी हाथें मुझ जीमांय ॥९०॥
मांहों मांह करे संतोप, हिव मेटो अति वधतो रोष।
वलता कहें रतन राजांन, मा [ह] रां कथन सुणो परधान ॥९१॥

कवित्त

सुणि वजीर कहें राव, राम सिर पर राखीजें।
वांको गढ़ चीतोड़, सगत सुलतांन हलीजें।
म करहो हठ गुमांन, तुमहुं साहिव तुरकाणे।
रजधारी रजपूत, हमही साहिव हिंदवांणे।

क्युं कहें बहुत श्री मुख वयण, हम रखही घर अप्पणो।
किरतार कियो न मिटें किण ही, त्याग खाग हिंदू तणो ॥ ९२ ॥
कहें वजीर सुनिराव, तुमही क्या ओपम दीजें।
तुम सूरज हिंदवांण साह कही एती कीजें।
दंड द्रव्य नहिं पेस देस तेरा नहिं चाहुं।
नहिं हम गढ री प्यास, राजकुमरी नहिं व्याहुं।
करिहो न तुझ करहि फरक्क, राज महल नहिं आहडुं।
करि नाक नमण करीइं रयण, देख कोट फिर धावडुं ॥ ९३ ॥
सुण हो बहुरि राजांन, इह हरजत फरमाया।
पूछें ग्यान कुरांन, तिहां एता दिखलाया।
रतनसेन अ [ल] लाव, पुव्व जन्मंतर भाई।
म्हे तप किया असोच, तिण पतिसाही पाई।
तें किया पवित्र दिल पाक तप, हीं दूपत पायो जनम।
हम तुम तेरो समा कुल ही, करत प्रीत रहीइं धरम ॥ ९४ ॥

चौपाई

खेमकरण वेधक परधान, इम कही सघलि मेंलीधांन।
हिंदू सदा निरमल दिल हुवें, धोलो सहु दूध ज लेखवें ॥ ९५ ॥
तेडी रांण तणा परधान, पुहतो जई पासें सुलतांन।
दीधा बोल बांह सुलतांन, हम तुम बिचें ए छें रहमान ॥ ९६ ॥

श्लोक

मुख पय दला कारं, वाचा चंदन शीतलं।
हृदय कर्तरी तुल्यं, त्रिविधं धूर्त लक्षणम् ॥ ९७ ॥

चौपाई

राघव व्यास कियो मंत्रणो, रतनसेन ने झालण तणो ।
नृप मन कोय नहीं छल भेद, खुरसांणी मन अधिको खेद ॥६८॥

घरभेदू विण घर नवि जाय, घरभेदू थी घर ठहराय ।
घर भेदें लंकागढ़ गयो, राघव घरभेदूं हम कियो ॥६६॥

साह माहें पधारो राज, रतनसेन तेड़ें महाराज ।
आलिम साथ कियां असवार, सलह संपूरित तीस हजार २५००

कवित्त

चढ़यो गढ सुलतांन, खांन निबाब लीया संग ।
तीस सहस असवार, सिलह नख चख ढ़कें अंग ।
पडें धुंस नीसांण, गिरंद चीतोड गडक्कें ।
सहिर लोक खलभलें, धीर छूटे चित्त धड़क्कें ।
विहुरें रयण मेल्यो कटक, ठोड ठोड सांमंत कसें ।
मनुख देख गयंद मेंमत घटा, मयंद कपोरिस उलसें ॥२५०१॥

चौपाई

आवि मांहें हुआ एकठा, तव सगलें दीठा सामठा ।
रतनसेन मन खुणस्यो सही, आयो आंगण आलिम चही २५०२
नृप पण सेना सगली सार, असवारे मिलिया असवार ।
तुंगे तुंग हूआ एकठा, जांणक बादल उत्तर घटा ॥ २५०३ ॥
............आलिम पिण न सकें आंगमी ।
आलिम तांम कहें सुण भूप, क्यु मेलत हो कटक सरूप ॥ ४ ॥

में लडणे कुं आया नहीं, गढ़ देखण की हैं दल सही।
न धरो मन में खोटा खेद, मेरे मन नांही छल भेद ॥ ५ ॥

कवित्त

कहैं रतन सुण साह, चूक करि लाह न खटी हुं।
रूक वाव वज्जंही, वादल जिम तुम फट्टिहुं।
तन गुमांन मग धरहुं ,करहुं जिण कोइ कपट्टह।
आए चली आंगणें, तास हम लाज निपट्टह।
गज गाह वांध ऊभें सुहड, मूंछ मरोडी मगज भरि।
हम हुकम होत सम फोज सिर, पड़िही कंस सिर वीजड़ि ॥ ६॥

चौपाई

आलम जंपें सुण राजांन, घर आयां वहु दीजें मांन।
थोड़ा होवें होवें घणा, झेली लीजें निज पांहुणा ॥ ७ ॥
धान तणो छें आज सुकाल, वणां घणां कांइ करें भूपाल।
हम मिलवा आवें ऊमही, लड़वा कुं हम आवें नही ॥ ८ ॥
राय कहें सांभल पतिसाह, भलें पधारो आलिम साह।
वलि तेडावो जांणो जिके, पिण लघु वोल म वोली वके ॥ ९ ॥
वोलें वोल विहुं हुआ खुसी, हाथें ताली दीधी हसी।
मांहो मांह हुओ संतोष, राय तणें मन मिटियो रोप ॥१०॥
करि दरगह वेंठो सुलतांन, आगें ऊभा सवे राजांन।
फेरवीजें घोडा गजराज, रुपक भेंट करें कविराज ॥११॥
रतन गया तव महिलां भणी, भगत करावण भोजन तणी।
पदमणि प्रति राजा इम कह्यो, आलम सुं जिम तिम रस रह्यो ।१२।

भोजन भगत करो हिव इसी, जिम दल्लीपति होवें खुसी।
पदमणि नार कहें पिय सुणो, हुं हाथें न करूं प्रीसणो ॥१३॥

खट रस सरस करें रसवती, प्रीसेसी दासी गुणवती।
सणगारो सघली छोकरी, खांत अछें जो तुम मन खरी ॥१४॥

पदमणी पास रहें सावधान, वीस सहस दासी रूप निधांन।
रूप अनोपम रंभातिसी, कांम नि सेना होवें जिसी ॥१५॥

आसण वेंसण नें विध किया, ऊपर छाया डेरा दिया।
गादी मुंडा मांहें अनूप, जरी दुलिचा अति हें सरूप ॥१६॥

ठोड ठोड ऊभा हुसियार, छडीदार प्यादा पडिहार।
सवे महिल सिणगारी करी, चिग पडदा नांखी झालरी ॥१७॥

त्यारी हुई रसोडा तणी, मांहे तेड़्या दल्ली धणी।
देखी साह महिल सत खणा, जांण विमान अछें सुर तणा ॥१८॥

खुस खांणें बेंठो पतिसाह, वेठें खांन निवाब दुव्वाह।
पदमणि मांहें अधिक पंडूर, दासी आय देखावे नूर ॥१९॥

इम मंडे पत्रावलि वाल, मांडें एक कचोली थाल।
इक झारी भरि हाथ धोवाव, ढोलें चंमर वीजें वाच ॥२०॥

इक मेवा प्रीसें पकवान, साल दाल सुरहा घृत धांन।
विंजन विध विध प्रेम सुवास,
सुर पिण मोती [दा] ण कविलास ॥२१॥

भूलो साही कहें अल्लाह, यह हींदूवांण के पतिसाह।
देखी दासी रूप विलास, आलिम चित में हुओ उदास ॥२२॥

देख देख सूरत सब तणी, कहें साह यह सब पदमणी।
ऐसी महिरी एक अलाह, हमकुं एक न दीधी नाह ॥२३॥

कवित्त

कहे व्यास सुण साह, हें तारीफ पदमनी।
आफताब महिताब, जिसी बद [ल्] ल दांमनी॥
सोवन वेल समांन, मांनसर जेही हंसनी।
जिन (ज) तन कमल सुवास, तास गुन सेवही
सुरधेन कलपवृछ जेहवी, मोहनवेल चितामनी।
कवि लघु अक लिइक हें रसन, क्युं ब्रनही सोभा घणी ॥२४॥
लख दस लहें पलंग, सोड सत लख सुणीजें।
गालमसूरया सहस, सहस गीदूआ भणीजें।
तस ऊपर दुपट्टी, मोल दह लक्ख लद्धी।
अगर चंदण पटकूल, सेभ कुंकम पुट दीधी।
अलावदीन सुलतांन सुण, विरह विथा खिण नवी खमें।
पदमणी नार सिणगार सभ, रतनसेन सेर्फे रमें ॥२५॥

चौपाई

अवर न देखें पदमनि कोय, जे देखें तो गहिलो होय।
पदमनि पुन्य परखें किम मिलें, जिण दीठे अपछर ग्रव गले ॥२६॥
इम ते व्यास अनें सुलतांन, वात करें छें चतुर सुजांन।
तिण अवसर पदमणी चितवें, आलिम केहवो जो इम चवे ॥२७॥
तितरें दासी जंपें एक, गोख हेठ बेंठो सुविवेक।
तसुमुख देखण तव गजगती, आवी गोखें पदमावती ॥२८॥

जाली मांहें जोवें जिसें, व्यासें पदमणि दीठी तिसें।
ततखिण व्यास इसुं वीनवें, स्वांमी पदमिण देखो हिवें ॥२९॥
रतन जडित जे छें जालिका, ते मांहें बेंठी बालिका।
आलिम उंचो जोवें जिसें, पदमणि परतिख दीठी तिसें ॥३०॥
वाह् वाह् यारो पदमनी, रंभ कि ना ए छें रुकमणी।
नाग कुमा [रि] र किना किन्नरी, इन्द्राणी आंणी अपछरी ॥३१॥

कवित्त

कहें साह सुनि व्यास कहां मेरी ठकुराई।
में मदहीन गयंद में बलहीन मृगपति।
में वद्दल जलहीन, (में हूँ) विंजन विन लुहन।
में हीरा विन तेज, में हुं योगी विन मोहन।
विन तेज दीपक विण सूर दिन, कहा वहुत फिर फिर कहुं।
नही जाऊं दल्ली विन पदमनी, फकीर होय वन में रहुं ॥३२॥

चौपाई

व्यास कहें सांभल सुलतांन, फोगट काय गमावो मांण।
धीरज धरि साहस आदरो, अवर उपाय वली को करो ॥३३॥
रतनसेन जो पानें पडें, तो ए पदमणि हाथें चडें।
इम आलोची मेली घात, धीरपणा विण न मिलें घात ॥३४॥
इम करतां जीम्यो सहु साथ, भगत घणी कीधी नरनाथ।
श्रीफल देइ धात तंबोल, मांहो मांह किया रंग रोल ॥३५॥
हिवें इम जंपें आलिम साह, मांहो मांह झाली बांह।
परिघल दीधी पहिरावणी, जरकस नें पाटंबर तणी ॥३६॥

हाथी घोड़ा दीधा घणा, संतोष्या सगला पांहुणा।
तुम महिमानी कीधी घणी, कोट देखावो तुम हम भणी ॥३७॥
रतनसेन नृप साथें थया, आलिम गढ़ दिखलावण गया।
विषम विषम हुंती जे ठोड़, फरि देखाड्यो गढ़ चीतोड़ ॥३८॥
विखम घाट अति वांको कोट, मांहें न[ही] देखें कांई खोट।
गोला नाल वहें ढीकली, कदही कोइ न सकें नीकली ॥३९॥
गढ़ देख्यां गढ़पति ग्रव गलें, एहवो कोट कही नवि भलें।
इम जंपें ही आलमसाह, तुम हो रतन हमारी बांह ॥४०॥
काम काज केजो हम भणी, तुम महिमांनी कीधी घणी।
आलिम रीझ दीई गहगही, सीख दीए वलि ऊभा रही ॥४१॥
अधिपति कहें अघेरा चलो, में दरबार देखां रावलो।
एम कही आवो संचर्यो, रांणो गढ़ बाहिर नीसर्यो ॥४२॥
नृप मन में नहि को(इ) छल भेद, खुरमांणी मन अधिको खेद।
व्यास कहें ए अवसर अछें, इम मत कहियो न कहियो पछे ॥४३॥

यतः

खड सूका गोड मूआ, वाला गया विदेश।
अवसर चूका मेहडा, तू ठा कहा करेश ॥४४॥

चौपाई

असपति हलकार्या असवार, मांहो माहें मिल्या जूझार।
रांणो रतन झाल्यो ततकाल, विचली वात हुई असराल ॥४५॥

दूहा सोरठा

असपति अंब सरीख, रुंखां पुरखां राजवी ।
मुह मीठा उर वीख, कहो दई केम पतीजिइं ॥४६॥
नरपति अरि नाहर तणा, को विसवास करेह ।
जे नर क [च्] चा जाणीइं, आलम एम कहेह ॥४७॥
वेंरी विसहर वाघ नृप, प्रासी गढ़पति आप ।
छलबल ग्रहीइं दाव सही, कोइ न लागें पाप ॥४८॥
तुम हम महिमांनी करी, अब तुम हम महिमांन ।
द्यो पद्मणि छोडुं परा, रतनसेन राजांन ॥४९॥

चौपाई

सुहड़ हुंता जे साथ सवेह, तियां चढ़ाई रजवट रेह ।
आंण्यो पकड़े लसकर मांह, रवि नें ग्रहियो जाणें राह ॥५०॥
वेड़ि घालि वेसाड्यां रांण, जुलम अन्याय कियो सुलतांण ।
रांणो रतन हुंतो बलवंत, पकड्यां निबल हुओ ए तंत ॥५१॥

यतः

अंगा गमु गते शत्रु, किं करोति परि [च्] छद[ः] ।
राहुणा ग्रहते चंद्रे, किं किं भवति तारके ॥५२॥

चौपाई

सुणी सहू गढ़ मांहें वकी, वात तणी विनडी वांनकी ।
हलबल हुई सेंहर बाजार, पकड़ांणो रांणो सिरदार ॥५३॥
तेड्या सुहड दशो दिश वली, सेन्या सघली गढ़ में मिली ।
कटक सझ्या घण हील किलोल, सबलज ढाई गढरी पोल ॥५४॥

कुमती रतन कहीए रांण, तेड्यो गढ़ मांहें सुलतांण।
गढ़ उतरे पहुँचावण गयो, करे तोत रतन पकडीयो ॥५५॥

राजा तो पड़िया तिण पास, असुर तणो केहो विसवास।
पकड़्यो नृप पदमणि पिण ग्रहें, गढ़ चीतोड हिवें नहीं रहें ॥५६॥

जसवंत बेंठां जुड़ि दरबार, जालिम तेड़्या सह जुम्फार।
मांहो मांहें करें आलोच, गढ़ में हुओ सबलो सोच ॥५७॥

एक कहें लडां झूफांगढ़ माह, एक कहे घो राती बाह।
एक कहें अधिपति सांकड़े, लडता जेहनें भारी पड़ें ॥५८॥

एक कहें नायक नहि मांह, विण नायक छतसेन कहाय।
एहवो कोइ करो मंत्रणो मांन रहें हींदु धम तणो ॥५९॥

इम आलेचे सांमंत सहू, चित उपजी चित में वहू।
तितरें आवो इक परधान, हुकम करें छें इम सुरतांन ॥६०॥

तेड्यो मांहें नीसरणी ठवी, मंत्री मांहि बुध जाणंग कवी।
इम जंपें छें आलम साह, तुमे कहो तेहनें यूं वांह ॥६१॥

हमकुं नारि दीयो पदमणी, जिम म्हें छोडुं गढ़ का धणी।
एम कहेनें गयो प्रधान, सवि आलोच पड्या असमांन ॥६२॥

कहो हिवें पर कीजें किसी, विसमी वात हुई या जिसी।
जो आंपां देस्यां पदमणी, तो रिणवट न रहें आपणी ॥६३॥

विण दीधां सवि विगसें वात, पदमनि विन न मिलें कोइ पात।
ऐतो जोरें लेसी सही, जे आया छें इण गढ़ वही ॥६४॥

कवित्त

कहैं कुअर जसवंत, सुनहो उमराव प्रधानह ।
रख्खहुं गढ की सोभ, धरा रख्खहुं हिंदवांणह ॥
हूं राजा परवसें, नहें चल देखें भली ।
देहुँ नार पदमनी, साह फिर जावें दिल्ली ॥
गढ आय रांण बैठही तखत, चमर ढलाव हीतूक धर ॥
सिल हेठ हाथ आयो सु तो, छल हिक्मत काढही सीपर ॥६५॥

चोपाई

सुभटे सघले थापी वात, हिवें पदमणि देस्यां परभात ।
इम आलोची ऊठ्या जिसें, पदमणि सवि सांभलिया तिसें ।६६।

कवित्त

कहें पदमनि सुनि सखी, वात यह कुमर विचारें ।
हम देई पतिसाह, धरा गढ़ रांण उगारें ।
में सींघल उपन्नी, राजपुत्री कहेंवांनी ।
गढ़पति रतन नरेश, भई ताकी पटरांनी ।
अब बहुरि नामह किण विध करहुं, म्हे कुळवंती कांमनी ।
हिंदवांण वंश लंछन लगें, थू थू थूक कहीइं दुनी ॥६७॥
गढ़पति पकड्यो साह, राह जिम चंद गरासें ।
विनु दीधे उगहेन, सुभट कहा आंर विमासें [ह]
भवसि जोग कछु सु वो मिटे नही अधीतह
आप मुआं जुग वुडिहें, दुनीयां नह उकत्तह ।

मेर मरंत सबही रहीइं धरम, धर रक्खहि रक्खहिं धनी।
छूटहें हठ सुलतांन चित, जब मृत्यु सुनिहें पद्मनी ॥६८॥
कहें पदमनि सुन स्यांम, राम रघु सीता वल्लभ।
दशरथ सुन हो तु[ज्]म्फ,, तुमहि ल[ज्]ज्जा कें ओठंभ।
औरन कोई इलाज, आज संकट दिन आयो।
धरही चितन में दया, करहुं संतन को भायो।
असुरांण रांण पकड्यो रयण, चाहें मुझ मन में चहू।
अनाथ नाथ असरण सर[ण्]ण, राख राख ए ी कहुँ ॥६६॥

सवैया

कैंसें तुम मृगणी के गन निगणें भरथ,
कैंसें तुम भीलणी कें झूठें फल खाये थे॥
कैंसें तुम द्रोपदी की टेर सुनि द्वारिका में,
कैंसें गजराज काज नाग पर धाए थे॥
कैंसें तुम भीखम को पण राख्यो भारथ में ?
कैंसें राजा उग्रसेन बंध थें छोराए थे॥
मेरी बेर कांन तुम कान बंद बैठ रहें,
दीनबंधू दीनानाथ काहि कु कहाए थे ॥७०॥

दूहा

पंखी इकलो वन्न में, सो पारधी पचास।
अबके जलहो उगरें, अ[ल्] ला तेरी आस ॥७१॥
सुभट भए सतहीन सब, आलिम पकड्यो राज।
सांई तेरे हाथ हें, म्हो अबले की लाज ॥७२॥

चौपाई

अवसर इण हुओ छें जेह, थिर मन करिनें सुणज्यो तेह ।
तिण गढ़ गोरो रावत रहें, खित्रवट तणी विरुद भुज वहें ॥७३॥
तास भतीजो वादलराव, सर तानें भरिया दरियाव ।
ते वेवे छल वल रा जांण, वेवे रावत वे कुल भान ॥७४॥
पिण तेहनें नहि सुनिजर स्वांम, रोकड़ ग्रास नही को गांम ।
घरे रहें न करें चाकरी, रतनसेन मुंक्या परहरी ॥७५॥
रावत वे जाता था जिसें, गढ रांहो मंडांणो तिसें ।
रुंधेगढ़ नवी जाइंतेह, जातां खत्रवट लागें खेह ॥७६॥
तिण [रे] कारण ग्रहिरहिया टेक, हिवें जास्यां कांइ हुआं एक ।
अंग तणो न तजें अभिमांन, सूर महावल जोध जुवांन ॥७७॥
खत्री सोहि खत्रवट चलें, मरण हीए पिण नवि नीकलें ।
भुंडां भलां पटांतर जांम, खायां जेम हुवें खगजांम ॥७८॥
पिण तेहनें नवि पूछें कोय, जो पूछें तो इम कांइ होय ।
जांणहार हुवें धरती जांम, सभ जोचंतां राखे जांण ॥७९॥
चिंते चितमांहें पदमणी, गोरो वादल सुणीजें गुणी ।
त्यांसुं जाय करुं वीनती, वीजां मांहि न दीसें रती ॥८०॥
इम आलोची पदमणि नार, सुखपालें वेंठी तिणवार ।
आवी गोरल रें दरवार, साथें सयल सखी परवार ॥८१॥
गोरो सांमो धायो धसी, विनय करी नें आयो हसी ।
मात मया वहु कीधी आज, भले पधार्या दाखो काज ॥८२॥

सुभटें सगलें दीधी सीख, दया धरम री नहिं आरीख।
सीख दियो हिवें तुमें पिण सही, जिम असुरां घर जाऊं वही ८३
सुभट सवें हूआ सतहीन, प्रथवी खत्रीवट हुँई खीण।
सुभटे सगलें दाख्यो दाव, पदमनी दे नें लेस्यां राव ॥८४॥
हिवें तुमें सीख दिइयो छो किसी, कहोवात अधिकाई किसी।
गोरो जंपें सुण मुझ मात, होसी सघली रुडी वात ॥८५॥
जो तुम आया मुझ घर वही, तो असुरां घर जास्यो नही।
रजवट तणो नहीं संकेत, नारी देई कीजें जैत ॥८६॥
वलि मरवो रजपूतां भलो, आमों सांमो करवो कलो।
स्त्री देइ नें लीजें राव, सकज न थाइ एह कुदाव ॥८७॥

कवित्त

तुं रजधर गोर [ल्] ल, तु ही सांमंत सक [ज्] जह।
तु ही पुरस हिंदवांण, रांण घर सहु तुज भु [ज्] जह ॥
वीरधीर वडवीर, तुँ ही दल वीडो झेलें।
तुं मुझ दें अहेंवात, नारि पदमणि इम वोलें।
सुहडा अवर सतहीण सवे, यह जस तो भुजे हेंकिलो।
अलावदीन सु'खगांवलीं, हींदूपति छोडाविलो ॥८८॥

चौपाई

गोरो जंपे सुण मोरी वात, गाजण हुँता वडा मुझ भ्रात।
तस सुत वादल छें वलवंत, तेहनें पण पूछों ए मंत्र ॥८९॥
तव पदमणि गोरल ससनेह, पोहता जइ वादल रें गेह।
देख आवती थयो मन खुशी, वादल सांमो आयो हसी ॥९०॥

विनयवंत करि पग परिणांम, कांका नें वलि कीध सलांम ।
गोरो जंपें बादल सुणो, सुहड़ें थाप्यो ए मंत्रणो ॥६१॥
पदमणि देई लेस्यां राव, अवर न कोई चिंतें दाव ।
पदमणि आया आंपण पास, आंणी आम्हो मन विशवास ॥६२॥
हवें तुं जेम कहे ते करां, नीचो देतां लाजें मरां ।
आपें डीलें छां दो जणां, आलम साथे लसकर घणां ॥६३॥
कहो जीपेस्यां किम एकला, किला न होवें कदही भला ॥६४॥
तिण कारण तो पूछण भणी, आव्यों साथें ले पदमणी ।
हिवें करवो रणवट नें ठाह, आपें बेहु भुजें गजगाह ॥६५॥
पदमणि बादल सुं इम कहें, सरणें आवी हुँ तुम तणें ।
राखि सको तो राखो मुज्झ, नहि तर तेहिवां दाखो मुझ ॥६६॥
खांडुं जीह दहुँ निज देह, पिण नवि जाउं असुरां गेह ।
लाखां जुंहर करिनें वलुं, पिण नवि कोट थकी नीकलुं ॥६७॥
सील न खंडुं देह अखंड, जो फिर उलटें देह अभंग ।
सुहड करावें वलि भरतार, मुझ कुल नहीं हें ए आचार ॥६८॥
सील प्रभावें होसी फते, रिपुदल लागो झुंझों मते ।
रहें [अ] गढ़ नें छूटें राय, हुँ पिण रहुं सुजस जग थाय ॥६९॥
परमेसर पिण साहस साथ, अंत हथा करसी जगनाथ ।
लहो सोभाग दीधी आसीस, जीवो बादल कोड वरीस २६००

कवित्त

कहें पदमनि आसीस, अखें बादल अजरामर ।
तुं मुझ पीहर वीर, धीर चित मोर बराबर ।

खग भाजहु खुरसांण, मांण रखहुँ हिंदवांगह।
घुरें जेत नीसांण, करें दुनीयांण वखांणह।
संनाह स्याम सरणें सुहड, एह विरुद तुझ भुज लहें।
कर घालज्यो समुंद्रा सुहड, तुज्झ अंक माथें वहें॥२६०१॥

दूहा

व्रद धर बादल बोलियो, मरद जोस मयमंत।
गहकें केहरी गाजियो, दूठ महा दुरदंत॥२६०२॥
काका सुण बादल कहें, केहो कायर कांम।
रहां वेठं सारा सुहड, एह अमीणो नांम॥२६०३॥
काका थे [कां] चिंता म करो, अंग धरिहां उलास।
तो हुं बादल ताहरो, भत्रीजा स्याबास॥२६०४॥
आलम भाजु एकलो, पीउं पिसुण खग रेस।
कुलवट उजवालुं किलों, आंणुं रतन नरेश॥२६०५॥
बीडो झालयां बादलें, बोले इम बलवंत।
तुं सत सीता दूसरी, हूँ दूजो हनुमंत॥२६०६॥
सती तुहारी सांमिनो, मिलुं महादल मांण।
घडि माहें आणुं घरें, रतनसेन राजांन॥७॥
घरे पधारो पदमणि, मकरो आरत माय।
बादल बोल्या बोलड़ा, ते नवि झूठा थाय॥८॥
प [च्] छिम सूर न ऊगमें, मेर न कंपें वाय।
सापुरसां रा बोलडा, फिरे न झूठा थाय॥६॥

गोरो सांभलि गहगह्यो, सूरिम चढ़ी सरीर।
कायर पूतां कांपवें, सूर धरावें धीर ॥१०॥

चौपाई

पदमणी घरें पधारी जिसें, बादल माता आवी तिसें।
सुणज्यो सगलो ते संकेत, हिवड़ा मांह न मावें हेत ॥११॥
नयण झरें मुंकें नीसास, माता दीसें अधिक उदास।
इण पर आवी दीठी मात, विनय करें पूछें सुत वात ॥१२॥
किण कारण तूं माता इसी, कहो वात मन मांनें तिसी।
आरत केही छें तुम तणे, क्यूं छो चित्त आमण दुमणे ॥१३॥
मात कहें सुण बादल बाल, मांडै कांय लीयो जंजाल।
दूध दही तूं माहरे एक, तुझ विण कोई नहिं मुझ टेक ॥१४॥
घणा खाए मेगलिया ग्राह, सुहड रह्या छें तिके विमाह।
सासन वास नही नृप तणो, खरच खावांछां निज गांठनो ॥१५॥
रिण विध किम जांणेस्यो सजी, घर विध वात न जांणो अजी।
कहि कीधा छें तें संग्रांम, अणजांण्यां किम कीजें काम ॥१६॥
आलिम किण पर गंज्यो जाय, आटें लुंण किसा नें थाय।
बादल पूत अछें तूं बाल, रिण संग्रांम तणो नहि ताल ॥१७॥
अलगा डुंगर रलियांमणा, हुंस हुवें अण दीठां तणा।
जुद्ध तणा सुख भला अदीठ, वात करंता लागे मीठ ॥१८॥

यतः दूहा

डुंगर अलगा थी रलियांमणा, दीसें इसरदास।
नेडा जाय निरखिजें जदी, कांटा भाठां नें घास ॥१९॥

चौपाई

सीह सवद सुण मेयगल घटा, नासें सगला तेपिण कटा।
जिम आलम भांजुं एकलो, गढ़ चीतोड़ दिखाउं भलो ॥२०॥

दूहा

एक संहेस एकलो, एक एकला घणाह।
सींघ सहेसें चोंटियो, जोखे जणा जणाह ॥२१॥

कवित्त

रे वादल कहें मात, वात तुं वीछ करारी।
परिहर मन अभिमांन, बोल बोलहुं विचारी।
सुभट होयें दसवीस, तास वलि आरंभ कीज्यें।
आलिम साह अथाह, समुंद किम बांह तरीज्यें।
बालक गत ओछंछलि, जूझ वूझ जांणें नही।
मुझ वयण मांन सुपसाय कर, तो सुपूत वादल सही ॥२२॥
हुं कित वालो माय, धाय आंचल नवी लगुं।
हुं कित वालो माय, रोय नही भोजन मग्गूं
हुं कित वालो माय, धूलिढिग मांहि न लोटुं
हुं कित वालो माय, जाय पालणें नही पोढुं।
जा जुल नाग आलम जुवन, जास जुद्ध छोडुं महें।
रण खेल मचाऊं वाल जिम, नही माय वालो कहें ॥२३॥
तव फिर जंपें माय, वात सुन पूत अधीरह।
गढ़ रोक्यो असुरांण, सुभट सवल ए अधीरह।

पकड्यो राव परहत्थ, कत्थ न हुं भूठ करीजें
नहि सामंत तुझ भीर, भूझं कहा सोभ लहीजें।
रढ़ चढ़ हुं लहु बालक जिम, कहें बालक दुख क्यु धरुं।
साह ए समुंद सुलतांण दल, भुजबलि जिम दुतर तरहुं ॥२४॥
कहें बादल सुण मात, कहा फिर फिर बाल (क) कह।
जेठी नट जूझार, दास गायण हें पायकह।
वस्त्र सस्त्र कवि रूप, गयंद त्रिय गाह कवित्तह।
एते सब बालक्क [ह], मोल मुंगा जिन तन्नह।
वालुए कान काली दिख्यो, बाले गज देसीस दिय।
अरि सेन चाव बालक्क जिम, देखि ख्याल करी द्रढ़ हिय ॥२५॥
कहें बादल सुण मात, देखी एह घात विचारी।
प्रथम सांमी सांकडें, कष्ट भुगतहिं तन भारी।
असपती गढ़ विग्रहो, रह्यो न सुहडां धीर [जू] ज।
राजकुमार बाल [क्] क, तास निज नांही स बीरज।
पदमणी मुझ पयठी सर [णू] ण पेख्ख विचख्खन बात सब।
निज वंस अंश ऊजल करण, इह अवसर फिर मिलहि कब ॥२६॥

चौपई

सुतनो सूरपणो सांभली, माता मन मांहें कल मली।
वरज्यो वचन न मांनें रती, तब गई मेली मेठलवती ॥२७॥
वात सहू वहूअरनें कही, जई राखो निजपति नें ग्रही।
म्हांरी सीख न मांनें तेह, रहेंसी भेट तुमारो नेह ॥२८॥

सवी शृंगार सझै सावता, पहिरी वस्त्र भला भावता।
हाव भाव करें वचन विलास, जिण पर तिण पर पाडें पास ॥२६॥
'एम सुणि वहूअर नीकली,' झबकंती जांणें बीजली।
सकुलिणी सझ सोल शृंगार, आवे वेगि जिहां भरतार ॥३०॥
रूपें रंभ जिसी राजती, मृगनयणी सुन्दर गजगती।
नयणें निरमल देख्यो नेह, सांमधरम दाखें समनेह ॥३१॥
कोमल वदन कमल कांमनी, दीपें दंत जिसी दांमनी।
हस्त वदन बोलें हितकरी, स्वांमी वात सुणो मांहरी ॥३२॥
आलिम दूठ महा दुरदंत, कहीनें किण पर जूझो कंत।
अरि बहुला नें तुं एकलो, इसें मतें नवी दीसें भलो ॥३३॥
ते हुं पुरख नही बादलो, जोए जिण पर मांडु किलो।
वलती अरज वली [छे] इसी, जात नहीं छें जांवा जिसी ॥३४॥
हींसे खेंग सींधुर सारसी, गलबल डूगल करें पारसी।
सोखें खिण इक मांहें तलाव, मुख मंकड चित दुष्ट सुभाव ।३५।
भुरज उडावें दे दे ढ़लां, मांस भखें वाणें अलालां।
ऊडंता पंखीया हणें, वालें बांधी कोटी चुगें ॥३६॥
बादल बोलें वलतो हसी, तें ए वात कही मुझ किसी।
हैंवर गेंवर पायक पूर, एकण हाक [क] रुं चकचूर ॥ ३७ ॥

दूहा

इह त्रिय सुणि बादल वयण, जंपें तीय जुवांन।
त्रिया सैझ गंजी नहीं, किम गंजसी सुलतांन ॥ ३८ ॥

चौपाई

खडग युद्ध विसमों छें सही, कूडी रीस न कीजें कही ।
मुझ तन हाथ न घाली सको, भोगी स्वाद लहें जे थको ॥३६॥
असपति ग्रहि विसमां वींदणी, भमुह चढावें मेलें अणी ।
जरह कंचुकी भीडत अंग, चिलकुलियो मुख रातो रंग ॥४०॥
मलपें मयमत नारी जेम, वचन विरस चित न धरे पेम ।
अमंगल सींधू नद गावती, छल धर ती डा कुल वावती ॥४१॥
पोरस तणो देखालिस तेज, तिण दिन आविस ताहरी सेज ।
जांलिग पिसुण वखांणें नही, गुणीयण विरुद न द्यें उमही ॥४२॥
तां लग केहा सूर सधीर, वल्लभ मांनें जेह सरीर ।
लोही सांटें चाढ़ें नीर, ते कुल दीपक वावन वीर ॥४३॥
जब नारी जंपें कर जोड, अवर नही को ता [ह] रें जोड ।
भलो भलो कहेंसी संसार, सांमधरम रहेंसी आचार ॥४४॥
जिम वोलें छें तिम निरवहें, मत किण वातें जाए ढ़हें ।
लाज म आंणो कुल आंपणें, सांमी साहस जूझें घणें ॥४५॥
जीवन मरण सदानु नाथ, हुं नवी मुंकुं प्रीतम साथ ।
घणो घणों हिवें कासु कहुँ, जिम करज्यो तिम हुं गहगहुं ॥४६॥
कंत कहें सांभल सुंदरी, मोटा वंश तणी कुंअरी ।
बोल्या बोल भला तें एह, हित वांछें सोही ससनेह ॥४७॥
ओछा घर की आवें नार, कुमत दीए पूछ्यां भरतार ।
तें कुलवंती नारी तणों, महीयल सुजस वधाव्यो घणो ॥४८॥

अस्त्री आंण दिया हथियार, सम्मी आऊध छूयो तिणवार।
विनय करी माता पग वंद, चंचल चढ़ि चाल्यो आणंद ॥४६॥
गोरा पासें आयो गहगही, काका धीरप राखो सही।
एक वार देखुं पतिसाह, देखुं कुंअर तणो पिण माह ॥५०॥
कहें गोरो वादल सुण वात, मुझ तुझ एक अछें संघात।
तुं जावें हुं पाछें रहुं, ए वातें किम सोभा लहुं ॥५१॥
काका न कीजे काची वात, हुं जावुं छुं मेलण घात।
रिणवट्ट मुझ तुज्झ हें साथ, इण वातें मुझ देखण हाथ ॥५२॥
गोरो रावत रावें घरें, वादल चालो साहस धरें।
सुभट सहु मिलिया छें जिहां, वादल रावत्त आवें इहां ॥५३॥
सांमधरम सरणें साधार, रिम दल गाहण सवल अपार।
जांणें कुल कीरत धन धर्यो तेज-पूंज सूरज अवतर्यो ॥५४॥
सभा सहू देंखी खलभली, सूरातम सांमंत अटकलि।
वादल कवहि न आवें सभा, ग्रास न लाभें नहि घर विभा ।५५।
सकें तो कांइ विमासी वात, गाजण सुत ए सूर विख्यात।
सुभट राय सुत वेठां जिहां, कियो जुहार आवी नें तिहां ॥५६॥
उठ सुभा सहू आदर दिए, वेंठा वादल तव दृढ़ हिए।
पूछें सुभा प्रयोजन आज, कहो पधार्या केहें काज ॥५७॥
वादल बोलें वहिसे इसो, कहो तुमें आलोचो किसो।
सुभट कहें वादल संभलो, सवल मंडांणो इण गढ़ किलो ॥५८॥
अडियो आलम अवलीवांण, गढ़पति ग्रहियो रतनीस राण।
गढ़पिण लेस्यें हिवडां सही, द [ल] ली पत वेंठो हठग्रही ॥५६॥

पदमनि द्यां तो छूटें पास, नहितर गढ़री केही आस ।
गढ़ जातां कोई नवि रहें, वले करां जें तु कहें हिवें ॥६०॥
वादल वोलें भलो मंत्रणो, तुम आलोच कियो छें घणो ।
पदमणी आपं देस्यां नही, गढ़पति नें छोडावां सही ॥६१॥
इम करतां जे आवां कांम, कुलवट रहसी नांमो नांम ।
काया सांटे कीरत जुडें, [तो] मोले मुंहगी नवी पडें ॥६२॥

दोहा

सींह न जोवे चंदवल, नवि जोवें घर रिद्ध ।
एकलो ही भांजें किलो, जहां साहस तिहां सिद्ध ॥६३॥

चौपाई

सूरातन चित धीरज ज्यांह, परमेसर त्यां आवें वांह ।
तिवें आदरज्यो सतध्रम तणो, सुहडां धीरज दीज्यो घणो ॥६४॥
हुं जाउं छूं लसकर मांह, आवु वात सहू अवगाह ।
करि जुहार वादल अश्व चढ्यो, साहस नूर सूरातम चड्यो ॥
गढ़री पोल हुंती ऊतर्यो, वुद्धिवंत नें साहस भर्यो ।
निलवट दीपें अधिकों नूर, प्रतपें तेज घणो घट पूर ॥६५॥
सलहें अंग सझ्या सावता, पहिर्या वस्त्र भला फावता ।
आव्यो एकल मल असवार, जाणे अभिनव इन्द्र कुंआर ॥६६॥
आवत दीठो आलम जिसें, ए आवें हें कारण किसें ।
पूछण मुंक्या सांमां दूत, क्युं आवत हें ऐ रजपूत ॥६७॥
आयन किमें पूछ्यो तेह, वोलें वादल अती सनेह ।
आव्यो एक कहेवा वात, पदमणि आंण देऊं परभात ॥६८॥

आलिम मांने मुझ मंत्रणो, तो उपगार करूं हुं घणो ।
जाय न किम आलम सुं कह्यो, इम निसुणि असपति गहगह्यो ६६
मांहें तेडायो देइ मान, दीठो असपति भिड असमांन ।
तेज तेख दिनकर थी वणी, हुकम कियो खुस वेंमण भणी ॥७०॥
वेंठो वादल वुद्धि निधांन, असपति पूछें करि वहुमान ।
क्या तुम नांम कसी का पूत, अच किसका हें ते रजपूत ॥७१॥
क्या तुमको हें गढ़ में ग्रास, को अव्र आए हो अव्र पास ।
वोलें वादल वलतो हसी, रोम राय घट सहू उगसी ॥७२॥
अवसर वोली जांणें जेह, मांणस मांहें जणावें तेह ।
विनय करें कर जोड प्रमांण, करिहुं अरज पाऊ फुरमांण ॥७३॥
नांम ठाम सहू विगतें कह्या, महरवांन तव आलम थया ।
वादल वोल्यो साहस धरी. स्वामी वात सुणों मांहरी ॥७४॥
पदमणि मुंक्यो हुं परधांन, सुहड न मेंलें निज अभिमांन ।
पदमणि देख्या तुम कुं हेठ. भोजन करता लागी देठ ॥७५॥
तिण दिन थी ते चिंते इसो, कामदेव वलि कहीइं किसो ।
धन तस नारि तणो अवतार, जिसकें आलम हें भरतार ॥७६॥
विरह विथाकुल वेंठी रहें, अहनिस सुहिणें आलम लहें ।
निपट घणा मुंके नीसास, अवला दीसें अधिक उदास ॥७७॥
आलम आलम करती रहें, मुख करि वात न किण सुं कहें ।
मुझ तेडी ए दाख्यो भेद, मुंक्यो करवा विरह निवेद ॥७८॥

दूहा

सुण साहिब आलम अरज, में पदमणि का दास ।
यह रुक्का हमकुं दिया, हें इसमें अरदास ॥ ७६ ॥
जो में देखुं बदन छब, मेरे कुछ न चाह ।
इंन्द्रपुरी किह काम की, प्रीत नहीं जिम माह ॥ ८० ॥
रुक्का आलम हाथ सूं, बांचत धर ऊछाह ।
ताती बाती बिरह तें, मेटत ही जल दाह ॥ ८१ ॥
निस बासर आठो पहर, छिन ही न बिसरें मोह ।
जिहां जिहां नयन पसारहुं, तिहां तिहां देखें तोह ॥ ८२ ॥
साह तुमारे दरस कुं, अरध रह्यो जिव आय ।
कहो क्या आग्या देत हो, फिर तन रहें कें जाय ॥ ८३ ॥
प्रीत करी सुख लेण कुं, सो सुख गयो डुराय ।
जेसें सांप छछूंदरी, पकर पकर पछताय ॥ ८४ ॥
बाती ताती बिरह की, साहिब जरत सरीर ।
छाती जाती छार हुइ, ज्युं न बहत दृग नीर ॥ ८५ ॥

कवित्त

कहे पदमनि सुन साह, वाह तुम रूप बडाई ।
[अहो] कांम रूप अवतार, अहो तेरी ठकुराई ॥
मुझ कारण हठ चढ़े, आप ग्रही खग उनंगें" ।
पकड़्यो राण रतन्न, वचन बिसवास उलंघे ॥
अब बेंठा है करि मोन मुख, कहा तुमारें दिल बसी ॥
जेही काज एतो कियो, सो क्युं न करहो खुशी ॥ ८६ ॥

में तेरी पग दास, में (हूं) तेरी गुण बंदी।
तुम रहिमान रहीम, मे हुं त्रिय आव मगी दी।
में तो यह पण किया, सेज आलम सुख माणुं।
ना तर तजिहुं प्राण, अवर नर निजर न आणुं।
अब करिहुं [वहु] राज मानहुं अरज, हुकम होय दरहाल इह।
में आय रहुं हाजर खडी, छोडि देहो हिंदवाण पह ॥ ८७ ॥

चौपाई

जब भेजें आलिम परधान, द्यो पदमणि छोड़ें राजांन।
सुहड कहें वलि मरसां सही, पिण पदमणि को देस्यां नहीं ॥८८॥
में समझाय सुभट सामंत, वीरभाण कुंअर जगजंत।
क्युं क्युं आज ठवें छेकांन, तिण जांणु छूं विणसे वांन ॥ ८९ ॥
पदमणि मुंक्यो हुं तुम भणी, विनय भगत विनवें घण घणी।
वलें जिका होवें छें बात, आवे कहेस्युं ते परभात ॥ ९० ॥
सीख दियो पत्री पढि सही, पदमणि पासें जाऊं वही।
जोती होसी म्हांरी वाट, करती होस्यें अति उचाट ॥ ९१ ॥
विरह विथाकुल [न ख] सें विरहणी, कांम पीड दाहें पदमणी।
तुम संदेस सुधारस जिसां, पाउं जाइ कहुं तिहां तिसां ॥ ९२ ॥

दूहा

असपति इण पर सांभली, पदमणि प्रेम प्रगास।
वयण वाण वेध्यो घणो, मुंकें सबल निसास ॥ ९३ ॥
पत्री वांची प्रेम सुं, चतुराई सु- विचार।
कागद कर मुंके नही, नयण लगाई तार ॥ ९४ ॥

कांमण वांण कुण सहि सकें, दाझें सारी देह ।
सुन्दर तणा संदेसडा, निपट वधारें नेह ॥ ६५ ॥
वार वार चुंबन करें, रुक्का कुं मुखलाय ।
अजब पढ़ी है पदमणी, खूब लख्या ए मांह ॥ ६६ ॥
असपति थो अहि सारिखो, सही न सकंतो कोय ।
खील्यो बादल गारुडी, पदमणि मंत्र परोय ॥ ६७ ॥

चौपाई

असपति बोलें बादल सुणो, तुं मेरें वल्लभ पांहुणो ।
भगत जुगत केती कहजीइं, तेरी अकल वसी मुझ हीइं ॥ ६८ ॥
पदमणि सुं कहियो मुझ प्रीत, रुडी पर भाखें सहु रीत ।
जो हम हाथ आई पदमणी, तो तुझ कुं चुं धरती घणी ॥ ६९॥
सुभट सहू समझावें घणा, थिर कर थापे ए मंत्रणा ।
तुझ नुं करस्युं देशज धणी, दूध डांग दिखलावे घणी ॥२७००॥
इस कही कर सुती निज नाह, पहिराव्यो बादल पत्तिसाह ।
लाख सोनिया दीधा सार, हेंवर गेंवर देश अपार ॥ २७०१ ॥
रुक्का लिख देहुं तुम हाथ, मांहें लिखहुं प्रीतम गाथ ।
रुक्का ल्युं नहि आलम तणा, कोइ वांचें तो भाजें मंत्रणा ॥ २ ॥
मुख सुं वात करुंगा घणी, विरह वात सहु आलम तणी ।
मुझकुं सीख दीयो सुपसाय, आलम साह दीयो पहोचाय ॥३॥
सोवन पोट हमालां सिरें, हय हींसें घेंसारव करें ।
इण पर आयां चित्रगढ़ मांह, पूछें वात सहू परचाह ॥ ४ ॥

रींझ मोकली निज घर ज्यार, माता हरख थई तिणिवार।
देखी साह तणो सिरपाव, देखी सूरातम दरियाव ॥ ५ ॥
गोरो रावत मन गहगहयो, करसी वादल सगलो कह्यो।
हरखित नार हुई पदमणी, ए मेलवसी सही मुझ धणी ॥ ६ ॥
सुभट सहू चमक्या मन मांह, वादल मांहें अधिको आंह।
सगत न छांनी राखी रहें, वांधी अगन होवें तो दहें ॥ ७ ॥

दूहा

विधना ज्यां वुहि गुण दियो, नित दो मति मन मंद।
जे कुंडे किम छाइए, छिप्यो रहें कित चंद ॥ ८ ॥

चौपाई

वादल वम कीयो मंत्रणो, कहुं वात तें सहु को सुणो।
वीस सहम मझ करो पालखी, वात न किणही जाई लखी ॥ ९॥
ऊपर अधिक करो ओछाड, पाखतिया वांधो पतिवाड।
दो दो सुभट रहो सा मांह, वांधी सस्त्र सलह संन्नाह ॥१०॥
लागे लार करो पालखी, कहमां मांहें छें तसु सखी।
विचें पालखी पदमणि तणी, परठी मोभ करो तिण धणी ॥११॥
साचो पदमणि रो सिंगार, ऊपर थापो भंवर गुंजार।
तिण में रावत गोरो रहो, वात रखें कोई वारें कहो ॥१२॥
छेटी विचें न राखो रती, लारो लार करो पागती।
गढरी पोल ममीपें वार, सेन ममीपें आंणो पार ॥१३॥
एम करी हिवें तुम आवज्यो, वेलां वहुली पडखावज्यो।
हुं विच जाय करुं छुं वात, मिलस्यां जिम तिम घातोघात ।१४।

हुं ले आवेसु राजांन, पोहचावेस्यु नृप निज थांन।
पछे करेस्यां सवलो कलो, ए आलोच अछें अति भलो ॥१५॥
सुभटे सगले मानी वात, परठ करंतां थयो प्रभात।
भेद सहू समझावी घडी, चाल्यो बादल चंचल चडी ॥१६॥
पोहतो जाय लसकर मांह, जहां वेंठो छें आलमसाह।
जाए बादल करी सलांम, हरखित बोलें असपति तांम ॥१७॥
बादल साचा कह संदेश, वगसुं वोहला तोनें देस।
बादल अरज करें परगडीं, स्वांमी वात सिराडें चढ़ी ॥१८॥
कटक सहू समझावें नीठ, पदमणि आंणी गढ़रें पीठ।
सुहड सहू भाखें छें ऐह, निसुणी स्वांमी विनती तेह ॥१९॥
पदमनि सुं ज्यो छें तुम कांम, तो हिवें राखो मांझो मांम।
अतरो हुवें हमकुं [वे] वैसास, पदमणी आंणुं जिम तुम पास।२०।
असपति बोले वलतो एम, कहो विसवास हुवें तुम केम।
बादल कहें श्री आलम सुणो, विदा करो लसकर आपणों ॥२१॥
सुहड सहू वोलें छें मुखें, वेही स्वारथ चूको रखें।
पदमणि लेइ न छोडें राव, रखे उपावो असपति दाव ॥२२॥
पहिली पण कीधों छें कूड, तिण वैसास मिल्यो छें धूड़।
तिण कारण कहुं आलम साह, लसकर सवही करो विदाह ॥२३॥
जो वलि वीहो तो असवार, पासें राखो सहस वे च्यार।
अवर वो सहुं आगें चलाय, जिम विसवास अमां मन थाय २४
इम सुणीनें थयो उतावलो, वोलें आलम अति बावलो।
हम अवीह वीहें किस थकी, बादल एसी तें क्या कथी ॥२५॥

हुकम कियो असपति हुंसियार, कूंच कराव्यो लसकर लार।
सहस वे च्यार रहो हम पास, हींदू कुं होवें वैनास ॥२६॥
लसकरियां जव लाधो दूदुओ, हरख घणो मन मांहें हुओ।
लसकर कूंच कियो ततकाल, चाल्या सुभट विकट विकराल ॥२७॥
मीर मुगल को [इ] खांन निवाव, मुगल पठांण घणी जस आभ।
पदमणी सनस करें जे भगी, आगें चलाए दल्ली भणी ॥२८॥
विया विया जे जो रण कट्टा, एकेला भांजें गज घटा।
डाईल साह नांणें विस्वास, तिण कारण राखण भिड पास २९
सूरा सूरा सहस वेच्यार, असपति पास रहया असवार।
आलिम वोले वादल सुणो, कहियो कीधो हें तुम तणों ॥३०॥
वेग मंगावो अव पदमणी, पालो वाचा आपापणी।
लाख महोर तव रोकड दिया, पहिरावणी वागा समपिया ३१
ते लेई वादल आवियो, हरख्यो माय तणो तव हियो।
तव सुहडां सुं कही संकेत, हवें जगदीस दियो ˘ जेंन ॥३२॥
तुमें संकेत रूडो राखज्यो, पालखी तुमें लेई आवज्यो।
मत्त किण वात हुओ आखता, रखे लगावो कांई खता ॥३३॥
इम कहीनें आगो संचर्यो, पालखियां पूठें परवर्यो।
राघव व्यास जे वुद्धिनिधांन, स्वांमिद्रोह थी नाठी सांन ॥३४॥
छलवल एन लिखांणी काइ, लूंण हरांम तणो परभाइ।
असपति दीठो आवत वली, वादल वात करो निरमली ॥३५॥
साहिव सांभल मुझ वीनती, पदमणि एम कहें गुणवती।
आवुं छुं हजरत तुम गेह, आलिम धरज्यो अधिक सनेह ॥३६॥

पण सोहागण मुझन करें, एह अरज मन मांहें धरें ।
एम सुणि ने आलिम कहें, पदमणि आपें आदर लहें ॥३७॥
पदमणि नारि तणा नख एक, तिण सरीखी नहि नारी एक ।
पदमणि कारण म्हें हठ कियो, वयण लोपि रांणो ग्रहि लियो ३८
मुझ मन खांत अछें तिण तणी, मांनीती करस्युं पदमणि ।
अवर हुरम करसी पग सेव, पदमण कुं पधरावो हेव ॥३९॥
एम कही वलि वादल भणी, परिवल दीधी पहिरावणी ।
ते लेइ वादल आवियो, पदमणि नारी वधावियो ॥४०॥
सुभटां नें सहु भाखी वात, जई मेलावस्युं धातो धात ।
तुम सहु वांह रहेज्यो इहां, वात रिखे को [इ] काढो किहां॥४१॥
आयो वादल असि पर चढ़ी, नव नव वात कहें मन घडी ।
होठें वुद्धि वसें तेहनें, कसी उणारथ छें जेहनें ॥४२॥
वात कहंतां लागें वार, फिरि वादल आयो तिणवार ।
परगट आंण धरी पालखी, आलिम देखें सहु सारिखी ॥४३॥
वादल विच विच में वलि फिरें, पदमणि [नें] मिस वातां करें ।
रह्यो पहर दिन एक पाछलो, लसकर दूर गयो आगलो ॥४४॥
किला तणी जव वेलां भई, तव तिहां वादल वोलें सही ।
हजरत एम कहें पदमनी, मुझ ऊभां थई वेलां घणी ॥४५॥
म्हांरी एक सुणो अरदाश, जिम हुं आवुं तुम आवास ।
रतनसेन मुंको इकवार, तिससें वात करुं दोय च्यार ॥४६॥
ले राजा आवुं दरवार, जेम रहें कुलनो आचार ।
आलम वोले सुण वादला, पदमनि वोल कह्या तें भला ॥४७॥

यह बोलें हम होवें खत्री, पदमणि न्याय कहीजें इमी।
हुकम दियो आलम ततकाल, छोड्यो रतनसेन भूपाल ॥४८॥
वादल मांहें छुडावण गयो, रांणो रूम अपूठो थयो।
फिटरे बाद ल] मुह म दिखाल, सबल लगावी मुफनें गाल॥४६॥
वेंरी वेंर घणो तें कियो, पदमणि सांटें मोनें लियो।
खत्रीवट मांहें नांखी खेह, खत्री निसत थया सवी गेह ॥५०॥

कवित्त

फिट बादल कहे राव, वाच चूको हिंदवांणह।
खत्री ध्रम लजीयो, मिट्यो भिड मांन गुमांनह।
सांम ध्रम लोपीयो, लंण तामीर न कीनी।
जीवत शसलें खाल, नारी असपति कुं दीनी।
कहा करु म्हें परवस पड्यो, वाच लोप आलिम भयो।
सत छोड कितो अब जीवहें, तबहीं नीर उतर गयो ॥५१॥
कहें बादल सुनि राव, वाच हिंदवांण न चुक्कहीं।
खत्री ध्रम ऊजलो, सुहड धीरज न मुक्कही ॥
सांम ध्रम रख्खहें, जम सबहीं कुं प्यारो।
भुगतिहो गढ़ चितोड, इला कीरत विसतारो ॥
मकर [हो] सेव असपत्तरी, असपति माहिली मेलियो।
महिमांन मांन दीजें सदा, करहुं आद पुब्ब कह्यो ॥५२॥

दूहा

महिल अगनीत गढ़मधर, ग्रही तस राज गहिल्ल।
उस आलम कित हीर सुं, सब विध होय सहल्ल ॥ ५३ ॥

राख रजा सिर रांम की, धरि मन उमंग उछाह ।
राज पधारो चित्रगढ़, सब विध होसी [स] लाह ।।५४।।

कवित्त जात आदि अक्खरो

राव करहुं मन ग्यांन, जवनपती हठ हमीरह ।
गुमर किए रस नहीं, ढ़लकी अंजलियह नीरह ।।
परा लेखयो कछू धात, निम्यो निस छति रोस छंडिइं ।
डाव बिन घाव होवें नही, वाचहुं पढ़मख्खर हीइं ।।५५।।

चौपाई

भूप प्रीछ्र उठयो तिणवार, असपति बोलें चित्त अपार ।
पदमणि ने मिल आवो जाय, पीछें सीख दीए हित भाय ।।५६।।
राजा चाल्यो पदमणि भणी, सुखपालां देखी घण घणी ।
पेंठा मांहि जिसें पालखी, वाच सहू साची तब लखी ।।५७।।
बादल बोलें रांणा सुणो, अवसर नही ए वाता तणो ।
एक थकी बीजी अवगाह, गढ़ लग पहुंचो सविकां मांह ।।५८।।
स्वांमी थाज्यो घणु सजेत, मांहें जई कीज्यो संकेत ।
साचो कीनो ए सहिनांण, दीज्यो डाका जेंत निसांण ।। ५६ ।।
रतन तुंहारें बखतें सही, मंत्र भेद पिण हुओ नही ।
सांमधरम नें सत परिमांण, गढ़ रहियो नें छूटो रांण ।। ६० ।।
एम सुणी राजा रंजिओ, साई सफल मनोरथ कियो ।
कुसल खेम पोहंता गढ़ मांह, जांणक सूरज मुंक्यो राह ।।६१।।
कुसल तणा वाजा वाजिया, तब ते सुभट सहू गाजिया ।
नीसरिया नव हत्था जोध, मांण दुसासन वेंर विरोध ।।६२।।

राघव तणो हुओ मुख स्यांम, कूड कियो पिण न सर्‌यो कांम
सांमद्रोह पातिक परगट्यो, अकल गईनें पोरस मिट्यो ॥६३॥

सांम कांम समरथ अतिसूर, गोरो रावत अतिहें गरूर ।
अरीदल देखी तन उलसें, सुभट सहू मन मांहें हसें ॥ ६४ ॥

सूरातन चढ़िया सिरदार, ऊँचा खग जलहल जूझार ।
दलां विभाडण दूठ दुबाह, रुक हत्था दीपें रिम राह ॥ ६५ ॥

च्यार सहस निसरिया सूर, एक एक थी अति करूर ।
आगुवांणें बादल गेह, पूठें सांमंत थाट सबेह ॥ ६६ ॥
वाघट दीसें भिड वणां, सिलह टोप करी रुद्रांमणा ।
धसिया छूटी ले तरवार, हलकारे लागा हलकार ॥ ६७ ॥

रे रे असपति ऊभो रहें, हिवें नासि मत जावो वहें ।
म्हें पदमणि आंणी छें जिका, तोनें हिव देखाडां तिका ॥ ६८ ॥

तोनें खांत अछें तिण तणी, पदमणि नार निहालण तणी ।
हठ हमीर जांणो तो सही, लडें अमां सुं अवसर ग्रही ॥६९॥

इम कहंता भिड आयां जिसें, आलिम दीठा अरियण तिसें ।
एहवी वात कहें पतिसाह, रिण रसियो उठियो रिम राह ॥७०॥

रे रे कूड कियों बादलें, हिंदू आय बाल्या सांकलें ।
हलकार्‌या असपति निज जोध, धाया किलकी करि करि
क्रोध ॥७१॥

मांहों मांह मंडांणो किलो, बोलें असपति सुं बादलो ।
पातिसाह मत छांडो पाव, तेरा कूड अमीणा घाव ॥ ७२ ॥

कवित्त

सुणि वादल कहैं साह, वाह तुम वोल भलाई ।
मुख मीठा दिल कूड, इहें हींदू न कराई ।
पदमण करी कबूल, तुम्हें सिरपाव दराया ।
छोड़या रांण रतन्न, सवे दल दूर वलाया ।
अव लडिहां खग वुलहू अकथ, काफर गुंडाई धरहुं ।
हम सरिस चूक देखहुं सुतो, मुरख अण खूटी मरहुं ।।७३।।
कहैं वादल सुण साह, राह पहेंली तुम चूकें ।
दे वाचा गढ़ देख, वहुर तुम राव ही रूक्के ।
हम हींदू के मीर, निरख रखही कुलवट्टह ।
पदमणी दे ल्यें धणी; इहे हम लाज निपट्टह ।
अव करहुँ जुद्धि जूठा न कहुं, कहा रह्यो रस हम तुमह ।
ग्रही खग लडहुं म धरहुं गरव, वर तस नहि अवसांन इह ।।७४।।

चौपाई

आलम तांम हुआ असवार, जोधा मुगल पठांण जुझार ।
भिड्या खाग रिण मचियो दूठ, सुभट न दाखें कोई पूठ ।।७५।।
खेहाडंवर उड्यो इमो, सूरज जांणें वधुल्या जिस्यो ।
वांण विछूटें चिहुँ दिश घणा, रुड्या नगारा सींधू तणा ।।७६।।
खडग झलक्क उ[ज्] जल धार, जांणक वि[ज्]जल घण अंधार ।
संन्नाहें तूटें तरवार, जागें झाल अगनि अण पार ।।७७।।
कुंत अणी फूटें सूसरा, तूटें कालज नें फेफरा ।
उडें पूर वहें रत खाल, गुंजें सी घा[म] घण असराल ।।७८।।

वहें तीर चणणाट पंखाल, भड मातो ताता वरसाल ।
पडें मार गूरज गोफणी, फोजां फूटें तूटें अणी ॥७६॥
मार मार कहि वाहें लोह, रण लूधा सामंत छंझोह ।
खान निवाव गडू थल खाय, हजरत करें खुदाय खदाय ॥८०॥
नारद कलकी करि करि हाम, गीरध मांश तणा ले ग्रास ।
धड ऊपर धड ऊछल पडें, केता सांमंत सिर विण लडें ॥८१॥
रिण चाचर नाचें रजपूत, धुंकल माचवियो रण धूत ।
धन धन कहें सूरज धीरवें, अपछर माला कंठें ठवें ॥८२॥

दूहा

उत असपति तोवा वकें, इत हलकारें रांण ।
तिण वेलां वादल तणा, अडिया भुज असमांन ॥८३॥
कुण तोलें जल सायरां, कुण ऊपाडें मेर ।
वादल तो विण सामरें, (हसु) कुण झालें समसेर ॥८४॥
दलां विभाडण साहरा, ऊपाडें गज दंत ।
तु (जू) झ भुजां गाजण तणा, वलिहारी वलवंत ॥८५॥
जावें असपति रीझियो, सुहडां खमी सवाव ।
खागें खांन निवाव नें, तें ऊतारी आव ॥८६॥
हसियो आलम जांम सुणि, खग खसियो खत्रि सार ।
तुं वेधालक वादला, अंगद रो अवतार ॥८७॥
वावा खांन निवावरां, फाटा ऊभा फेह ।
वाका सुणिया जग सिरें, वाजंतें डाकेह ॥८८॥
महि डोलें सायर सुसें, प(चू) छिम ऊगें भांण ।

वादल जेहा सूरमा, क्यां चूकें अवसांण ॥८९॥
रिण डोहैं फिर फिर खलां, धडां धपावें धार ।
पारीसें पिडहार ज्युं, नह भूलें मनुहार ॥९०॥
घड पति साईं वींदणी, मद जोवन मयमंत ।
मुझ मन परणेवा तणी, खरी विलग्गी खंत ॥९१
सुण गोरा वादल कहें, तुं सामंत सकज्ज ।
तुं दल नायक हींदुआ, तुज(झ) भुंजें रिण लज्ज ॥९२॥
तु सीध चाढ़ण सूरमा, उजवालण कुलवट्ट ।
तुं वांधें पतिसाह सुं पेतों डर रणवट्ट ॥९३॥
वांधे मोड महावली, वांधें असि गज गाह ।
सिर तुलसी दल वालियां, डहियां खाग दुवाह ॥९४॥
केसरिया वागा किया, भुज ऊवांणे खाग ।
जांणक भूखो केहरी, जुड़वा नाखैं खाग ॥९५॥
सूरज हुंत सलांम कर, वलि मुंछा वल घाल ।
सु पतीसाहां सम चढ़ें, आयो रणवट जाल ॥९६॥
भरे डांण दईवांन भति, रांम रांम मुख रट्ट ।
अकल तें रण ऊरियो, माझी लोह मरद्द ॥९७॥
रुडें नगारा सिंधूआं, रिण सूरातन र[स्] स ।
मद आयो गोरो मरद, अडियो सीस डरस्स ॥९८॥
आवें असपति आगलें, इसो उडायो खाग ।
पायर पाखल पाधरें, जांणें हणुंमत वाग ॥९९॥

हाका करि किलकी हसें, डसें रिमां जिम नाग ।
तिण वेलां त्रिजडा हथो, करें पकंदा घाव ॥२८००॥
आडा खल भांजें अनड, फुरलंतो गज भार ।
आयो असपति ऊपरें, मुख कहतो हुँसियार ॥२८०१॥
तोलें खग तारां लगें, गोरे कीधो घाव ।
असपति जीध ऊवेलंता, पाछा दीधा पांव ॥२८०२॥
कहें वादल गोरा सुणो, सकजां एक सुभाव ।
आयोआंम गियां पछें, कुण रांणों कुण राव ॥२८०३॥
तोनें रिण वाही तणी, वदसी जगत विसेख ।
दल्लीसर परमेसरो, त्यां सुं केहो तेख ॥२८०४॥
घण घट नेंजा घाव करि, लडें भडें लें वाह ।
गोरो रणवट पोढ़ियो, वाही वाह ए लोह ॥२८०५॥
खमा खमा कहि अपछरा, डर उडें सीर हाथ ।
गिलें डए भग ग्रीध ज्युं, जाव वहें दिन नाथ ॥२८०६॥
आवें वादल ऊपरें, करें हथेली छांह ।
दल पतिसाही डोलियां, भांगी तुज भूजांह ॥२८०७॥
अइयो सूरातम तणा, अजे अथमांण अथाग ।
भुज वे वे रुंधा भला, इक मुंछां इक खाग ॥८॥
मुख देखे काका तणो, वांदें मुंछां वाल ।
वादल आयो साह सुं, चोरंग वंधें चाल ॥६॥
हलकारें भिड आपणां, वाकारें रिम थाट ।
पडिया कोसें त्रीस पर, झाडंतो खग झाट ॥१०॥

लोह छकारें ऊडवें, इसा लगाया हाथ।
पाधर खेत पछाडियो; सारो असपति साथ ॥११॥
रह चर्वी सागा कद [सु]; ऊभो असपति आप।
जां नवि खेस्यो वादलें, करी गुजाहल ताख ॥१२॥
खल गलिया वादल खगें, पूर हसम खुरमांग।
सांमंद जांणउ तान सुत, पीधा चऴूं प्रमांण ॥१३॥
पकड्यो असपति वादलें, एकल म [ल्] ल अबीह।
मेंगल हंदा मग दलें, गाल वजावें सीह ॥१४॥
फिर छोडें पकडें फिरें, नाच नचावें तेम।
रस लागो रांमत रमें, भोला वालक जेम ॥१५॥

कवित्त

सुण वादल कहें साह, राह हीदूं भ्रम रक्खो।
सांमधरम सुरतांन, अकल उसताद परक्खो॥
तुं सांमंत सकज्जह, वुद्धि वल अकल दुवाहो।
तुं ही ढाल हींदवांण, तुं ही रावत खग वाहो॥
गोरिल सरगि अपछर वरी, तुम दुनी में यम सुनहुं।
पतिसाही दलां लांइछरा, वहू भई जव वस करहुं ॥१६॥

दूहा

भ्रम राख्यो राख्यो धणी, र(ख्)खी पदमणि पूठ [में]।
अव रक्खहुँ मेरी अदव, कहें आलिम सुण दूठ ॥१७॥
मेरे लाल [तू] भूर्फे वरो, ए दुनियांण उकन्न।
भातीजें काको भिडें, दीधो न्यात्र विगत्त ॥१८॥

पद्मिनी चरित्र चौपई—
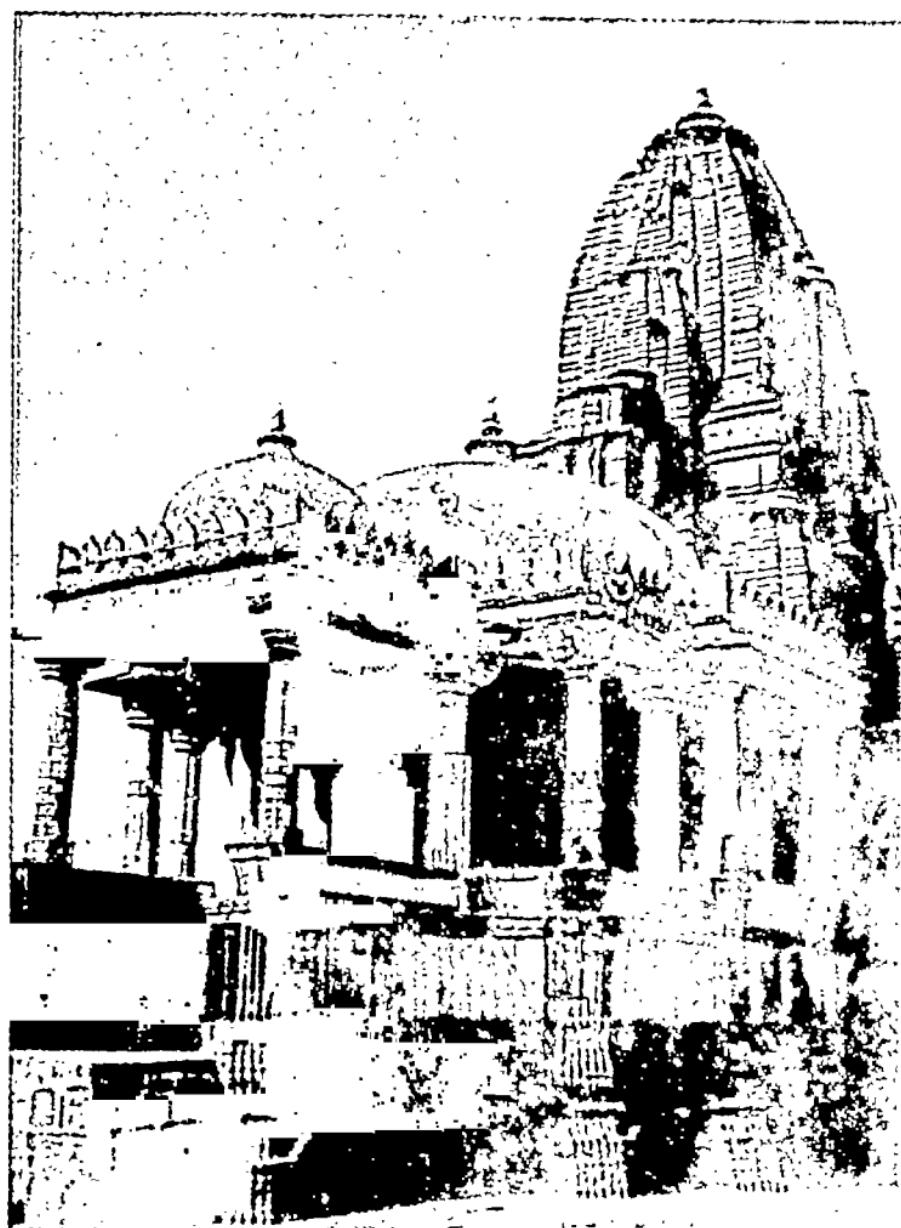
मीरां मन्दिर, चित्तौड़

[फ़ोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

पद्मिनी चरित्र चौपई—

मीरां मन्दिर, चित्तौड़

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

चौपाई

ऊभो रतनसेन राजांन, दीठो जुद्ध महा असमांन ।
जोया बादल गोरा तणा, हाथ महाबल अरिगंजणा ॥१९॥
पदमणि ऊभी द्यै आसीस, जीवो बादल कोड वरीस ।
सांमधरम साचव्यो सवेह, राखी बादल खत्रीवट रेह ॥२०॥
गोरो रावत रण में रह्यो, आलम सेन सावें खग लह्यो ।
लूटाणो लसकर जूजुवो, साका वादित भारथ हुवो ॥२१॥
पातिसाह ग्राहें मुंकिओ, एह वले मोटो जस लिओ ।
साह कहैं सांभल बादला, किया पवाडा तें ही भला ॥२२॥
दीवत दांन दियो म्हो भणी, किसी करां हिवें कीरत घणी ।
आलिम नीसर गयो एकलो, गोरो बादल जीत्यो किलो ॥२३॥

दूहा

करि कागल बादल सवी, हजरत राखी पास ।
इक तेरें मुख मुंछहें, अइ हींदू स्याबास ॥२४॥
पातसाह दिल्ली गए, भई दुनी सरबात ।
बादल भिड रण सोभियो, उवारी अखीयात ॥२५॥
हसम खजीनो लुटियो, ग्रह मुंक्यो पतिसाह ।
बोल्यो तुं निरवाहियो, अइयो भीचं दुवाह ॥२६॥
उघाड्यो चित्रकोट गढ़, सांमा आया रांण ।
मलियो बादल रतनसी, करें वखांण खुमांण ॥ २७ ॥
सांमेलो आया सकल, घुरियां जेंत निसांण ।
बधायो गज मोतीयां, गुनियन करें वखांन ॥२८॥

चौपाई

महा महोछव मांहें लियो, अरथ राज वादल नें दियो ।
पदमणि नार लिया वारणा, राख्या पण अम दंपति तणा ॥२६॥
इण पर आव्यो महिल मझार, वंदीजन वोलें जयकार ।
आवी लागो माता पाय, मात आसीस दिइं असवाय ॥३०॥
निज नारी ओढ़ी नवी घाट, सझि शृंगार कर तिलक ललाट ।
अरघ अभोखों देंई करी, मोती थाल भरी संचरी ॥३१॥
कीधा विविध वधावा घणां, कुसले खेमें आयां तणा ।
तव गोरिल री अस्त्री कहें, काको किण विध रण में रहें ॥३२॥
कहो किसी पर वाह्या हाथ, केता मार्या आलम साथ ।
वादल वोलें माता सुणो, किसु वखांण काकाजी तणो ॥३३॥
असपति पिण पग पाछा दिया, जेंत तणा वाजा वाजिया ।
वीछाया सव खांन निवाव, के उसीसें कें पयताव ॥३४॥
ऊपर गोरो भिड पोढ़ियो, अंवर सुजस तणो ओढियो ।
तन विखरायो तिल होय, मुंछां मरट न मिटियो तोह ॥३५॥
कुल उजवाल्यो गोरें आज, सुहडां सीधां चढ़ावि राज ।
रिण खेती गोरें भोगथी, में तो सिलो कियो पूठथी ॥३६॥
घटा वींदणी गोरें वरी, वांधे मोड महा रिण करी ।
में तो जांनी थकेह झुंवियां, विरुद भुजां छें गोरल लिया ॥३७॥

कुंडलियो

गोरल त्रिय इम उ [च्] चरें, सुण वादल समर [त्] थ ।
पिउ मुझ रिण में झूझतें, किम करि वाह्या ह [त्] थ ॥

किम करि वाहया हत्थ, व [त्] थ भरि सुहड पिछाड़या ।
भागा हय गय थट्ट, जाए नेंजें असि चाढ़ूया ।
गिलिया खांन निवाव, सीस असपति भोरिल ।
कहें वादल सुण मात, रिण ही इम जुझ्या गोरिल ॥३८॥

चौपाई

इम सुणि नें कांमनी तेह, विकसित वदन हुई ससनेह ।
रोम रोम सूरिम ऊछली, मुलकी महिला वोलें वली ॥३६॥
सांवल वेटा हिवें वादला, ठाकुर दोहिला हुवें एकला ।
पछें पडें छें छेटी घणी, रीस करेसी मांरो धणी ॥४०॥
वहिली होय म लावो वार, भेला होय काकी भरतार ।
एम सुणी वादल हरखियो, धन धन मात तुमारो हियो ॥ ४१ ॥
दांन पुन्य तव वहुला करी, करि शृंगार चढ़ी भल तुरी ।
श्रीफल लेई हाथें धरी, जैं जैं रांम कही नीसरी ॥ ४२ ॥
ढ़ोल घुरो गूजें चीतोड, वांध्यो सुजस तणो सिर मोड ।
इण पर आखा उछालती, आवी खेतें रिण मलपती ॥ ४३ ॥
पूजी गवरी करी सनांन, पहिरी धवल वस्त्र परिधांन ।
खमा खमा कहें धन भरतार, रिण समंद हिलोलण हार ॥४४॥
खट मंदिर पिय खोलें धरी, अगनिसरण कीधो सुंदरी ।
पति पासें जई पोहती विसें, अरध सिखासण दीधो तिसें ॥४५॥
अमरापुर वसीया उछाह, जय जयकार हुओ जग मांह ।
चंद सूरज वे कीधा साख, गढ़ चीतोड दल्ली दल साख ॥४६॥

करी मृतक्रत देही संसकार, आयो वादल निज घर बार।
रजपूतां ए रीत सदाइ, मरणैं मंगल हरखित थाइ॥ ४७॥

दूहा

रिण रहचिया म रोय, रोए रण भांजे गया।
मरणें मंगल होय, इण घर आगां ही लगें ॥४८॥

चौपाई

विरूद वोलावें वादल घणी, सांम सनाह सुहडाई तणी।
इसो न को वलि हूओ सूर, कमधज वंश चढ़ायो नूर ॥४६॥
पद्मणि राख राण राखियो, गढ़रो भार भुजें जालियो[1]।
रिण भिडतां राखावी रेह, वसो वसो[2] वादल गुण गेह ॥५०॥

कवित्त

जय वादल जयवंत, विरुद् वादल अरिगंजण।
संकट सांमि सनाह, भिडें पतिसाहां भंजण।
मलण मलींका मांण, हणण हाथी मय मत्तह।
सांम वंद छोडणो, दियण वहिनी अहि चंतह।
पद्मणी नार श्री मुख कहें, इस्यो अवर न कोई हुअ।
आरती उतारें वर तणी, जें वादल जेंवंत तुह ॥५१॥
कहें मात वादला, भलें मुझ उअर उपन्नो।
कुल दीपक कुल तिलक, रंक घर रयण संपन्नो।
ग्रहि मोखण पतिसाह, रुक वल गंजण अरी दल।
जेंत हत्थ जग जेठ, भुज वलिहार भुज वल।

१ लाजियो २ नमो नमो

मुख मुंछ तुझ कुल लज्ज तुही, सारी वेल कियां भडां ।
चीतोड मोड वांध्यो सिरें, दल्लीपति छाडें तडां ॥५२॥
रांम तणें भिड्या जिम हणुमांन, तेम वादल रतनसी रांण ।
पदमणि सत सीता सारिखी, वादल भिड लंघाया रखी ॥५३॥
सेवा कीधी अपछर तणी, तिण सोभा वाधी घण घणी ।
करी दिखावें इसीक कोय, अवरां सुहडां आदर होय ॥५४॥
गोरा वादल नी ए कथा, कही सुणी परंपर यथा ।
सांभलतां मन वंछित फलें, राज रिद्ध ल [छ] मी वहु मिलें ॥५५॥
सांमधरम सापुरसां होय, सील दृढ कुलवंती जोय ।
हींदू ध्रम सत परिमांण, वाज्या सुज [स] तणा नीसांण ॥५६॥

इति श्री चित्रकोटाधिपति वापा खुमांणान्वये रांणा रतनसेन पदमणी गोरा वादल संवंध किंचित् पूर्वोक्त किंचित ग्रंथाधिकारेण पं० दोलतविजयग विरचितोऽयं अधिकार संपूर्णम्

इति श्री षष्ठ खंड सम्पूर्णम्

जटमल नाहर कृत

गोरा बादल चउपई

सोरठा

चरण कमल चितलाय, कें समरूँ श्री शारदा ;
मुझ अख्खर दे माय, कहिस कथा चित लायकै ॥ १ ॥
जंबूदीप-मझार, भरतखंड खंडा-सिरै ;
नगर भलो इक सार, गढचितौड़ है विखम अत ॥ २ ॥
रतनसेन जिहां राय, पाय कमल सेवै सुभट ;
सूरवीर सुखदाय, राजपूत रजकौ धणी ॥ ३ ॥
चतुर पुरस चहुवाँन, दाँन माँन दूनूँ दियै ;
मंगत जिन को माँन, आवै मंगत दूर तै ॥ ४ ॥

कवित्त

एक दिवस नृप-पास आस करि मंगत आए,
च्यार चतुर वेताल, दृष्टि भूपति दिखलाए ।
दे आसिका-असीस, वीस दस विरद सुनाए,
नरपति पूछत भट्ट, कौन देसा तै आए ।
हम आए सिंघलदीप तै, कीरति सुनिकर तुम-तणी,
राजा रतनसेन चहुवाँण है, गढ चितोड़ केरो धणी ॥ ५ ॥

राय देय सनमाँन, पास अपने बैठाये,
कहो दीप की बात, जहाँ तें तुम चल आये।
क्या-क्या उपजत उहां, दीप सिंघल है कैसा,
कहै भाट सुनो राय, कहूँ देख्या है जैसा।
उदध-पार अदभुत नगर, सोभा कहि न सकूं घणी,
ऐरापति उपजत उहाँ, अवर नार है पदमणी ॥ ६ ॥

दूहा

पदमावति नारी कसी, कहो! भाटजी, वात,
भाट कहै, नरपति सुणो, च्यार रमण की जात ॥ ७ ॥
इक चित्रनि, इक हस्तनी, एक संखनी नार,
उत्तम त्रीया पदमनी, तस गुण अपरंपार ॥ ८ ॥

चौपई

कहो भाट, पदमावति-लख्खन, गुणी सरस तुम वड़े विचख्खन,
रंग-रूप-गुण-गति-मति दाखो, भाखा सकल मधुर-सुर भाखो।६।

कवित्त

पदमावति मुखचंद, पदम-सुर वास ज आवै,
भमर भमत चिहुं फेर, देख सुर असुर लुभावै।
अंगुल इकसत आठ, ऊँच सा सुन्दर नारी,
पाली सत्तावीस, ईस चित लाय सँवारी।
म्रगनैण, वैण कोकिल सरस, केहरि-लंकी कामनी,
आर लाल, हीरा दसन, भुँह धनुप, गय ग

दूहा

पद्मावत के गुण सुणे, चढी चूँप चित राय,
विन देख्यां पदमावती, जनम अख्यारथ जाय ॥ ११ ॥

चौपई

वसी चित्त-अंतर पदमावत, निसा नींद दिन अन्न न भावत,
इम रहताँ इक जोगी आयो, राजद्वार परि धूंही पायो ॥ १२ ॥

कवित्त

सिद्ध वड़ो जोगेंद्र, देख राजा चित हरस्यौ,
ज्यूँ सरोज सर माँझि, सूर देखत ही विकस्यौ ।
भगत-भाव वहु करी, जुगत कर जोग संतोख्यौ,
निसा वैठ नृप पासि, पत्र पंचामृत पोख्यौ ।
संतुष्ट होइ रावल कहै, मांग जु तुझ, कछु चाहिये,
राजा रतनसेन चहुवाँण कह, इक पदमण मोहि व्याहिये ॥१३॥
कहै ताम जोगेंद्र, दीप सिंघल पदमावत,
राज पाट तजि चलौ, भूप ! जे तुझ मन भावत ।
कहै राय, करि कृपा, वेग यहु कारज कीजै
जो कुछ कहो सो नाथ, साथ सामग्री लीजै ।
मृग त्वचा विछाई सिद्ध तव, पढ़ो मंत्र तव वैठ करि,
उड गये सिंघलद्वीपकों, (राजा) रतनसेन जोगेंद्र वरि ॥१४॥

दूहा

सुण रावत, जोगी कहै, करि रावल को वेस,
क्-सवदी भिख्या करो, यह मेरा उपदेस ॥ १५ ॥

कवित्त

दियो भेख जोगेंद्र, कान मुद्रा पहिराई,
कंथा सिंगी गले, अंग बभूत चढाई।
कपट जटा, करदंड, मोरपँख विझ्मण झोलैं,
वस्त्र कछोटो पहिर, अलख अगचर मुख बोलैं,
कर-पंकज पात्र अनूप ले, राज द्वार जब आवियो,
नृप सुता निरख पद्मावती, तब सु राज मुरझाइयो ॥ १६ ॥

दूहा

मन मोह्यो पद्मावती, देख रूप अति राइ,
कहै सखी सुं नीर लै, रावल छंट उठाइ ॥ १७ ॥

कवित्त

छंट उठायो जोग आय, तिहाँ सखी विचख्खण,
रावल-रूप अनूप, अंग बत्तीसे लख्खण।
तब पद्मावति हार, तोड़ नवसर दी भिख्या,
मुकताफल भरि थाल, नाथ पै लाई सिख्या।
कर जोड़ि गुरू आगें धरे, देख नाथ अैसे कहै,
जो जिस लायक होय सो, तैसी ही भिख्या लहै ॥१८॥
चल्यौ आप जोगेंद्र, चलित राजा-गृह आयो,
देख राय हरखियौ, सीस ले चरण लगायो।
आज पवित्र भया गेह, नेह धरि गरू पधारे,
आज सफल मुझकाज, बड़े हैं भाग हमारे।

तब सुनि आई पदमावती, गुरू चरण ले सिर धरे,
आसीस देइ रावल कहै, पुत्री तुम कारज सरै ॥१६॥
कहे ताँम राजान, पदम पुत्री सुखदायक,
वर प्रापत अब भई, नहीं कोई वर लायक ।
हूं ल्यायो वर, राय, तोहि पुत्री के कारण,
गढ़-चितोड़-राजान, दुष्ट-दुरजन-विड्डारण ।
राजा रतनसेन चहुवाण है, तिस समवड़ नहि अवर नर,
परणाय देइ पदमावती, मान वचन तू सत्तकर ॥२०॥
गुरू-वचन राजान, माँन पुत्री परणाई;
रतनसेन के साथ, भई है भली सगाई ।
दीन्हो बहु दायजो, लाल मुकताफल, हीरे,
पाटंबर, पटकूल, थाल भर कंचन नीरे ।
रावल कहै राजान को, पदमावति मुकलाइयै,
चीतोड़-लोक चिंता करै, राजा रतन चलाइयै ॥२१॥
राघव दीयो संग, वेग पदमनी चलाई,
रोवत माता भ्रात, कुंवरि कों कंठ लगाई ।
उडन-खटोला चढे राय, पदमावति, जोगी,
राघव चेतन संग, उडवि आये गढ भोगी ।
नीसाण वजे पंच-सबद तहाँ, गोरी मंगल गाइयो,
राजा रतनसेन पदमावती, ले चितोड़गढ़ आवियो ॥२२॥
तजी रानि सब और, राव पदमावति रातो,
रैन-दिवस रह पास, अंग आणंद मदमातो ।

नेम नीर को लियो, वीन देख्यॉं पदमावत,
महा-मोह-वस भयो, रहै अैसी विध रावत ।
जव निसा रही इक-दोय घड़ी, तव सिकार-उद्दम कियो,
राजा रतनसेन असवार हुय, राघव चेतन सँग लियो ॥२३॥

दूहा

वन के भीतर खेलतॉं, तृखा वियापी तेम,
विन देख्यॉं पदमावती, जल पीवण को नेम ॥२४॥

कवित्त

तब राघव चित लाय, सरस पूतली सँवारी,
त्रिपुरा की कर कृपा, रूप पदमावति नारी ।
भेख भाव वहु करी, जंघ पर तील वनाया,
देख राय भयो रोस, पाप मन भीतर लाया ।
विना रम्यॉं पदंमावती, तील स क्यूंकर जाणियो,
मारूँ न विप्र, काढूं नगर, यह सुभाव मन आणियो ॥२५॥
घरि आयो राजान, विप्रकुं दिया निकारा,
राघव तिसही समै, वेस वैरागी धारा ।
भगवें वेस सरीर, नीर भर लिया कमंडल,
जंत्र वजावै जुगत, जोग-तत रहै अखंडल ।
दिल्ली सु आय प्रापत भयो, रह उद्यान वन खंड सिर,
पातसाह तिहां अलावदी, करै राज सिर नर सुधिर ॥२६॥
एक दिवस सीकार साह खेलत तिहां आयो,
राघव तिसही समै जुगत कर जंत्र वजायो ।

म्रग सब तज बनवास पास राघव के आए,
सुणे राग धर कॉन साह म्रग कहूँ न पाए।
आयो सु तहाँ अल्लावदी, देख चरित अचरज भयो,
उतर तुरंग से साह तब, राघव के आगे गयो ॥२७॥

दूहा

रीझ्यौ साह सुराग सुनि, राघव को कह ताँम,
दिलिपति हम तुम सों कहैं, चलो हमारै धाम ॥२८॥
हम वैरागी, तुम ग्रही, अर प्रथवी पतिसाह,
हम तुम ऐसा संग है, जैसा चंद कुं राह ॥२९॥
हठ कीनो पतिसाह तब, राघव आन्यौ गेह,
राग रंग रीझ्यौ अधिक, दिन दिन अधिक सनेह ॥३०॥

कवित्त

एक दिवस नर काइ, ससा जीवत ग्रह ल्यायो,
पातिसाह ले तब्ब, गोद ऊपर बैठायो।
ता पर फेरै हाथ, अधिक कोमल रोमावल,
यातैं कोमल कछु, कहो राघव गुण-रावल।
तब हाथ फेर राघव कहै, यातैं कोमल सहस गुण,
पदमावति-देह, विप्र उचरै, पातसाह धरि कान सुण ॥३१॥

दूहा

व्यास बुलाए अलावदी, पूछत बात प्रभात,
सास्त्र विधि जाणो सकल, त्रियकी कितनी जात ॥३२॥

राघव कहै नरिंद सुन, त्रीय जाति है च्यार,
चित्रन हस्तन संखनी, पदमनि रूप अपार ॥३३॥

(*अथ पदमनी वर्णनम्*)

पदमनि के परस्वेद सें, कसतूरी की वास,
कमलगंध मुख तें चलै, भमर तजत नहिं पास ॥३४॥

कवित्त

पदमगंध पदमनी, भमर चहुंफेर भमत अत,
चंद वदन, चतुरंग, अंग चंदन सो वासत।
सेत, स्याम अरु अरन, नयन-राजीव विराजत,
कीर चुंच नासिका, रूप रंभादिक लाजत।
गुणवंत दंत दाडिम कुली, अधर लाल, हीरा दसन,
आहार पान कोमल अधिक, रस सिंगार नव सत वसन ॥३५॥
पान हुते पातरी, पेम-पूरण सू लाजत,
भुज म्रणाल सुविसाल, चाल हंसागति चालत।
चंपावरण सुचंग, सूर ऊजासी भालै,
पदम चरण तल रहै, निरख सुरनर मुनि भालै।
हर लंक, अंग चंदन-वरन, नार सकल-सिर मुगटमणि,
अल्लावदीन सुरताँन सुण, पदमन लच्छन एह भणि ॥३६॥

(*अथ चित्रणी वर्णनम्*)

चपल चित्त चित्रणी, चपल अति चंचल नारी,
कंवल-नैन कटि झीन, वेण जू नागन कारी।

पीन पयोहर कठिन, वचन अमृत मुख बोलै,
जंघा कदली-खंभ, गिडत गैवर गति डोलै।
संभोग-रीत जानत सकल, नित सिंगार-भीनी रहै
अल्लावदीन सुलतान सुन, कवि चित्रन-लच्छन कहै ॥३७॥

(*अथ हस्तनी वर्णनन्*)

हेत वहुत हस्तनी, केस अति कुटिल विराजत,
द्रिग देखत मृग नैन, चपल अति खंजन लाजत।
कनकलता कामनी, बीज दाड़िम दसनावत,
पहुप वेस पहरंत, कंत अति हेत सुहावत।
अति चतुर, कुच कंचन कलस, काम केलि कामिन करै,
अल्लावदीन सुलतान सुण, ए लच्छन हस्तन धरै ॥३८॥

(*अथ संखनी वर्णनम्*)

जटा जूट जोखता, वदन विकराल विकल अति,
सुकर देह, सरोस, स्वाँन जूं सदा घुरक्कति।
गर्दभ-गति, गुनहीन, परै ढरि पीन पयोहर,
मंछ-गंध, तन मलन, चुल्ह समतूल भगंदर।
अति घोर निद्र, आलस अधिक, अति अहार, गज अंखनी,
अल्लावदीन सुलतान सुण, ए लच्छन त्रिय संखनी ॥३९॥

श्लोक

पद्मिनी पद्म मध्येपु, कोटि मध्येपु चित्रणी,
हस्तनी सहस्र मध्येपु, वर्त्तमानेपु संखनी ॥४०॥

पद्मिनी पान राचंति, मान राचंति चित्रणी,
हस्तनी हास राचंति, कलह राचंति संखनी ॥४१॥
पद्मिनी पद्म गंधेन, मद गंधेन चित्रणी,
हस्तनी पुहप गंधेन, मच्छ गंधेन संखणी ॥४२॥
पद्मिनी पोहर-निद्रा चं, द्वै पोहर निद्रा च हस्तनी,
चित्रनी चमक निद्रा च, अघोर निद्रा च संखनी ॥४३॥

(अथ पुरष जात च्यार वर्णनम्)

दूहा

अथ सिसा लखण

मुख सकोमल, तन, वचन, सीलवंत, गुर ग्यांन,
रति विनोद अति रुच नहीं, ससा करत वहु सांन ॥४४॥

अथ मृग लछन

मधुर-वचन, मृग मध्य-तन, चपल वुद्धि अति भीर,
चतुर, साधु, अति हसत मुख, कामी, कनक-सरीर ॥४५॥

अथ वृषभ

वृषभ जात भारी पुरुष, दाता, क्रूर-सुभाव,
कपटी कछ लंपट हठी, काम केल वहु चाव ॥४६॥

अथ तुरंग

तन दीरघ दीरघ चरन, दीरघ नख सिख अंग,
सुभर-तरुनि-सँग रति-रवन, आलस अधिक तुरंग ॥ ४७ ॥

कवित्त

ससिक पुरुष-संयोग, नारि पदमावति लोडै,
मृग नर सुं चित्रणी, प्रेम पूरण सूं जोड़ै।
वृपभ पुरुष हस्तनी, भोग अंत ही सुख पावै,
अश्व पुरुष संयोग, नार संखनी सुहावै।
मृग ससिक वृषभ अरु अश्व पुनि, जाति च्यारि पुरुषां तणी,
अल्लावदीन सुरताण, सुणि, जात च्यार नारी तणी ॥ ४८ ॥

दूहा

नारि जाति सुण पातिसाह, राघव लियो बुलाय,
दोय सहस मुझ हुरम है, देखि महल में जाय ॥ ४६ ॥
राघव कहै नरिंद सुनि, गरमहल में न जाय,
छाया देखूं तेल में, नारी देऊँ बताय ॥ ५० ॥

कवित्त

हुकम कियो पतिसाह, नारि सिंगार बनावहु,
तेल-कुंड भर धरो, आय दीदार दिखावहु।
हुरमा सकल निहार, तवै राघव यूं भाखै,
हंस गमन, मृग नैन, रूप रंभा कौं राखै।
चित्रन, हस्तन, संखनी, पातसाहजादी घणी,
सरस त्रिया में सुन्दरी, नहीं साह घर पदमणी ॥ ५१ ॥
कहै ताम सुलतांन, वेग पदमनी बतावहु,
जहाँ होइ तहाँ कहो, जो कछु मांगो सो पावहु।

पदमन सिंघलदीप, उदध-पै-पार, पयंपै,
देख समुद्र, सुलतान, हिया कायर का कंपै।
यूं सुनवि चढ्यौ सुलतान, तव आय उदध ऊपर पड्यौ,
पदमनी कहाँ राघव कहो, पातसाह अत हठ चढ्यो ॥ ५२ ॥

सोरठा

राघव लह प्रस्ताव, पातसाहपै यूं जपै।
पदमनि नैड़ी ठाँव, रतनसेन चहुवाणपैं ॥ ५३ ॥

दूहा

सुणवि चढ्यौ सुलतान तव, चलियो गढ़ चीतोड़।
दिया दमामा दिल्लिपत, भई राय पर दोड़ ॥ ५४ ॥
काँपे सगले राण, चिहूँ चक्क खलभल भई।
खुर-रज छायो भाण, चोट नगारैं जब दई ॥ ५५ ॥

छंद जात रेसालू

चढे चिहूँ दिसि साह के दल, धरैं धीरज कौन ?।
अभिमान-आणंद अंग उपजो, गिणैं लगन न सौंन ॥ ५६ ॥
असवार त्रय लख साथ अदभुत, पाखरे ज तुरंग।
ताजी स तुरकी औ अराकी, सवज नीले रंग ॥ ५७ ॥
कम्मेत, काले, हासिले, सामुद्र, अर तवरेस।
अवलक, सुजाँम, सुवाहिरे, सवज नीले नेस ॥ ५८ ॥
सारंग, केहर अरु सरोजी, भले पंच कल्याण।
नाचंत पातर ज्यूं तुरंगम, रतन-जड़ित पलाँण ॥ ५६ ॥

लगाम सोवन मुक्ख सोहै, जेर बंध सु पाट।
अब रेसमी कसि तंग ताणे, लटकणा के थाट ॥ ६० ॥
गजगाह घूघरमाल घमकै, तवल बाज वणाव।
कलंगी भली जरकसी पाखर, भलौ परचौ भाव ॥ ६१ ॥
हलकै पचावन साथ हाथी, ढलक नेजा ढाल।
अति घटा सावण मास जैसी, भरै मद परनाल ॥ ६२ ॥
बग-क्रांति कांति सपेद सुंदर, गाजते गजराज।
पहिराय पाखर साह राखे, फोज आगे साज ॥ ६३ ॥
रथ अर पयादे अवर असवार, गनि सकै कह कोण।
उमड़ी चली आतस्सवाजी, खलभले त्रय भौण ॥ ६४ ॥
डेरा पड़ै दस कोस ताँई, करै नाहि मुकाम।
आइकै गढ़ चीतोड़ उतरे, दिया डेरा ताम ॥ ६५ ॥
ताणे तहाँ पंचरंग तंबू, फरहरे नीसाँण।
फूले पलास बसंत आगम, वदै कविजन वाँण ॥ ६६ ॥

दूहा

गढ-रोहौ करकै रह्यो, अलावदीन सुलतान।
रतनसेन माँनै नहीं, चलै गढनसूं प्राँन ॥ ६७ ॥
अंब लगाये ठौर तिहँ, फल पाके तब जान।
बारा बरस वैठो रहौ, अलावदीन सुलतांन ॥ ६८ ॥

कवित्त

कहै ताम सुलतान; कहौ राघव क्या कीजै ?,
गढ़ चितोड़ है विषम, जोर तें कबहु न लीजै।

रावत्र कहै, सुलताँन, सुनो इक फंद करीजै,
उठाइयै मूसाफ, जेण कर राय पतीजै।
भेज्यो खवास-सुलतान तव, रतनसेन-द्वारै गयौ,
ले हुकम-राय दरवाँन तव, खोलि प्रोलि भीतर लियौ ॥६९॥

कहै ताम सुलताँन, मान तूं वचन हमारा,
कहै फेर सुलताँन, करूं तुझ सात हजारा।
वहिन करूं पदमनी, तुझै भाई कर थप्पूं,
देखूं गढ चीतोड़, अवर वहु देस समप्पूं।
गल कंठ लाय, ठहराय कै, नाक नमण कर वाहुड़ौ,
राजा रतनसेन, सुलताँन कह, पहुर एक गढपरि चढौ ॥७०॥

मान वचन सुलताँन, आन मूसाफ उठायौ,
महमानी वहु करी, गढ्ढ सुलताँन बुलायौ।
लिये साथ उमराव, वीस दस सूर महावल,
वहुत कपट मन माँहि, गए सुलताँन वहाँ चल।
वहु भगत-भाव राजी करी, साह कहै भाई भयौ,
पदमनि दिखाव ज्यूं जाँह घर, दुरजन दुख दूर गयौ ॥७१॥

दूहा

रतनसेन चहुवान कहि, वहिन करी सुलतान।
वदन दिखावो वीर कौं, दिया साह वहु मान ॥७२॥
चेरी एक अति सुंदरी, दे अपनौ सिणगार।
वदन दिखायौ साह कूं, गिरयौ सीस कै भार ॥७३॥

राघव कहै, सुण पातसाह, यह पदमनी न होय ।
कहा देख के तुम गिड़ें, अति सुंदर है सोय ।।७४।।

कवित्त

लाख लहै ढोलियो, सवा लख लेह तुलाई,
अर्थ लाख गीदुवौ, लाख त्रय अंग लगाई ।
केसर अगर कपूर, सेभ परमल पर भीनी,
ता ऊपर पदमनी, रामरस-रूप-नवीनी ।
अल्लावदीन सुलताँन सुण, पदम गंध है पदमनी,
चन्द्रमा वदन, चमकंत मुख, रतनसेन-मनभावनी ।।७५।।

दूहा

वोल्यो तव, अल्लावदी, पकड़ राय कौ हाथ ।
दिखलावत हो और त्रिय, कपट कियो मुझ साथ ।।७६।।

कवित्त

कहै ताम सुलतान, कहो पदमन-प्रति ऐसो,
मुख दीखावो वेग, कपट मांड्यो है कैसो ।
मुख काढ्यौ पदमनी, ताम वारीकै वाहिर,
निरख गिर्यौ सुलताँन, थंभ लीयौ तसु थाहर ।
खिन एक संभालें आपकूं, साह कहै, डेरै चलौ,
क्या सिफत करूं में राव की, रतनसेन भाई भलौ ।।७७।।
फिर्यौ ताम सुलताँन, प्रोल पहिली जव आयौ,
रतनसेन भयो साथ, लाख वकसीस दिवायौ ।

चल्यौ ताँम सुलतान, प्रोल दूजी जब आयौ,
औौर दिये दस गढ़, राय अति बहुत लोभायौ।
इम लेवै बगसीस, तबह कपट कर फंदियो,
राजा रतनसेन अति लोभकर, ग्रहि सुलतान सुबंधीयो ॥७८॥

सोरठा

रहे प्रोल जड़ लोक, सोर सकल गढ में भयौ।
राजा ले गयो रोक, कपट कियो सुलतान तब ॥७६॥

कवित्त

सदा मरावै साह, राय कोरड़े लगावै,
कहै, देह पदमनी, जीव तब ही सुख पावै।
गढ के नीचे आँण, सहम भूपति दिखलावै,
लै राखै लटकाय, लोक सबही दुःख पावै।
मारतें राय कायर भयौ, पदमावत देऊँ सही,
भेजौ खवास मारौ न मुझ ले आवै जब लग ग्रही ॥८०॥

सोरठा

भेज्यो राय खवास, कहै, देय पदमावती।
मुझ जीवन की आस, विलम न कीजै एक खिन ॥८१॥

कुंडलियो

कह रॉनी पदमावती, रतनसेन राजांन,
नारि न दीजै आपणी, तजियै, पीव, पिरॉन।

तजियै, पीव, पिराँन, और कूं नारि न दीजै,
काल न छूटै कोय, सीस दै जग जस लीजै।
कलंक लगावै आपकों, मो सत खोवै जाँन,
कह रानी पदमावती, रतनसेन राजाँन ॥८२॥
पाँन लियो पदमावती, गई वादल के पास,
राखणहार न सूझही, इक बादल तोहि आस ॥ ८३ ॥
बार वरस को बादलो, हाथ ग्रहे चौगान,
ले आई पदमावती, बादल खावौ पान ॥ ८४ ॥
कह बादल सुन पदमनी, जा गोरा कै पास,
पान लियो मैं सीस धर, न करि चिंत, विसवास ॥ ८५ ॥

कवित्त

भई आस, तव लियो सास, गोरा पै आई,
पड्यौ स्याँम संकडै, करो कछु अब्ब सहाई।
मंत्र कियौ मंत्रियां, नारि पदमावति दीजै,
छूटाइयै नरेस, विलम खिन एक न कीजै।
अवस तिहारे आप हूँ, ज्यूं भावै त्युँ राय करि,
वीड़ो उठाइ गोरो कहै, जाइ, बहन, अव वैठ घरि ॥ ८६ ॥

दूहा

गोरा बादल वैठ के, दिल में करै विवेक,
साह साथ कैसे लड़ाँ, लसकर अमित अनेक ॥ ८७ ॥

कवित्त

बादल बोल्यौ ताम पाँचसै डोला कीजैं,
तिन में बैठे दोइ च्यार कै काँधै दीजैं।
तिन में सब हथियार अश्व फोतल करि आगैं,
कहे, देह पदमनी, तुरक नेड़े नहिं लागैं।
कटियै बन्धन राय कै भुजबल परदल गाहिजैं,
दीजिय न पूठ द्रढ़ मूठ करि खग्ग साह-सिर बाहिजैं ॥ ८८ ॥

दूहा

बादल मंत्र उपाइयौ, सबके आयो दाय,
याहि बात अब कीजिये, बोले राणाँ राय ॥ ८६ ॥

कवित्त

तुरत बुलाये सुत्रहार, डोले संवराए,
तिन ऊपर मुखमली, गुलफ आछे पहिराए।
बैठाये बिच सूर, सूर कै काँधै दीजैं,
तिन-मह सब हथियार, जरह अर जोर न ईजैं।
अैराकी साज, सवार कै, बादल मंत्र उपाइयौ,
बक्कील एक रावल मिलन, पुह सुलताँन पठाइयौ ॥ ६० ॥

दूहा

रावल देवत पदमनी, आज तुझे सुलतान,
भेट इसी बहु भाँति सों; खुसी भयो सुलतान ॥ ६१ ॥
कहै ताम अल्लावदी, सुणि वकील, चित लाय,
वेग ले आवो पदमनी, बादल सुं कहो जाय ॥६२॥

आयो हुकम ज साह को, बादल भयो तयार,
सुनो, रावतो, कान धर, ऐसी करियो मार ॥६३॥

कवित्त

प्रथम निकस चकडोल, तुरत चढि तुरी धसावो,
नेजा लेकर हाथ जोर, दुसमन सिर लावो।
जब नेजा टुट्टवै, तबहि तरवार उठावो,
जब तूटे तरवार, तबे तुम गुरज उड़ावो।
जब गुरज तूट धरणी पड़े, कट्टारी सनमुख लड़ो,
बादक कह हो रावताँ, स्याँम काम इतनो करो ॥६४॥

दूहा

बादल जूझन जब चल्यो, माता आई ताँम,
रे बादल तैं क्या किया, ए बालक परवाँन ॥६५॥

कवित्त

रे बादल बालक्क, तुंही है जीवन मेरा,
रे बादल बालक, तुज्झ बिन जुग अंधेरा।
रे बादल बालक्क, तुज्झ बिन सब जग सूना,
रे बादल बालक्क, तुज्झ बिन सबहि अलूना।
तुज्झ बिन न सूझै कछू, तूटि बाँह छाती पड़े,
छुट्टंत तीर बंका तहाँ, केम साह-सनमुख लड़ै ॥६६॥

दूहा

माता बालक क्युं कहो, रोइ न माँग्यौ ग्रास।
जो खग मारूं साह-सिर, तो कहियौ साबास ॥६७॥

सीह, सिँचाणो, सापुरुष, ए लहुरे न कहाय ।
वड़े जिनावर मारि कै, छिन में लेय उठाय ॥९८॥
सिंह जोन तें निकसतें, गय-घड़ दीठी जाँम ।
तुट्टवि गज मसतक लड्यौ, आइ रह्यौ महि ताँम ॥९९॥

कवित्त

बादल कह, सुण माय, सत्त तुझ साहस मेरा,
लडूं साह के साथ, करूं संग्राम घणेरा ।
मारूं सुभट अपार, स्याम के बंधन काटूँ,
जो सिर गयो त जाहु, सीस दे जग जस खाटूँ ।
जिम राम-काज हनुमंत कियो, मार्‌यौ रावण एक खिण,
गैवर गुडाय तोडौं तवर, साह चलाऊँ खग्ग हण ॥१००॥
बालक तो परवाँण, जाँम गैवर-घड़ मोडूँ,
बालक तो परवाँण, पकड़ पिलवाँन पछोडूँ ।
बालक तो परवाँण, स्याम के बंधन कट्टूँ,
बालक तो परवाँण, सांग असवार पलट्टूँ ।
मारूं तो खग साह-सिर, गयवर दलूँ, सत्य चढूँ,
जननी लजाऊँ तुज्झ कूं, जे वाग मोड़ पाछो मुडूँ ॥१०१॥

दूहा

जैसा, बादल, तैं किया, तैसा करै न कोय ।
माता जाइ आसीस दै, अब तेरी जै होय ॥१०२॥
माता जबही फिर चली, बहुवर दिवी पठाय ।
मेरो राख्यो ना रह्यौ, अब तुम राखो जाय ॥१०३॥

कवित्त

नव सत सज्झै नवल, नारि बादलपैं आई,
अज हुं न रम्यौ मुझ साथ, चल्यौ तूं करण लड़ाई।
अजहुँ न माँणी सेझ, घाव-नख नांहि चमंके,
कुचन चोट नहि सही, सहै क्युं सांग धमंके।
छुट्टंत नाल गोला तहाँ, तुट्टवि धड़ सिर उप्परै,
नारि कहै हो राव, इम मतां देखि दलतैं मुडै ॥१०४॥

दूहा

कंता रिण में पैसतौं, मत तूं कायर होइ।
तुम्है लज्ज, मुझ मेहणो, भलो न भाखै कोइ ॥१०५॥
जो मूवा तो अति भला, जो उबर्‌या तो राज।
वेहुँ प्रकारा हे सखी, मादल घूमैं आज ॥१०६॥
कायर केरै माँस कों, गिरज न कबहुँ खाइ।
कहा डंख इन मुक्ख को, हम भी दुरगति जाइ ॥१०७॥

कवित्त

मेर चलै, ध्रू चलैं, भाण जो पच्छिम ऊगैं,
साधु वचन जो चलैं, पंगु जो गिर लगि पूगैं।
धरण गिड़ै धवलहर, उदध मरजादा छोड़ै,
अरजन चूकैं वाँण, लिखत वीधाता मोड़ैं।
बादल कहइ, री नार, सुण, एहवो जो होतव टलै,
न्हासूँ न, पूठ देऊं नहीं, बादल दलसूँ ना चलैं ॥१०८॥

दूहा

त्रीया, तुझकों क्या दिऊँ, सती हुवै मुझ साथ।
जूड़ो दीनो काटकै, नारी-केरै हाथ ॥१०६ ॥

.... ।
ताके ऊपर अरगजा, भमर भमैं चिहुं फेर ॥ ११० ॥
सुखपालां सझ पांचसै, सोभा घणी करेह।
गढ़ तैं डोले उतरे, साह न पायो भेद ॥ १११ ॥
गोरा वादल दोइ जण, आप भए असवार।
आय मिले पतिसाह सूँ, किए सिलाँम तिवार ॥ ११२ ॥
ले आए संग पदमनी, दोड़न लागे मीर।
लाज जु लागै हम तुमै, वहुत भया दिलगीर ॥ ११३ ॥
साह ढंढोरो फेरियो, मत कोई देखो ऊठ।
गरदन मारूं तास कौं, लूँ सव डेरा लूट ॥ ११४ ॥
भी भिर आये साह पै, एक करै अरदास।
रतनसेन कूँ हुकम हुइ, जाइ पदमन कै पास ॥ ११५ ॥
मिल विछुरे संग पदमनी, तुमकों दीजै आँन।
हुकम कियो पतसाह तव, यह विधि मन में जाँन ॥ ११६ ॥

कवित्त

वादल तिहां आवियो, राय तिहाँ बाँधण वाँध्यो,
लेइ मस्तक आपणो, चरण ऊपर तस दीधो।
हुऔ कोप राजाँन, वैर कीधो तैं, वैरी,
कीधो भूँडो काँम, नारि आणावी मेरी।

वादल ताँम हँसि बोलियो, कृपा करो साँमी, सही।
वालक रूप-पद्मावती, राव नारि तेरी नहीं॥ ११७॥

दूहा

ले आए संग राव को, मन विच हरख अपार।
डोलै भीतर पैसताँ, आगे वीच लोहार॥ ११८॥
वेड़ी काटी तुरत तिन, राय कियौ असवार।
तवल वाज तिनही समैं, निकढे सुभट अपार॥ ११९॥

सोरठा

रण वाजै रणतूर मारू गावै मंगता।
उमग तिहाँ चित सूर, कायर के चित खलभले॥ १२०॥
ढमकै जंगी ढोल, सुरणाई वाजै सरस।
घुरै दमामां घोर, सिंधूड़ा ढाढी चवै॥ १२१॥
साह-कटक पड्यौ सोर, ओरूं की ओरूं भई।
रही पदमनी ठोर, रण आये रजपूत रट॥ १२२॥
तीन सहस रजपूत. खाय अमल, घूमै खड़े।
पड़े क्रपन के पूत, राँम राँम मुख ते रटै॥ १२३॥
जुड़ आये रजपूत, भूत भये कारण भिडण।
परिहरि जोरू-पूत, खत्री आये खेत पर॥ १२४॥
हवक ग्रहे हथियार, हलके हाथी साज के।
अंवाड़ी-असवार, पातसाह आयो प्रगट॥ १२५॥
गोरा-वादल वीर, सिर फूलाँ को सेहरो।
केसर छिटके चीर, सूंधे-भीना सापुरस॥ १२६॥

छंद वीरारस

जुडाये जंग, उलसे अंग।
गोरा वादल, ताने तंग ॥ १२७ ॥

छंद जात रसावलू

कर खंग लिय करि करि, विहंड भुजदंड दिखावें,
पाडलियै पाखरी उलट, अपने दल आवें।
निज साँम-काज भूपत लड़ै, काट-काट लावैं कमल,
गोरा लगावत जिहाँ खड़ग, तिहाँ पाड़ करैं दोइ धड़ ॥ १२८ ॥

छंद पद्धरी (मोतियदाम)

लड़ै जब गोरल बाँवन वीर, कमाँणक चोट चलावत तीर।
न चूकत रावत एकण चोट, लड़ै, गज लोट सपोटालोट ॥१२९॥
ग्रहै बरछी जब गोरल राय, सु नागन ज्यूँ नर ऊडत खाय।
फोड़त पाखर साथ पलाँण, सु जातन का सिर सुंदर माँण ।१३०।
तजै बरछी, पकड़ें तरवार, धणी खुरसाण सो बीजलसार।
चलावत मीर उतारत सीस, उडावत एक चलावत वीस ॥१३१॥
तजै तरवार गुरज्ज भिड़ाय, दुरज्जन चोट दड़ब्बड़ ल्याय।
करैं चकचूर गयंद-कपाल, सकै उमराव न आप संभाल ॥१३२॥
कहै मुख मीर ज आयो काल, डरैं नर, दे हथियार संभाल।
ग्रहे त्रिन्ह दंत बड़े-बड़े मीर, न मारहु गोरल राव सधीर ॥१३३॥
चल्यो एक मीर ज चोट चलाय, पड्यो धर ऊपर गोरल राय।
पुकार पुकारत गोरल नाँम, करैं जब बादल ऐसो काँम ॥१३४॥

कवित्त

सुभट सुभट सुं लड़ग, पड़ग तिहाँ खड़ग भटाभड़,
जुड़ग-जुड़ग जहाँ जुड़ग, जुड़ग तहाँ खड़ग धड़ाधड़।
मुड़ग मुड़ग तहाँ मुड़ग, मुड़ग कोउ अंग न मोड़ग,
गहर गहर गज दंत, भुजे भूपति गह तोड़ग।
संग्राम राम-रावण-सुपरि, जुड़े ज्वान ऐसी जुगति,
सलसलै सेस, सायर सलल, धड़हड़ कंप्यौ धवलहरि ॥ १३५ ॥

कवित्त

चावक चंचल लाइ, उलट अपने दल आवै,
नेजा लेकर हाथ, जोर दुसमन—सिर लावै।
नाठे तवहि गयंद, तोफ झीड़ा फड़ पड़ियो,
मारे मुगल अपार, वाल वादल इम लड़ियो।
खुर-खेह सूर झंपत लियो, रैन-दिवस समसिर भयो,
छुटकाय वंध, चाढिय तुरिय, राय भेज घर कों दियो ॥ १३६ ॥
भारथ भयो अपार, साट सूरों के तूटे,
मारे ते रिण मांझ, जिनाँ के कालज खूटे।
वहुत मुए रजपूत, तुरक को अंत न लहिये,
चले रुधिर के खाल, तीन लोकन में कहियै।
भागत मतंग-गज-थाट जव, अपछर मंगल गाइयो,
रणजीत, राय छुटकाय कै, तव वादल घर आइयो ॥ १३७ ॥
वादल की आरती आय, पदमनी उतारै,
मुकताफल भर थाल, भरी सिर ऊपर वारै।

वहुयड़ दे आसीस, जीव तूं कोड़ वरीसां,
सूरवीर वंकड़ा, तूझ गुण गावै ईसा।
वलिहारी तस नांव पर, जिण कंत हमारो मेलियो।
गोरा गयंद वादल विकट, धन धन जननी जनमियो ॥ १३८ ॥

दूहा

वादल सुँ नारी कहै, हूं वलिहारी, कंत।
तै खग मास्यो साह-सिर, दे चरणाँ गजदंत ॥ १३९ ॥
पिय मुख पूँछत प्रेम सुँ, धन वादल भरतार।
वोल निवाह्यो आपणों, सूर जपै जयकार ॥ १४० ॥
काकी वादल सों कहै, गोरल नायो काय।
भिड़ मूवौ कै भाजि कै, सो मुझ वात सुणाय ॥ १४१ ॥
गोरा गिर सूं धीर, भिड़ै न भाजै भूम तें।
मार चलावै मीर, मगर चलावै तीर तें ॥ १४२ ॥
जाके लाए अंग, रंग निकासे ते जड़ग।
मारे मनुख तुरंग, गोरा गरजै सिंघ ज्यूं ॥ १४३ ॥
भला हुआ जे भिड़ मूवा, कलंक न आयो कोय।
जस जंपै श्री जगत में, हिव रिण ढूंढो जोय ॥ १४४ ॥
रिण ढूंढै नारी तहाँ, साथे सगला लोइ।
सीस न पावै, सो कहां, अंवर वाणी होइ ॥ १४५ ॥

कवित्त

गोरे का सिर तांम, तुरत तिण गिरझ उठायो,
मुखतै छूटो गिरझ, तांम देवँगना पायो।

देवँगना तें छूटि, सोइ सिर गंगा पड़ियो,
गंगा तें लियो संभु, रुंडमाला में जड़ियो।
सो सोह गोरल भरतार इम, सापवित्र मस्तक भयो।
यों जूझै परकाज-पर, सो गोरो सिवपुर गयो ॥ १४६ ॥

दूहा

नारी इम वाणी सुणी, पिय की पघड़ी साथ।
सती भई आणंद सूं, सिवपुर दीनो हाथ ॥ १४७ ॥
गोरा वादल की कथा, पूरण भइ है जाँम।
गुरू-सरस्वती-प्रसाद करि, कविजन करि मन ठाँम ॥ १४८ ॥
सोलैसे असियै समै, फागण पूनिम मास।
वीरा रस सिणगार रस, कहि जटमल सुप्रकास ॥ १४६ ॥

छंद रिसावला

वसै मोछ अडोल अविचल, सुखी रइयत लोक,
आणंद घरि-घरि होत ऊछव, देखियत नहिं सोक ॥ १५० ॥
राजा जिहाँ अलिखाँन न्याजी, खान-नासिर-नंद,
सिरदार सकल पठान विच है, ज्यों नखत्रे चंद ॥ १५१ ॥
धर्मसी को नंद, नाहर जात, जटमल नाँउ,
जिण कही कथा वनाय कै, विच संवला के गाँउ ॥ १५२ ॥
कहताँ तहाँ आनन्द उपजै, सुन्याँ सव सुख होय,
जटमल पयंपै, गुनि जनो, विघन न लागै कोय ॥ १५३ ॥

लब्धोदय कृत पद्मिनी चरित्र चौ० में प्रयुक्त देशी-सूची

खण्ड–१

(१) चौपाई—रामगिरी

(२) योगनारा गीत री, राग-मल्हार

(३) करता सुं तो प्रीति सहु हूँसी करै रे

(४) सिहरां सिहर मधुपुरी रे, कुमरां नन्दकुमार

(५) ढुंढणीयां मेवाड़ी देशी—मेवाड़ देशे प्रसिद्धास्ति

(६) ता भव बन्धण थी छोड़ हो नेमीसर जी

(७) जाइ रे जीयरा निकसि के, तथा—वात म काढो रे व्रत तणी

खण्ड–२

(१) वागलिया री

(२) राग गौड़ी—मन भमरा रे

(३) ढाल-अलवेल्यानी, कहिनइ किहां थी आविया रे लाल

(४) राग मारू—वाल्हा ते विदेशी लागे वालहो रे, ए गीत नी

(५) राग मल्हार—सहर भलो पण सांकड़ो रे नगर भलो पण दूर

(६) कोई पूछो बांभण जोसी रे, ए देसी अथवा यतनी

(७) मनसा जे आणी

खण्ड–३

(१) भणइ मन्दोदरी दैत्य दसकन्ध सुण (राग-आसा सिधु कड़खारी)

(२) चरणाली चामुण्डा रण चढ़ै

(३) वात म काढो व्रत तणी, काची कली अनार की रे

(४) तिण अवसर वाजै तिहां रे ढंढेरा नो ढोल, २ मेवाड़ी दरजण री

(५) अलवेल्या नी

(६) हंसला नै गल गूघरमाल कि हंसलो भलो

(७) रागमारु—पंथी एक संदेशड़ो, कपूर हुवे अति ऊजलो रे

(८) मेवाड़ी राजा रे चितोड़ी राजा रे

(९) एक लहरी लै गोरिला रे

(१०) राग मारू—नाहलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे

(११) मधुकरनी

(१२) श्रेणिक मन अचरज थयो

(१३) नदी यमुना के तीर उड़ै दोय पंखिया

(१४) म्हारा सुगुण सनेही आतमा

(१५) सइंमुख हुं न सकुं कही आडी आवै लाज

(१६) वन्दना करूं वार-वार ए देसी प्राहुणा री

(१७) साधजी भले पधार्या आज

(१८) वलध भला छे सोरठा रे

(१९) सदा रे सुरंगा थे फिरो, आज विरंगा कांय

(२०) नाथ गई मोरी नाथ गई

(२१) गच्छपति गाइयइ हो युगप्रधान जिनचन्द

(२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचा

(२३) करड़ो तिहां कोटवाल, राग-खंभाइती सोला की या मारू

(२४) धन्यासी—लोक सरूप विचारो आतम हित भणी

विशेष नाम सूची

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के प्रकाशन

राजस्थान भारती (उच्च कोटि की शोध-पत्रिका)

भाग १ और ३, ६) रु० प्रत्येक

भाग ४ से ७ ६) रु० प्रति भाग

भाग २ (केवल एक अंक), २) रुपये

तैस्सितोरी विशेषांक — ५) रुपये

पृथ्वीराज राठोड़ जयन्ती विशेषांक ५) रुपये

प्रकाशित ग्रन्थ

१. कलायण (ऋतुकाव्य) ३॥) २. वरसगांठ (राजस्थानी कहानियाँ) १)
३. आभै पटकी (राजस्थानी उपन्यास) २॥)

नए प्रकाशन

१ राजस्थानी व्याकरण
२ राजस्थानी गद्य का विकास
३ अचलदास खीचीरी वचनिका
४ हम्मीरायण
५ पद्मिनी चरित्र चौपाई
६ दलपत विलास
७ डिंगल गीत
८ परमार वंश दर्पण
९ हरि रस
१० पीरदान लालस ग्रंथावली
११ महादेव पार्वती वेलि
१२ सीताराम चौपाई
१३ सदयवत्सवीर प्रवन्ध
१४ जिनराजसूरि कृति कुसुमांजलि
१५ कवि विनयचन्द्र कृति कुसुमांजलि
१६ जिनहर्ष ग्रन्थावली
१७ धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली
१८ राजस्थानी दूहा
१९ राजस्थानी वीर दूहा
२० राजस्थानी नीति दूहा
२१ राजस्थानी व्रत कथाएँ
२२ राजस्थानी प्रेम-कथाएँ
२३ चंदायण
२४ दम्पति विनोद
२५ समयसुन्दर रासपंचक

पता :— सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर।